ISSN : 2436-5017

हिन्दी साहित्य की अंतरराष्ट्रीय त्रैमासिक ई - पत्रिका

वर्ष -2, अंक-4-5 (अप्रैल -सितम्बर 2021)
(संयुक्तांक)

हिन्दी की गूँज

हिन्दी कल्चर सेन्टर, जापान की पहल

हिन्दी की गूंज
Saqib Majeed
अंतरराष्ट्रीय ई पत्रिका
संरक्षक एवं संपादक
रमा शर्मा
जापान
日本

संरक्षक

रमा शर्मा जापान

इंद्रजीत शर्मा (अमेरिका)

प्रधान संपादक
रमा शर्मा (जापान)

संपादक
विनोद पाण्डेय
सह संपादक
उपासना सियाग

प्रबंध सम्पादक
कपिल कुमार (बेल्जियम)
शामलाल पुरी (लंदन)

वरिष्ठ परामर्श दाता
डॉ हरीश नवल जी(प्रसिद्ध व्यंग्यकार)

विदेश प्रतिनिधि
श्वेता सिंह उमा (रशिया)
पूनम के सुजीबन (मॉरिशस)

भारतीय प्रतिनिधि
डॉ सतीश कुमार शास्त्री (उत्तराखंड)
डॉ मोनिका देवी (यूपी)
डॉ दीप्ति गौड़ (मध्य प्रदेश)
डॉ विनय भारद्वाज (बोधगया विश्वविद्यालय,बिहार)

सहयोगी प्रतिनिधि

आलोक रंजन पांडेय
(लोक बात टीवी)

डॉ पुष्पा रानी
(कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय)

डॉ राम प्रकाश
(बोधगया विश्वविद्यालय)

वेब डिजाइनिंग
जे पी द्विवेदी
भारत

संपादकीय कार्यालय
त्सुकुबा सिटी, टोक्यो ,जापान

व्हट्सअप नंबर -00818038529320
00818042417303

ईमेल hindikigoonj-jp@gmail-com

संपादन, संचालन, प्रकाशन एवं सभी सदस्य पूरी तरह अवैतनिक, अव्यवसायिक हैं। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। संपादक तथा प्रकाशक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रकाशित रचनाओं के मौलिक होने का उत्तर दायित्व लेखक पर होगा। पत्रिका जनवरी, अप्रैल, जुलाई तथा अक्टूबर में प्रकाशित होगी।

हिन्दी की गूँज

अनुक्रम

संपादकीय

प्रधान संपादक की कलम से– रमा शर्मा /5
अपनी बात– विनोद पाण्डेय /6

आलेख /निबंध /शोध लेख

बड़ा कौन–हरीश नवल /9
चिंता चिता समान–डॉ ममता श्रीवास्तव 'सरूनाथ' /18
हिन्दी साहित्य के महामनीषी एवं महाकवि : रामधारी सिंह 'दिनकर'–अमित कुमार /19
माता पिता की सेवा ईश्वर आराधना हो जैसे–इंद्रजीत शर्मा /61

गीत /गजल /कविता

गजल– कपिल कुमार /7
धारा के विपरीत उतरना है–विनोद पाण्डेय / 8
कोरोना से बचना होगा–विनोद शर्मा /8
जाती नहीं–प्राची चतुर्वेदी रंधावा /10
पहचान–प्रोमिला भारद्वाज /10
दादी का सन्दूक–सत्यवान सौरभ /11
भला क्या कर लोगे–डॉ शैलेश शुक्ल /11
सौगात–ए–इश्क –मनोज शाह 'मानस' /12
जाने क्या बात है–विनय /12
खामियाजा–डॉ अनीता कपूर /13
आज का बच्चा–शिवचरण चौहान /13
गजल–मास्टर भूताराम जाखल /13
मोहब्बत–अरुणा कुमारी राजपूत /15
यूँ ही अचानक कुछ नहीं घटता–वीरेंद्र सिंह रावत /15
तितली सी मडराती है–शुभदा वाजपेई /17
मेरा भारत महान–डॉ कंचन शर्मा 'स्नेही' /18
केशव शरण की कवितायें–केशव शरण /20
गजल–शायर नरेश मलिक /20
गजल–कामना मिश्रा /21
गजल–कुलदीप दहिया /21
गजल–मनीषा जोशी 'मनी' /22
गजल–विनोद सिंह नामदेव /22
कातिल बना कोरोना–नरेंद्र सिंह निहार /23
दिन तेरे–मेरे–राजेन्द्र श्रीवास्तव /23
गीत–आशीष मिश्रा /30
गीत–आशा पाण्डेयओझा /30
गजल–डॉ राकेश जोशी /31
मुझे जिसने छांव दी उम्र भर–रश्मि विभा त्रिपाठी /31
काकी और डायरी – संजीव कुमार भटनागर /32
प्रेम गीत के छंद लिखूँ –डॉ दीप्ति गौड़ /33
विरहणी का विरह–डॉ मोनिका देवी /33
गजल–डॉ आरती कुमारी /34
श्रमिक– डॉ निर्मला शर्मा /34
मेरी दुनियाँ माँ का आँचल–श्याम सुंदर श्रीवास्तव /36
दोहे–कठिन बड़े हालात–डॉ राम निवास 'मानव' /36
वन्देमातरम–डॉ दीपा संजय 'दीप' /37
भारी बस्ता–सुश्री इन्दु सिंह 'इंदुश्री' /37
बेटियाँ–कमलेश 'संजीदा' /40
माँ आपके लिए–डॉ शिप्रा शिल्पी /40
अकस्मात–सन्नी भारद्वाज /41
काश ! कोरोना हो जाये–रवि यादव 'रवि' /42
डरी हुई है कविता– राजकुमार जैन राजन /42
देख रहा हूँ–रमाकांत बड़ारया /45
गजल–हर्ष वर्धन आर्य /45
पर्यावरण–राकेश छोकर /49
गलत ठहरा दिया तुमने–डॉ लता अग्रवाल /49
जिंदगी–पूनम पंडित /50
किन्नर हूँ मैं– सिमरन सिंह /50
दौहिक गीतिका–केशव मोहन पाण्डेय /50
जी चाहता है–प्रेम भारद्वाज 'ज्ञान भिक्षु' /51
डाक टिकट पर अंकित पहली महिला 'मीरा'–मोतिया शर्मा /51
कच्ची कैरी–सुमन तनेजा /58
खून–पसीना–चेतन राम किसान 'देव' /58
जिंदगी–डॉ मीना शर्मा 'मनु' /59
माँ–निक्की शर्मा /59
वे अंधेरे से काजल बनाने लगे–सीए अजय गोयल /60
गजल–आशुतोष कुमार /61
समय की प्रतीक्षा–चंचल हरेन्द्र वशिष्ठ /62
हिन्दी भाषा मेरा अभिमान–डॉ श्वेता सिन्हा /62

लघुकथा /कहानी /रम्य रचना

एक बूंद ओस की–नीना सिन्हा /16
संयम से समाधि तक–वीरेंद्र जैन /16
टूटते सिद्धान्त–अमिताभ कुमार 'अकेला' /17
आशावान आशा–डॉ सुनील गुलाब सिंह जाधव /24–25
सपने–पवन शर्मा /27
भंग होता एहसास–पवन शर्मा /28
प्यार की चाहत–केशव मोहन पाण्डेय /28
आप मेरे तो हैं–सौम्या दुआ /29
भ्रष्टाचार और राजनीति अब तो छोड़ो–निक्की शर्मा 'रश्मि' /35
महबूबा–डॉ नयना डेलीवाला/35
नातेदार–डॉ जयशंकर शुक्ल /43–45
नीबू निचोड़ दिया–अरविंद 'पथिक' /46–48
तीसरी लहर–डॉ पूनम द्विवेदी /48
हारने से पहले–डॉ पूनम गुजरानी /54–55
पाँव और साँस का नाता–मीना अरोरा /56
मानसिक तनाव या माइग्रेन–यथार्थ सिंह नागपाल /56
हमारा भंडारा चालू है–रामवृक्ष सिंह /57

पुस्तक चर्चा/समीक्षा

पर्यावरण की महत्ता बताती जरूरी किताब
: प्रदूषण मुक्त साँसे–लोकमित्र /14
जैसा नाम वैसी ही पुस्तकः एक सीसी गुलाब जल– रमा शर्मा /26–27
साधुत्व का संदेश देता काव्य संग्रह 'बैन फकीरा'
–जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /38–39
चेरी फुले मधुमास–डॉ नीलम वर्मा /52–53

इस अंक के चित्रकार

डॉ स्नेह सुधा नवल /60

प्रधान संपादक की कलम से

धीरे-धीरे संभलने का वक्त आया है धीरे-धीरे सुधरने का वक्त आया है । पिछले दो वर्षों में बहुत कुछ बदल गया । हम बदल गए , हमारे सोचने का नजरिया बदल गया । पूरी दुनिया में एक भूचाल सा आ गया जिसके कारण कई लोग टूटे ,कई लोग बिखरे ,कई लोग बदले ,कई लोग सँवरे,कई लोग सुधरे और जो नहीं सुधरे वो मरे । कोरोना वायरस जब से आया तब से दुनिया में लोगों ने अपनी पहली चर्चा में इसे ही रखा । दूसरी कोई भी चर्चा प्राथमिकता में पीछे ही रही ।न केवल भारत बल्कि पूरा विश्व इस महामारी से जूझ रहा है । हम और आप भी कहीं न कहीं इससे प्रभावित रहे । किसी को ऑक्सीजन की जरुरत थी, किसी को प्लाज़्मा की जरुरत थी, किसी को बेड की जरुरत थी । उफ वो फोन कह्ल और दर्द भरी आवाजों का दौर । याद आता है तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं । हम कहीं कुछ मदद करने में समर्थ हुए और कहीं असमर्थ । इस कोरोना ने शारीरिक और मानसिक रूप से बहुत नुकसान किया । आज भारत दूसरी लहर के खौफ से जूझ रहा है और इधर तीसरी लहर की चर्चा शुरू हो गयी ।

यह दौर कब थमेगा यह किसी को नहीं पता लेकिन हमें मन में विश्वास रखना होगा कि जल्द ही इस महामारी का दौर थमेगा ।ले. किन एक बात अभी जो दिखाई दे रही है वो यह कि इसके पूरी तरह खत्म होने तक हमें जागरूक रहना पड़ेगा और इसमें कोई दो राय नहीं है कि बहुत हद तक इस वायरस के साथ अपनी जिंदगी चालू रखनी पड़ेगी । हमने कुछ गलतियां की, सरकारों ने कुछ गलतियाँ की ,समाज में उच्च पदों पर बैठे कुछ लोगों ने गलतियाँ की ,सामान्य नागरिकों ने कुछ गलतियां की । जिसका खामियाजा रहा कोरोना वायरस का यह उग्र तेवर । गलतियाँ यह रही कि हमें इसे बहुत हलके में लिया । पिछली कुछ गलतियों से सरकारें सबक सीख कर काम करना शुरू कर दें और आम जनता भी लापरवाही करने से खुद को जागरूक करें तो कुछ बात बन सकती है ।

आज जब सरकार वैक्सीन की बात कर रही है तो हमें इसे लिए आगे आना चाहिए । भारत एक बड़ा देश है यहाँ सबको वैक्सीन लगने में समय लगेगा लेकिन अगर किसी को अवसर मिल रहा है तो वह किसी भी कारण से इस अवसर को जाने न दें । जब हमें पता है कि वैक्सीन ही इसे रोकने का एक माध्यम है तो हमें लोगों को जारूक भी करना पड़ेगा । अभी बहुत से लोग हैं जिनकी मानसिकता है वै. क्सीन न लगवाने की जो सरासर गलत है । वैक्सीन से ही आप सुरक्षित हैं ,इसे लगवाना आवश्यक है ।

इस महामारी के दौर में हमने एक चीज और देखी वो यह कि एक वो जहाँ लोग दूसरे की जी-जान से मदद कर रहे थे वहीँ कुछ लोग ऐसे कारनामे किये जिससे मानवता शर्मसार होती है । दवाओं की कालाबाजारी ,ऑक्सीजन की कालाबाजरी ,कुछ डाक्टरों की मनमानी इत्यादि । इस सबसे बढ़कर हमने देखा कि इस महामारी के दौर में अपने भी पराये जैसा व्यवहार करते दिखे । लोग अपनों की मदद से कतराते रहे । अपनों की लाशों को जलाने तक आगे नहीं आये ।माँ-बाप की अर्थियाँ लेने तक बहुत लोग नहीं आये । यह बहुत ही दुःखद और मन को खिन्न करने वाले प्रकरण रहे जो तमाम मीडिया के माध्यम से देखने को मिला ।

बहुत सोचने के बाद इस नतीजे पर पहुँची हूँ कि इस बदलते दुनिया में रिश्ते के मायने भी बदल रहे हैं । कुछ ज्यादा पढ़े-लिखे संतानों की संवेदनाएं नष्ट हो रही हैं । अपने ही माँ-बाप के साथ पराये से जैसा व्यवहार करना कभी भी अपनी संस्कृति का हिस्सा नहीं रहा । सभी को सुखी देखने और बराबर सम्मान देने का भारतीय दर्शन आज कुछ अपने ही लोगों की वजह से धूमिल होता दिखाई पड़ रहा है । इस महामारी ने बहुत कुछ दिखाया । कष्ट में ही अपनों की पहचान होती है,शायद इक्कीसवीं सदी के लोग इस बात को बहुत अच्छे से समझ गए हैं और भविष्य में इससे सीख मिलेगी ।

बहुत कुछ बातें है लेकिन कुल मिलकर बस यही कहना है कि कोई भी संकट का दौर हो उससे सीखने को बहुत कुछ मिलता है । कोरोना महामारी ने भी हमें सिखाया कि हमें अपनी संस्कृति के प्रति उदारता बना कर रखनी होगी।
परिवार हमारी संस्कृति की महत्वपूर्ण कड़ी है ,इसे जोड़कर रखना होगा । संकट के समय सबसे पहले अपने ही खड़े रहते हैं । वो भाग्यशाली हैं जिनके अपने इस दौर में साथ थे । लेकिन जिनके अपनों ने उन्हें सहारा नहीं दिया उन्हें इस समय से यह प्रश्न करना होगा कि आखिर ऐसा क्यों हुआ ? गलती किसी भी हो, भविष्य में ऐसी गलतियों से बचने की सीख लेनी चाहिए । जो अपने नहीं हैं, उनसे दूर रहना ही बेहतर है और जो अपने हैं उन्हें किसी भी हालत में नाराज नहीं करना है ।

मन में विश्वास रखें , अपने आप को इस संघर्ष से उबरने की कोशिश करें । सुबह हो रहा है ,हवाएं चल रही हैं ,जीवन बदल रहा है । जो लोगों ने इस दौरान गलतियाँ की, लापरवाही किये उनके सुधरने का समय है । सावधान रहें, सोशल डिस्टेंस का पालन करते रहें और वैक्सीन जरूर लगवाएं । हिंदी की गूँज हमेशा से सकारात्मक विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए अग्रसर रही है । इस अंक में भी आपको बहुत सकारात्मक रचनाएँ मिलेगीं । अपनी प्रतिक्रियाएँ हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं । इक अंक को भी आपका प्यार मिलेगा ,ऐसा विश्वास है । धन्यवाद !!

रमा शर्मा
प्रधान संपादक ,
हिंदी की गूँज

अपनी बात

एक सामान्य मनुष्य के लिए जीवन में केवल भौतिक सुख की प्राप्ति ही सम्पूर्ण हैं जबकि असाधारण व्यक्तित्व के भौतिक सुख बहुत मायने नहीं रखता है । वो स्वयं को संतुष्ट और संतुलित रखने का प्रयास करते हैं । जीवन के हर चरण में और प्राप्ति के हर स्तर पर वो अपने आप को संतुष्ट रखने है । वास्तव में यही आत्मा को संतुष्ट रखने का सबसे बड़ा मन्त्र है । भौतिक सुख की कामना करने वाले व्यक्ति महसूस करते होंगे की उनके जीवन में संतुष्टि नहीं आ पाती क्योंकि चाह और प्राप्ति की कोई अधिकतम सीमा नहीं है । आप जितना प्राप्त करते जायेंगे आपके जरुरत बढ़ती जाएगी क्योंकि आपने मन को संतुष्ट करना नहीं सीखा है । मनुष्य को अपनी जरुरत को पूरा करने के साथ-साथ आध्यात्मिक चिंतन पर भी ध्यान देना चाहिए जो उसके वर्तमान जीवन को संतुलित करता है ।

इसी दिशा में एक जो बड़ी चीज है वो है आपकी अपनी खुशी ,आपका अपना शौक । भौतिक सुख की कामना करने वाले लोग अक्सर जीवन के पड़ाव पर यह महसूस करते हैं कि उनसे कुछ छूट गया तब उन्हें एहसास होता है कि उन्होंने शरीर के लिए तो बहुत कुछ किया किन्तु मन और आत्मा को खुश रखने पर ध्यान नहीं दे पाए ।

कोरोना काल पूरे विश्व के मानवजाति के लिए कष्टकारी रहा । भविष्य में अच्छे की उम्मीद कर रहे हैं परन्तु हमें नहीं पता की इस वायरस की वजह से अभी क्या-क्या देखने को मिल सकता है । बीते दिनों हमारे अपने बहुत से मित्र ,रिश्तेदार हमसे दूर चले गए । इस क्रूर कोरोना से अचानक से उनके जीवन को ऐसा छीन लिया कि उन्हें कुछ सोचने-समझने का अवसर ही नहीं मिला । कुछ आयु के अंतिम पड़ाव में थे , कुछ जीवन में मध्यकाल में और कुछ प्रारंभिक दौर में भी । बहुत दुःखद रहा । लेकिन इससे और चीज निकल कर आती है कि जीवन अनिश्चित है । जीवन तो छोड़िये ,हम इतना भी दावा भी नहीं जो आज है वो कल रहेगा या नहीं ।

जब इतनी अनिश्चितता है जीवन में तो फिर क्यों हम भौतिक सुखों के पीछे भागते रहते हैं । क्यों न हम एक सीमित लक्ष्य निर्धारित करके मन और आत्मा की संतुष्टि के लिए काम करें । इस संसार बहुत ऐसे लोग भी हैं जिनकी सामन्य जीवन की जरूरतें भी पूरी नहीं हो पाती । अगर मनुष्य अपनी जरुरतों को सीमित करके जरूरतमंदों के लिए कुछ कर सके तो निश्चित रूप से उसे बहुत शांति मिलेगी । अपनी मुलभुत जरुरत पूरा करने के बाद स्वयं के लिए अनायास ही भागने से बेहतर हैं उनका दुःख बाटें जिन्हें अभी भी वो चीजें मुहैया नहीं हो पा रहीं जो एक सामान्य जीवन के लिए अति आवश्यक है । जो जिस प्रकार से समर्थ हैं उसे मानवता के लिए कुछ सकारात्मक कार्य करते रहना चाहिए । चाहे वो व्यापारी हो ,चाहे राजनेता ,चाहे खिलाड़ी ,चाहे साहित्यकार इत्यादि -इत्यादि ।

आइये सब मिल करके समाज को जोड़ने में सहयोग दें ,इस कोरोना काल में जिसने-जिसने अपनों को खोया है,उसे सहारा दें । अगर आपकी मूलभूत जरूरतें पूरी हो रही है तो थोड़ा-थोड़ा उनके लिए भी कुछ करें जिनकी अह्खें किसी अपनों के इंतजार में आँसुओं की नदी बहा रही है । यह दौर भी बीत जायेगा लेकिन हमें जीवन में समभाव से आगे बढ़ना होगा ।

--विनोद पाण्डेय

--विनोद पाण्डेय
भारत

गजल

कपिल कुमार
बेल्जियम

मंजिलों से जुदा हो गए
रास्ते जब खफा हो गए

नर्म हो कर झुके जब कभी
लोग सारे खुदा हो गए

उनकी तारीफ की ,और वो
जान ओ दिल से फिदा हो गए

रूबरू सच के हम जब हुए
झूठ सारे हवा हो गए

सोच में आज सय्याद है
कैसे पंछी रिहा हो गए

धारा के विपरीत उतरना है

आओ साथी करें मरम्मत नाव की
धारा के विपरीत उतरना है ।

गड़बड़ मौसम,तेज आधियाँ टूटी है पतवार
फँसे हुए हैं इस तट पर जाना होगा उस पार
मन में संशय पैदा करती हैं ऊँची लहरें
किन्तु लक्ष्य से पूर्व कहो कब पथिक कहीं ठहरे

आधे रस्ते में रुकना स्वीकार नहीं
अंतिम साँस तलक दम भरना है ।।

माना लोग डराएंगे पर हमें नहीं डरना
नकारात्मक होकर के बिन मौत नहीं मरना
मौसम सदा नहीं रहता है यूँ बिगड़ा-बिगड़ा
इच्छाशक्ति के आगे तूफान करेगा क्या

कभी नहीं थकना है ,हरदम बढ़ना है
संघर्षों में और निखरना है ।।

लकड़ी ,टीन और बासों की नहीं हमारी नाव
आशाओं से,विश्वासों से बनी हमारी नाव
सैलाबों के हर मंसूबों को बेकार किया
जाने कितने सागर इसके बूते पार किया

सागर तो जीवन पथ है फिर क्या रुकना
मंजिल पर ही हमें ठहरना है।।

विनोद पाण्डेय
गाजियाबाद

कोरोना से बचना होगा

ठंडा-ठंडा मौसम ऐसा,
देख के झूमे मन

बादल की मनमानी देखूँ
याद करूँ बचपन

बड़े दिनों के बाद खिला है
सबका चेहरा आज

धरती के खुशहाली का भी
आज खुल गया राज

मौसम का लो मजा मगर
यह रखना होगा याद

लापरवाही में कोरोना
फिर ना हो आबाद

कोरोना से बचना होगा
चेहरा ढक कर रखना

दोगज की दूरी रखके ही
सबसे तुम मिलना

फिर चाहे जितनी मस्ती
इस मौसम में करना

ख़ुशियाँ बाँट भले लोगों से
दुखियों का दुःख हरना

धरती प्यासी है तो बादल
प्यास बुझाता है

सबका रखो खयाल
यही बादल सिखलाता है

-विनोद शर्मा

बड़ा कौन

कहा जाता है कि 'बड़े वे होते हैं जिनकी नज़र आसमान पर होती है और खुद ज़मीन से जुड़े होते हैं'। मेरे मन में भी 'बड़ा आदमी' बनने की इच्छा कई बार जागृत हुई और मैंने कोशिश भी की कि ज़मीन से जुड़ा रहूँ और आसमान पर नज़र रहे, लेकिन मैं अभी तक सफल नहीं हो सका और लगता है इस जीवन में कभी हो भी न पाऊँगा।

मैंने खोज की और पाया कि हमारे शहर की ज़मीन बड़ी विचित्र है जैसे कि प्रायः हर नगर और महानगर की होती है, जिससे जुड़ना मेरे जैसे साधारण आदमी के लिए बहुत कठिन है। मेरे मह.ानगर में ज़मीन खाली नहीं होती अपितु मकानों, दुकानों, कार्यालयों और इसी गोत्र के अन्य तत्त्वों और पदार्थों से भरी रहती है। सड़के ही सड़के हैं जिन पर बाध और अबाध गति से अनेक प्रकार के वाहन गुज़रते हैं। इन सड़कों के माध्यम से ज़मीन से जुड़ना खाला जी का घर नहीं। सड़कों के साथ जहाँ जहाँ पटरियाँ हैं, उनमें किसी भाँति जुड़ भी जाएं तो आसमान देखने के लिए गर्दन उठाने पर जोख़िम का सामना करना पड़ सकता है। पटरियों पर मनुष्य के अतिरिक्त कुत्ते, बिल्ली, सुअर, गाय, बैल और गाय का पति हो सकते हैं जिनकी कृपा से पटरियों पर गोबरधन तरह-तरह की मोबाइल चित्रकारी कर रहा होता है। ये ही नहीं पटरी पर खंभे पेड़ आदि तो आदिकाल से होते ही हैं किंतु कालचक्र के फेर से दूध के डिपो, सिगरेट पान की दुकानें और तरह-तरह के खोमचे भी हो सकते हैं। कई बार सड़क पर भीड़ होने के कारण पटरियों पर स्कूटर, मोटर साईकिल भी हल्लाबोल की मुद्रा में तेज़ गति से पटरी दलित कर रहे होते हैं। अब इनसे बचे तो ठीक से ज़मीन से जुड़ा जाए, जुड़ जाएं तो जैसा कि पहले कहा आसमान कैसे देखें? वैसे भी महानगरों में आसमान दिखता ही कहाँ है। जो उसके नाम से दिखता है वह जहरीली गैसों का तोपखाना होता है।

आसमान की ताक में मेरे शहर की ज़मीन पर भीख मांगता नन्हा, अंधनंगा छोटा हिंदुस्तान होता है, बड़े हिंदुस्तान के रूप में कटे, अंगों वाले हताश निराश भीख माँगते नौजवान होते हैं जो बूढ़े दिखते हैं। पटरियों और सड़कों की ज़मीन पर छोटी छोटी कन्याएँ सर्कस जैसी करतब करके हाथ फैला रही होती हैं, अबोध शिशुओं को सूखी छाती से चिपकाए देवियाँ दिखती हैं जिन्हें अपने और अपने बच्चे के पोषण के लिए अन्न और धन की आवश्यकता होती है और उन्हें मनचलों के मन की सुननी भी पड़ती है।

रात को बहुत से बेघर नागरिक पटरी को बेडरूम बना लेते हैं और ज़मीन से जुड़ जाते हैं और चेहरा आसमान की ओर होता है किंतु नींद आने पर आँखें बंद रहती हैं। बारिश, आँधी, जानवर और महंगी कारों में धुत देश के होनहार यमदूतों का भय भी अवचेतन में होता है।

मुझे तो ऐसे ही प्राणी ज़मीन से जुड़े नज़र आते हैं जिनके पास धन नहीं मकान नहीं, अन्न नहीं, केवल आसमान है। आसमान, जहाँ भगवान का निवास माना जाता है। इसीलिए ज़मीन से जुड़े ये (महानगरीय) लोग आसमान की ओर देखते हैं .... भगवान के स्थान पर उन्हें प्रदूषित, शून्य ही दिखता है। आश्चर्य कि भगवान की दया दृष्टि इन पर नहीं पड़ पाती। ....

अब कैसे ज़मीन और आसमान से संतुलन बनाऊँ, अतः बड़ा आदमी बनने का मेरा निश्चय टूटता रहता है।

हरीश नवल
६५ साक्षरा अपार्टमेंटस
ए-३ पश्चिम विहार, नई दिल्ली-११००६३
9818999225
harishnaval@gmail.com

शुभकामना सन्देश

भारत से बाहर जापान जैसे सम्पन्न देश में हिंदी भाषा और साहित्य के प्रचार प्रसार का कार्य बहुत महत्वपूर्ण है किंतु सरल कदापि नहीं ।

विगत दो दशकों से डॉक्टर रमा शर्मा यह कार्य बखूबी कर रही हैं । उनकी प्रतिभा निष्ठा,कर्मठता और सदव्यवहार ने जापान में हिंदी को बहुत प्रतिष्ठित किया है ।अपने साहित्य,संस्था से वे हिंदी की गूँज को अंतरराष्ट्रीय स्वर प्रदान करने में सफल हुई हैं। भारत में भी इसकी गूँज सुनाई देती है ।

मैं डॉक्टर रमा शर्मा को अपनी और अपनी साहित्यिक संस्था की ओर से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ ।

प्रो० हरीश नवल
अध्यक्ष
'शब्द सेतु 'भारत

जाती नहीं

जिद्दी सुबह फिर आ खड़ी है
क्यूँ रात रुक जाती नहीं
फिर जोड़े जर्रा जर्रा हिम्मत
टुकड़ो मे मौत आती नहीं

दिन नया है, चल पड़ी फिर
यह राह अनजानी नहीं
फिर ओढ़ एक कफन चली
जीवन से नयन मिलाती नहीं

बस छीटों का तो फर्क है
क्यूँ मुझको मैं भाती नहीं
हर दृष्टि उसको देखती
घृणा, कुछ तरस खाती रही

है तमस् से अब जूझना
नेह दीप अब बाती नहीं
मौन आंखे चीखती क्यूँ
क्यूँ दर्द पी जाती नहीं

तेजाब या समय की गहरी
चोट कौनसी बुझलाती नहीं
बस छीटों का तो फर्क है
क्यूँ बस जिए जाती नहीं

शीशे के टुकड़े जोड़ क्यूँ
दरारे मन की मिटाती नहीं
तेजाब से चेहरा जला था
याद कर खुद को भुलाती रही

हीन मन से तू उबर अब
निर्भय को दुनिया डराती नहीं
काबिल है तू हक मांग हक से
ह्रदय शक्ति क्यूँ जगाती नहीं

बस छीटों का तो फर्क है
क्यूँ सब को यह बताती नहीं

प्राची चतुर्वेदी रंधावा
आई टी प्रोफेशनलिस्ट,
यू ट्यूबर एवं कवियत्री
वैंकुवर, कनाडा

पहचान

जो हैं हम
वही हमें रहने दो,
अधिक न उस से कम
हमें समझो।
सूरज की अपनी महिमा
चाँद की अपनी गरिमा,
एक दुसरे के ले कर गुण
खो देंगे निज अस्तित्व
बनी रहने दो पहचान।
नहीं चाहिये हमें
सम्मान और अपमान,
प्रभावित करता नहीं
इनका आना जाना,
बस रहे सुरक्षितिज
निज स्वाभिमान,
नहीं चाहिये आदरणीया
अस्वीकारणीय है अनादर,
नहीं चाहते होना
किसी के बराबर
और ऐसे खोना
अपनी पहचान।
कहो न इसे अभिमान
जो हैं हम ,वही रहने दो,
अधिक,न उससे कम हमें समझो।

---प्रोमिला भारद्वाज, चण्डीगढ ।

दादी का संदूक !

स्याही-कलम-दवात से, सजने थे जो हाथ !
कूड़ा-करकट बीनते, नाप रहें फुटपाथ !!

बैठे-बैठे जब कभी, आता बचपन याद !
मन चंचल करने लगे, परियों से संवाद !!

मुझको भाते आज भी, बचपन के वो गीत !
लोरी गाती मात की, अजब-निराली प्रीत !!

मूक हुई किलकारियां, चुप बच्चों की रेल !
गूगल में अब खो गए,बचपन के सब खेल !!

छीन लिए हैं फोन ने, बचपन के सब चाव !
दादी बैठी देखती, पीढ़ी में बदलाव !!

बचपन में भी खूब थे, कैसे- कैसे खेल !
नाव चलाते रेत में, उड़ती नभ में रेल !!

यादों में बसता अभी, बचपन का वो गाँव !
कच्चे घर का आँगना, और नीम की छाँव !!

लौटा बरसों बाद मैं , उस बचपन के गाँव !
नहीं बची थी अब जहां, बूढी पीपल छाँव !!

नहीं रही मैदान में, बच्चों की वो भीड़ !
लगे गेम आकाश से, फोन बने हैं नीड़ !!

धूल आजकल चाटता, दादी का संदूक !
बच्चों को अच्छी लगे,अब घर में बन्दूक !!

✍ - **डॉ सत्यवान सौरभ,**
रिसर्च स्कॉलर,कवि,स्वतंत्र पत्रकार एवं स्तंभकार,

भला क्या कर लोगे?

है हर ओर भ्रष्टाचार, भला क्या कर लोगे
तुम कुछ ईमानदार, भला क्या कर लोगे ?

दूध में मिला है पानी या पानी में मिला दूध
करके खूब सोच-विचार, भला क्या कर लोगे ?

ईमान की बात करना नासमझी मानते लोग
सब बन बैठे समझदार, भला क्या कर लोगे ?

विकास की नैया फंसी पड़ी स्वार्थ के भंवर में
नामुमकिन है बेड़ा पार,भला क्या कर लोगे ?

इंसाफ के नाम पर बस तारीख पर तारीख
है लंबा बहुत इंतजार, भला क्या कर लोगे ?

फोड़ लोगे सर अपना मार-मार कर दीवारों पर
चलो, छोड़ो, बैठो यार, भला क्या कर लोगे ?

डॉ. शैलेश शुक्ला,
दोणिमलै टाउनशिप ,
बेल्लारी, कर्नाटक

सौगात ए इश्क...

एक बार ही बहकती है
ये नजरें..., किसी को देखकर...
यह इश्क है साहेब...
सौ बार नहीं होता !!

निगाह में जो बस गया
हृदय की आह में जो बस गया
दिल में जो घर बना लिया
धड़कन की धड़क में भी
उन्हीं का आवाज सुनाई देता है !!

माह ए मोहब्बत में जो
मन मिलन की दहलीज पर
घुटनों के बल बैठकर जो
उसने गुलाब देते हुए
इजहारे इश्क किया !!

नजरों से नजरें मिली
आंखों ही आंखों में बात हुई
बस वही प्यार यादगार बन गया
अब आंखें चार नहीं होता !!

प्यार
तो इस संपूर्ण अस्तित्व की
सबसे बड़ी सौगात है
हर सौगात हर दूसरी सौगात के
इश्क में होती है
जब हम पहुंचते हैं
इश्क की शिखर पर
तो हम देखते हैं हर सौगात
हर दूसरे सौगात को इश्क करते हैं !!

मनोज शाह 'मानस'
सुदर्शन पार्क,
मोती नगर, नई दिल्ली
मोबाइल नंबर. ९१ ७६ ८२५१ ०६८५

जाने क्या बात है

जाने क्या बात है, कुछ तो बात है तुझमे,
मुकम्मल होंगे ख्वाब, यकीन फिर जगने लगा है
बेजार मृत सी पड़ी, उम्मीदें उफनने लगी है मुझमें
खत्म है आंखों का मलाल, समा सुरमई सा हो गया है,

तुमसे मुकम्मल है जिंदगी, तिश्नगी कहने लगी मुझसे,
मरकर फिर जी उठी, रहबर जीने की वजह है तुझमें।
क्यों मैं खुद में पूर्ण नही, क्यों जहां दिखता है तुझमें,
जरा अब जवाब दे, क्या मेरी भी यही जगह है तुझमें।

पल पल मेरी सोच पर काबिज रहती हैं तुम्हारी यादें,
कहना कुछ और चाहकर कहती कुछ और हैं मेरी बातें।
लिखना चाहती हूँ खुद को, लिख जाती हूँ तुम्ही को,
अब तो बता दे किस जुर्म की यह सजा मिली है मुझको।

इश्क करना गर गुनाह है गुनाह तो हो चुका हमसे,
अकेले हम गुनहगार नही शामिल तुम हर गुनाह में।
क्यों हलाहल मेरे हिस्से में रहा सुधा सारी तुम ले गए,
बता मुझे एक बूंद अमृत की, क्या बची नही मेरे हिस्से में।

विनय
नई दिल्ली
भारत

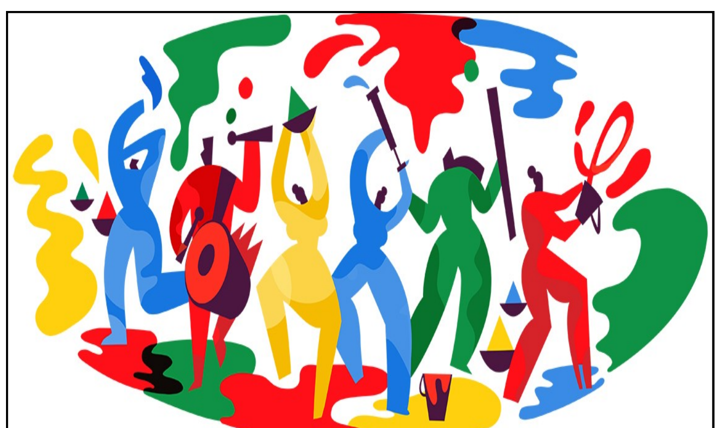

हिन्दी की गूँज

खामियाजा

सुनो
जा रहे हो तो जाओ
पर अपने यह निशां भी
साथ ले ही जाओ
जब दोबारा आओ
तो चाहे, फिर साथ ले लाना
नहीं रखने है मुझे अपने पास
यह करायेंगे मुझे फिर अहसास
मेरे अकेले होने का
पर मुझे जीना है
अकेली हूँ तो क्या
जीना आता है मुझे
लक्ष्मण रेखा के अर्थ जानती हूँ
माँ को बचपन से रामायण पढ़ते देखा है
मेरी रेखाओं को तुम
अपने सोच की रेखाएँ खींच कर
छोटा नहीं कर सकते
युग बदले, मै ईव से शक्ति बन गयी
तुम अभी तक अहम के आदिम अवस्था में ही हो
दोनों को एक जैसी सोच को रखने का
खामियाजा तो भुगतना तो पड़ेगा

डॉ अनिता कपूर
(कैलिफोर्निया,अमेरिका)

आज का बच्चा

सीधा सरल भोला नहीं है
आज का बच्चा!
बस जीव का गोला नहीं है
आज का बच्चा!!
है ज्ञान गूगल सीख करके
पेट से आया!
आते ही इसने फेसबुक
पर ध्यान लगाया!
ये ऊन का गोला नहीं है
आज का बच्चा!!
आते हजार लाइक
मुस्कान मार दे!
हो जाए वो कुरवान
जिसको ये निहार दे!
पोला नहीं, झोला नहीं है
आज का बच्चा!!
सिस्टम में अपने पासवर्ड
डाल गया है!
इस वक्त कहां हो
सवाल टाल गया है?
कुछ भी अभी बोला नहीं है
साल का बच्चा!
चन्दा का झिंगोला नहीं है
आज का बच्चा!!
आपने तोला नहीं है
आज का बच्चा!!

शिवचरण चौहान
कानपुर

गजल

जो नर मेहनत के पसीने से तरबतर नहाता है,
तब जाकर दुनिया में वह मजदूर कहलाता है।

अतिसूक्ष्म जर्रे से लेकर विशालकाय जहाज में,
अपनी मेहनत को मजदूर ही बेखबर लगाता है।

दुनिया के हर यंत्र में खपा है परिश्रम बहुत,
ऐ मनुष्य! ऐसे ही नहीं तू यंत्र को चलाता है।

कंगूरे को देखकर मानव प्रफुल्लित हो पर,
हाड़-तोड़ परिश्रम कर मजदूर नींव बनाता है।

चीर कर छैनी संग हथौड़े से वह नग हर,
औरों के लिए वहीं मेहनती हर घर सजाता है।

कर सम्मान,दे हक,हो न्याय सदैव ऐ जाखल,
विवश न कर,पापी पेट हेतु मजदूरी को जाता है।

मास्टर भूताराम जाखल
सांचौर, जालौर राजस्थान
भारत

पर्यावरण की महत्ता बताती जरूरी किताब 'प्रदूषण मुक्त सांसें'

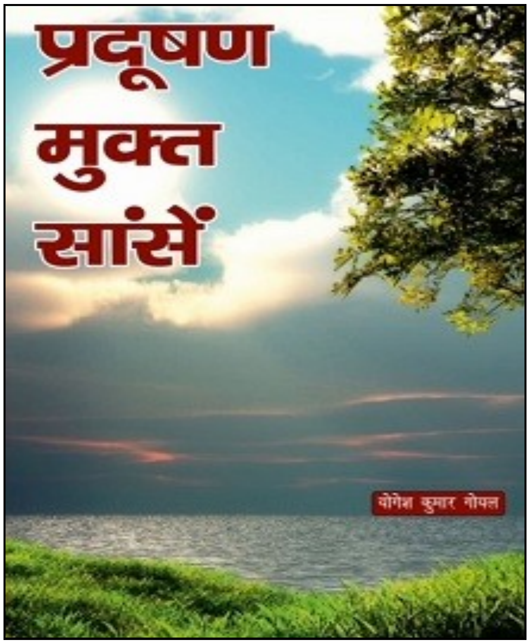

हाल के सालों में यह पहला ऐसा मौका है, जब पिछले कुछ महीनों में दुनिया के बिगड़ते पर्यावरण और प्रदूषण की किसी गहराती समस्या ने हमारा ध्यान नहीं खींचा। शायद इसकी वजह यह है कि दुनिया पिछले कुछ महीनों से कोरोना संक्रमण के चक्रव्यूह में फंसी हुई है, नहीं तो कोई ऐसा महीना नहीं गुजरता, जब बिगड़ते पर्यावरण की बेहद चिंताजनक और ध्यान खींचने वाली कोई खबर दुनिया के किसी कोने से न आती हो। वास्तव में २१वीं सदी की सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी या आतंकवाद नहीं है। इनसे भी बड़ी समस्या हर तरह का बढ़ता प्रदूषण है, जिसके कारण धरती पर लगातार विनाश का खतरा मंडरा रहा है।

वरिष्ठ पत्रकार और सम-सामयिक राजनीतिक विषयों के प्रिंट मीडिया में लोकप्रिय विश्लेषक योगेश कुमार गोयल की हाल में आयी बहुचर्चित किताब 'प्रदूषण मुक्त सांसें' वास्तव में धरती की इसी विराट समस्या को संबोधित है। वास्तव में पर्यावरण किसी एक देश, एक समाज या एक इलाके की समस्या नहीं है। इसकी जद में पूरी दुनिया है। इसीलिए श्री गोयल की इस किताब का नजरिया वै. श्विक है। किताब में १६ अध्याय हैं। ये सभी अध्याय वास्तव में दुनिया की विराट प्रदूषण जनित समस्या को एक नजर में देखने का उपक्रम हैं। इस तरह देखा जाए तो हिन्दी अकादमी के सौजन्य से प्रकाशित उनकी १६० पेज की इस किताब में धरती की समस्त पर्यावरणीय समस्याएं एक क्रम में मौजूद हैं। इसलिए अगर विषय वस्तु को ध्यान में रखते हुए इसे गागर में सागर कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

किताब में मौजूद हर अध्याय वास्तव में प्रदूषण की किसी समस्या या उससे पैदा हुई स्थिति का चित्रण है। किताब के पहले अध्याय 'प्रकृति की मूक भाषा को समझें' में दुनिया का ध्यान इस तरफ खींचा गया है कि धरती में रह-रहकर जो उथल-पुथल की कुदरती घटनाएं घट रही हैं, उनके पीछे छिपे संकेतों को समझें। ये ध रती में इंसान की ज्यादती का नतीजा हैं। किताब का यह अध्याय बताता है कि आधुनिकरण और औद्योगिकीकरण में कहां हमने कुदरत की नैतिक सरहद का उल्लंघन किया है, जिसके नतीजे हमारे सामने हैं। किताब का दूसरा अध्याय वायु प्रदूषण को समर्पित है, जो वास्तव में मौजूदा दौर का सबसे बड़ा प्रदूषण संकट है। हर साल दुनियाभर में २० लाख से ज्यादा लोग जहरीले वायु प्रदूषण के कारण मौत के घाट उतर जाते हैं। वायु प्रदूषण हाल के सालों में सामने आयी प्रदूषण की सबसे बड़ी समस्या है, जिसके चलते सिर्फ इंसान ही नहीं, हरी-भरी प्रकृति की भी सांसें थम सी रही हैं।

किताब में जल प्रदूषण, खासकर जल-स्रोतों पर गहराते प्रदूषण की समस्या को भी बारीक निगाहों से देखा गया है। इसी क्रम में ध्वनि प्रदूषण पर भी किताब में बहुत ही सरस सामग्री है। बेलगाम उपभोग के चलते संकट का सबब बने प्लास्टिक की विनाशकारी भूमिका को भी लेखक ने बड़े विस्तार और गंभीरता से अपनी किताब में समेटा है। इस मायने में भी यह किताब खास है क्योंकि इसमें अकादमिक रूखाई नहीं है। चूंकि लेखक बहुत सारे विषयों का जानकार है, इसलिए भी किताब में जबरदस्त जानकारियों के साथ-साथ एक रोचक पठनीयता है।

किसी पत्रकार की गंभीरता से लिखी गई किताब इसलिए भी दूसरे लेखकों से ज्यादा उपयोगी होती है क्योंकि इसे न केवल सहजता से पढ़ा जा सकता है बल्कि आसानी से गहराती प्रदूषण की समस्या को बिना किसी बौद्धिक आतंक के समझा जा सकता है। जबकि बड़े-बड़े अकादमिक विशेषज्ञों की लिखी गई किताबें इस पैमाने पर खरी नहीं उतरतीं। योगेश कुमार गोयल एक सक्रिय लेखक हैं और देशभर के विभिन्न समाचारपत्रों में करीब-करीब उनके हर दिन महत्वपूर्ण लेख छपते हैं, उन्हें लेखन का लंबा अनुभव है। इसलिए उनकी किताब में लंबे-लंबे अनावश्यक और उबाऊ विवरण कतई नहीं हैं, जो आमतौर पर पाठकों के लिए किसी किताब को पढ़ने की सबसे बड़ी बाधा होते हैं।

'प्रदूषण मुक्त सांसें' इतनी रोचक और सरल जुबान में लिखी गई है कि इसे कोई भी सामान्य पाठक पढ़कर अच्छे पर्यावरण का महत्व और प्रदूषण की गहराती समस्या को समझ सकता है। प्रस्तुत किताब पिछले कुछ महीनों से मीडिया में काफी चर्चा में है। 'मीडिया केयर नेटवर्क', नई दिल्ली से प्रकाशित यह पुस्तक अमेजन डाट इन पर बिक्री के लिए उपलब्ध है, जहां से पाठक इसे खरीद सकते हैं।

पुस्तकः **प्रदूषण मुक्त सांसें**
लेखकः योगेश कुमार गोयल
प्रकाशकः मीडिया केयर नेटवर्क, ११४, गली नं. ६, एमडी मार्ग, गोपाल नगर, नजफगढ़, नई दिल्ली-११००४३
मूल्यः २६० रुपये

समीक्षकः लोकमित्र
लोकमित्र, वरिष्ठ सम्पादक,
इमेज रिफ्लेक्शन सेंटर,
मेन विकास मार्ग, दिल्ली-११००९२.

मोहब्बत

मोहब्बत...
दिल की आवाज
रुह का अहसास
मोहब्बत...
दर्द-ए-दास्ताँ
दिल-ए-सुकून
मोहब्बत...
एक अफसाना
अनसुना फसाना
मोहब्बत...
आँखों की भाषा
संबंधों की परिभाषा
मोहब्बत...
खिजाँ का मौसम
बसंत -ए- बहार
मोहब्बत...
रस्म-ए--इबादत
हर एक की हसरत
मोहब्बत...
आग का दरिया
अमृत का मंथन
मोहब्बत...
रस्म-ए-रिवाज
जमाना खिलाफ
मोहब्बत...
मेरी तेरी कहानी
लोगों की जुबानी

अरुणा कुमारी राजपूत

यूँ ही अचानक कहीं कुछ नहीं घटता

यूँ ही अचानक कहीं कुछ नहीं घटता
अन्दर ही अन्दर कुछ रहा है रिसता
किसे फुरसत कि देखे फुरसत से जरा
कहाँ उथला कहाँ राज है बहुत गहरा
बेवजह गिरगिट भी नहीं रंग बदलता
यूँ ही अचानक कहीं कुछ नहीं घटता

यूँ कहने को सारा जग अपना होता
पर वक्त पर कौन है जो साथ रोता
तेरे-मेरे के घेरे से कौन बाहर निकले
साथ जीने-मरने वाले होते हैं बिरले
जो सगा है वही कितना संग चलता
यूँ ही अचानक कहीं कुछ नहीं घटता

यूँ ही कोई किसी की सुध नहीं लेता
बिन मांगे कोई किसी को कब देता
जब तक विप्र सुदामा नहीं गए मांगने
सर्वज्ञ कृष्ण भी कब गए उनके आंगने
महलों का सुख, झोपड़ी को है जलाता
यूँ ही अचानक कहीं कुछ नहीं घटता

कल तक खूब बनी पर अब है ठनी
बात बढती है तो तकरार ही है तनी
तू-तू-मैं-मैं की अगर जंग छिड गयी
तो अपने-पराए की भावना मर गयी
सागर में यूं ही कब ज्वार-भाटा चढ़ता
यूँ ही अचानक कहीं कुछ नहीं घटता

जब साथ मिला तो खूब कमा लिया
लक्ष्य दृढ़ रहे तो मुकाम भी पा लिया
जो कल तक दूर थे, वे पास आने लगे
कांटे बिछाते थे कभी, फूल बरसाने लगे
बिन बादल आसमां भी कहाँ है बरसता
यूँ ही अचानक कहीं कुछ भी नहीं घटता

वीरेंद्र सिंह रावत

एक बूँद ओस की!

''वापस जाना जरूरी है क्या? हनीमून पर भी नहीं जा सके थे। महीनों बाद एक सप्ताह की की छुट्टी मिली थी, पर चार दिनों में ही लौट रहे हैं।''

टैक्सी एक हिल स्टेशन के सर्पिल सड़कों पर तेजी से भागी जा रही थी। एक नवविवाहित जोड़े में बहस जारी थी, ''सारा वक्त यूँ ही गँवा देना। जिंदगी ओस की बूँदों के समान है, जाने कब खत्म!''

''हे देवी! जिंदगी कविता, कहानियों और समाज सेवा से नहीं चलती। रोटी, कपड़ा और मकान लगता है, जिसके लिए इस तुच्छ सेवक को करनी पड़ती है नौकरी और माननी पड़ती है बॉस की बातें। बहस ने कहा, 'लौट आओ!' तो लौटना है। सवाल जवाब की गुंजाईश कहाँ है? लहकडाउन के बाद नौकरी बची है, यही शुक्र मनाओ।

और जिंदगी ओस की एक बूँद क्यों? मैंने आपके साथ लंबे जीवन की योजना बनाई है, जिसके लिए लक्ष्मी जी की कृपा आवश्यक है। आपकी कविता, कहानियों एवं समाज-सेवा का मानदेय तो मिलता नहीं, नौकरी करके घर मुझे ही चलाना पड़ेगा, मैडम!" पर माहौल का तनाव कम होता नहीं दिखा।

निष्ठा के बिगड़े मिजाज के साथ गाड़ी का मिजाज भी बिगड़ गया। टैक्सी ड्राइवर ने कहा, ''मैडम! लगता है पानी डालना पड़ेगा।''

''हाँ तो डालो! मना किसने किया है?'' निष्ठा झुँझलाई।

''सर! मैडम! डिकी में बच्चा! जरूर मैंने डिकी खुली छोड़ी होगी'', डिकी खोलते ही ड्राइवर चिल्लाया। अपूर्व और निष्ठा नीचे उतरे।

''यह तो वही बच्ची है, जो हमें रास्ते में ढाबे पर मिली भी थी! मैंने ढाबे वाले को डाँटा भी था कि एक नाबालिग बच्ची से इतने सारे बर्तन क्यों धुलवा रहा है? बाल श्रम कानून से अनभिज्ञ है क्या? तुम्हारी प्रतिक्रिया थी, 'एक टूरिस्ट की तरह घूमो, समाज सेविका का चोला पहन कर नहीं।' मैंने तुम्हारी बात मानी पर तुमने छुट्टी का सत्यानाश कर दिया'', निष्ठा का गुस्सा पुनः सातवें आसमान पर चढ़ गया।
''झगड़ा बंद कीजिए, मैडम! बच्ची की बात सुनिये'', ड्राइवर ने हाथ जोड़ दिये।

''जब मैं छोटी थी तभी मेरी माँ को बॉर्डर पार से भगाकर उस ढाबे पर बेच दिया गया था। वह वहाँ सालों सफाई-बर्तन का काम करती रहीं। कभी-कभार चाची के न रहने पर ढाबे का मालिक जोर-जबरदस्ती भी करता था। थकान और कुढ़न से माँ को टीबी ने जकड़ लिया और पिछले साल दम तोड़ गईं।
''तब से चाचा मुझसे सफाई-बर्तन कराता है और जबरदस्ती करने की ताक में था, चाची ने बचा रखा था। आज मुझे आपके साथ भगा दिया। कहा- मैडम समाजसेविका हैं, कोई ना कोई प्रबंध जरूर कर देंगी।''

''लीजिए निष्ठा मैडम! सफर के बीच में ही मिल गई ओस की एक असली बूँद। अब इसके लिए सही सीपी का प्रबंध करना आपका फर्ज है। इसपर एक धाँसू स्टोरी भी लिखिए और बजाइए उस ढाबे वाले की बैंड'', अपूर्व मुस्कुराकर बच्ची के साथ गाड़ी में जा बैठे।

निष्ठा का गुस्सा झाग की तरह बैठ गया था। अब उसके सामने एक तगड़ी चुनौती खड़ी थी।

नीना सिन्हा,
पटना, बिहार।

संयम से समाधि तक !!

अभी अभी तो तुम्हारी कोंपलें फूटी हैं,
अभी तो एक लंबा रास्ता तय करना हैं तुम्हें,
बहुत से अनुभव मन के गहरे धरातल पर इकट्ठे करने हैं तुम्हें...
याद रखना ! तुम्हारे स्रोत पर, तटों, त्रिवेणियों पर बहुत से लोग मिलेंगे,
किंतु कुछ क्षण मात्र के लिए,
इन्हें देख अहंकार में डूब मत जाना ,
खुद को सागर समझ कहीं रूक मत जाना !!
क्यूंकि जब निर्जन वन होगा तुम्हें अकेले ही चलना होगा,
पर्बतों से नीचे तुम्हें स्वयं ही उतरना होगा !
कि, सरिता को अपनी यात्रा स्वयं ही करनी होती है !!
बस ऐसे ही, ''संयम से समाधि तक'' साधक को स्वयं ही चलना होता है,
अपने भावों की सरिता में स्वयं ही संभलना होता है ।।

वीरेन्द्र जैन, नागपुर

टूटते सिद्धांत

गली के नुक्कड़ पर जगेसर ने चाय की दुकान खोल रखी थी। जिस मकान में उसकी दुकान थी वह मेरे मित्र की थी। उसे यह दुकान मैंने ही अपने मित्र से दिलवायी थी। उसकी दुकान अच्छी चल रही थी। हमेशा ग्राहकों की भीड़ लगी रहती। चाय के साथ वह पकौड़ी-समोसे भी तल लेता। काम की अधिकता के कारण उसने हाथ बँटाने के लिए दो-एक लड़कों को भी अपने साथ लगा रखा था।

ग्राहकों के साथ वह बड़े अदब से पेश आता। उसकी व्यवहार कुशलता भी ग्राहकों को उसकी दुकान की ओर खींच लाती। उसके दिन बड़े अच्छे-से गुजर रहे थे। अपने बच्चों का उसने स्कूल में दाखिला भी करवा रखा था। उसके बच्चों को कभी मैंने दुकान में हाथ बँटाते नहीं देखा। यह भी एक तरह से अच्छी बात ही थी। उसने अपना एक अलग सिद्धान्त बना रखा था। अपने बीबी-बच्चों से दुकान में काम करवाने को वह ठीक नहीं समझता। मैं भी उसके सिद्धान्तों की सराहना करता। मेरे प्रति वह बड़ा कृतज्ञ रहता।

इधर कुछ दिनों से वह थोड़ा परेशान था। पूछने पर पता चला कि उसकी दुकान से चार दुकान आगे उसके छोटे भाई ने एक और चाय-समोसे की दुकान खोल ली है। नयी दुकान खुल जाने से उसकी बिक्री पर अच्छा-खासा असर पड़ा और उसके बहुत सारे नियमित ग्राहकों ने नयी दुकान का रुख कर लिया।

नये दुकान का मुआयना करने के उद्देश्य से एक दिन मैं भी वहाँ पहुँचा। दुकान पर काफी भीड़ थी। दुकानदार ग्राहकों से पूछ-पूछकर उन्हें चाय-पकोड़े दे रहा था। उसकी नयी-नवेली घरवाली गुलाबो पकोड़े तल रही थी। अब मुझे पूरा माजरा समझ में आ गया। मैंने महसूस किया - पूरे समय चाय की चुस्कियों के बीच अधिकांश ग्राहकों की तिरछी नजरें गुलाबो के गदराये बदन पर ही टिकी रहती।

इस बात को कई दिन बीत गये। दो-चार दिन बाद मैं फिर नुक्कड़ से गुजर रहा था। मैंने जगेसर की दुकान पर कुछ ज्यादा ही हलचल देखी। उत्सुकतावश मैं उस ओर बढ़ गया। ग्राहकों की भीड़ के बीच जगेसर उन्हें संभालने में व्यस्त था और उधर उसकी जवान बेटी चूल्हे पर पकोड़े तल रही थी। ग्राहकों की कम होती भीड़ के बोझ तले शायद जगेसर का सिद्धांत दम तोड़ चुका था.........

अमिताभ कुमार "अकेला"
जलालपुर, मोहनपुर, समस्तीपुर

तितली सी मँडराती है

याद तुम्हारी मन उपवन में तितली सी मँडराती है
प्रीतम श्याम घटा जब छाये,बिजली सी लहराती है।।

तुझ बिन सूना है घर आंगन,जग सारा लागे रीता
मेरे राघव क्या बोलूं जी, मैं हूँ निर्वासित सीता।।
प्रियवर निशदिन ध्यान तेरा, धड़कन भी ये गाती हैं।
याद तुम्हारी मन उपवन मे तितली सी मंडराती है।।

पंथ निहारूं प्रियतम तेरा, बोलो तुम कब आओगे
कुम्हलाई भावों की बगिया,बादल बन कब छाओगे,
राधा राह निहारे तुझ बिन व्याकुलता बढ़ जाती है।।
याद तुम्हारी मन उपवन में तितली सी मँडराती है।।

बैरन रात नहीं कटती है, तुझ बिन नींद नहीं आये,
ये बसन्त का मादक मौसम ,कोयलिया भी अकुलाए,
ना कोई संदेशा ना ही मिली तुम्हारी पाती हैं।
याद तुम्हारी मन उपवन में तितली सी मंडराती है।।

तुम ही मेरे सरस् श्याम घन ,मैं हूँ तेरी प्रेम लता,
तुझ बिन साजन मुरझाई हूँ, बोलो क्या मेरी है खता,
मन आँगन में प्रेम बदरिया,सावन गीत सुनाती है।।
याद तुम्हारी मन उपवन में तितली सी मँडराती है।।

तुझ बिन हूँ मैं सदा अधूरी, मैं ,तेरे संग से ही पूरी
कह भी दो क्या नाराजी है, क्यों है इतनी दूरी,
तुम ही हो मेरे स्नहे प्रियवर,तुझ बिन सूखी बाती है
याद तुम्हारी मन उपवन में तितली सी मंडराती है।।

शुभदा वाजपेई
लखनऊ
(उत्तर प्रदेश)

चिंता चिता समान

सचमुच चिंता करने वाला व्यक्ति बहुत जल्द चिता तक पहुंच जाता है क्योंकि चिंता एक ऐसी दीमक है जो धीरे-धीरे हमारे शरीर को, मन को, मस्तिष्क को या यूं कहें तो हमारे अस्तित्व को ही खोखला कर देती है।

रहीम दास जी ने कहा था-

''रहिमन कठिन चितान ते विंतर करे चित चेत।
चिता दहति निर्जीव को,चिंता जीव समेत।।''

अर्थात कठिन चिंताओं का चिंतन करने की बजाय चित्त पर ध्यान करें क्योंकि चिता तो प्राण हीन (निर्जीव शरीर) को जलाती है जबकि चिंता मनुष्य को चिता तक ले जाती है।

वर्तमान समय में भागदौड़ भरी जिंदगी में हर तरफ तनाव ही तनाव है, चाहे वह बच्चा हो, युवा हो, बुजुर्ग हो। हर कोई किसी न किसी तनाव का शिकार है। चिंता किसी उम्र, किसी व्यक्ति, किसी धर्म विशेष के लिए नहीं बल्कि हर किसी के लिए एक समान समस्या है, इस समस्या का सिर्फ और सिर्फ एक निवारण है आज में जीना , कई बार ऐसा लगता है कि हम बहुत सारी बातों को लेकर के चिंतित होते हैं लेकिन असल में जब वह कार्य सिद्ध होता है तब समझ में आता है कि ये तो बहुत आसान था हम बेकार ही चिंता कर रहे थे। होता यह है कि हमारा दिमाग बहुत सारी कल्पनाएं करता है। बहुत सारी कहानियां गढता है, किसी भी कार्य को लेकर । कार्य की सफलता के परिणाम और दुष्परिणाम दोनों के बारे में हमारा मन एक अलग तरीके से सोचता है क्योंकि सबसे बड़ा कहानीकार अगर कोई है तो वह है हमारा दिमाग। हमारा मन कल्पनाओं की उड़ान भरते-भरते कभी हमें आसमान की ऊंचाइयों तक ले जाता है तो कभी दूसरे ही पल डरा कर के धम्म से जमीन पर गिरा देता है। मनुष्य का स्वभाव है कि वह सपने देखता है और उन सपनों को साकार करने के लिए मेहनत के साथ-साथ ढेरों कल्पनाएं भी करता है। मेरी सलाह यही है कि हम मेहनत तो करें लेकिन कल्पना ना करें या यूं कहें कि मेहनत ज्यादा और कल्पनाएं कम करें तो सपने साकार भी होंगे और उन सपनों के साकार होने के बीच में कोई तनाव भी नहीं होगा।

आज की युवा पीढ़ी के चिंता का सबसे बड़ा विषय है बेरोजगारी। बेरोजगारी एक ऐसी महामारी का नाम है जो अक्षय हो गई है लेकिन दोस्तों इस बीमारी से हमें ही जूझना है और हमें ही आगे निकलना है। काम कोई भी छोटा या बड़ा नहीं होता काम तो काम होता है और हर वह काम जिससे दो वक्त की रोटी का जुगाड़ हो और आपको थोड़ा सा आत्मिक सुख मिले बस समझो वही काम आपके लिए सबसे बढ़िया है । सपने देखो, आगे बढ़ने की कोशिश करो, लेकिन जो काम सामने नजर आ रहा है उसको करते चलो। आपको अंदर से एक अलग तरीके की संतुष्टि, खुशी महसूस होगी और आपका आत्म बल भी बढ़ेगा। सबसे जरूरी चीज उन लोगों से दूर रहने की कोशिश करो जो आपकी मदद तो नहीं करते लेकिन आपके चेहरे की मुस्कान को देख कर दुखी हो जाते हैं और जबरदस्ती का कंसर्न दिखाकर आपके चेहरे पर तनाव के भाव उत्पन्न करने की कोशिश करते हैं -अरे ! तुम्हारे पास नौकरी नहीं है ? अरे! तुम्हें अभी तक नौकरी नहीं मिली ? तो तुम्हारा काम कैसे चल रहा है? आदि आदि । ऐसे लोग आपके अपने नहीं है बल्कि आपके दुखों को बढ़ाने वाले हैं ऐसे लोगों से दूर रहो। इनसे बेहतर है कि बच्चों के साथ रहो, प्रकृति के साथ रहो , फूलों में पानी दो, पंछियों को दाना दो और छोटे बच्चों के साथ खेलो। किसी पार्क में चले जाओ उदास मन भी उनकी मासूम किलकारियों के साथ हंसने लग जाएगा। अंत में यही कहूंगी की चिंता मत करो चिंतन करो । कार्य कैसे सिद्ध होगा इस पर मंथन करो और ईश्वर पर भरोसा रखो । क्योंकि ''होइहैं वही जो राम रचि राखा''।

डॉ ममता श्रीवास्तवा(सरूनाथ)

मेरा प्यारा भारत

सम्पूर्ण धरा पर मुझको जो है प्राणों से भी प्यारा,
कोई और नहीं वह है सुन्दर भारत देश हमारा
यूँ तो देश अनेक हैं भू पर इसकी महिमा न्यारी है,
देख महान संस्कृति इसकी विस्मित दुनिया सारी है ।

है माटी यह संतो, गुरुओं और पीरों की,
आजाद, भगतसिंह, राजगुरु जैसे वीरों की
वीरांगनाएँ भी यहाँ की कहाँ किसी से कम हैं,
आए प्रत्यक्ष शत्रु इनके, गर उसमें इतना दम है।

मीरा की भक्ति में डूबा कृष्णमयी है यह भारत,
सीता की त्याग-तपस्या की तपोभूमि है यह भारत,
निज हित त्याग दान करें जो, ऐसे कर्ण वीर का भारत,
पन्ना धाय के बलिदानों की अमर कहानी है भारत ।

निरंतर बाँटे जग में प्रेम, शांति और भाईचारा,
सच, मानो! ऐसा ही है स्वर्णिम भारत देश हमारा
'सत्यमेव जयते' का ही देता है यह हरदम नारा,
'वसुधैव कुटुम्बकम्' ही है इसका स्वप्न प्यारा ।

-डॉ. कंचन शर्मा 'स्नेही'
भारत (दिल्ली)

हिन्दी साहित्य के महामनीषी एवं महाकवि : रामधारी सिंह 'दिनकर'

'राष्ट्रकवि' की उपमा से विभूषित स्वनामधन्य कवि एवं हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ गद्यकार रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म बिहार के तत्कालीन मुंगेर जिला (अब बेगूसराय जिला) में गंगा के उत्तरी तट पर अवस्थित सिमरिया गाँव में २३ सितंबर १९०८ को एक सामान्य कृषक परिवार में हुआ था। उनकी माता का नाम मनरुप देवी और पिता का नाम रवि सिंह था। तीन भाइयों में मँझले दिनकर जब मात्र दो साल के थे तभी उनके पिता का स्वर्गवास हो गया। उनके लालन-पालन और शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध उनकी विधवा माता ने किया। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में हुई। १९२८ में मोकामा घाट के हाईस्कूल से मैट्रिक तथा १९३२ में पटना कॉलेज, पटना से बी.ए. (इतिहास) की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे सर्वप्रथम बरबीघा हाईस्कूल में प्रधानाध्यापक नियुक्त हुए। इसके बाद वे क्रमशः बिहार सरकार के अधीन सब-रजिस्ट्रार, बिहार सरकार के प्रचार-विभाग के उप निदेशक, लंगट सिंह कॉलेज, मुजफ्फरपुर में हिन्दी-विभागाध्यक्ष, राज्यसभा के सदस्य, भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति तथा भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार भी रहे।

छात्र-जीवन में ही दिनकर के भीतर कवित्व का अंकुर प्रस्फुटित हो चुका था और उनकी कविताएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपने लगी थीं। १९३० ई. तक वे हिन्दी के एक उदीयमान कवि के रुप में सारे देश में विख्यात हो गये थे। पर, विडम्बना यह थी कि हिन्दी के जिस कवि के भीतर से भारत की राष्ट्रीयता अपनी सबसे निर्भीक आवाज उठाने वाली थी, परिवार का पेट पालने की मजबूरी में वही कवि अंग्रेजी सरकार की नौकरी में फंसा रहा। एक ओर रेणुका, हुंकार जैसी उनकी कृतियों को हिन्दी-संसार ने अपने सर आँखों पर उठा लिया था तो दूसरी ओर अंग्रेजी सरकार द्वारा उन्हें काफी प्रताड़ित किया गया। प्रताड़ना का एक रुप यह रहा कि महज चार साल के अन्दर ही उनके बाईस बार तबादले किये गये। अभावों, संघर्षों और प्रताड़नाओं की प्रतिकूल परिस्थिति में भी दिनकर के अंदर का कवि जीवित रहा तो इसका एकमात्र कारण जनता का अपार प्रेम ही था जो उन्हें आरंभ से मिलता रहा।

दिनकर की काव्य-कृतियों में प्रणभंग (१९२९), रेणुका (१९३५), हुंकार (१९३८), रसवंती (१९३९), द्वंद्वगीत (१९४०), यशोधरा, कुरुक्षेत्र (१९४६), सामधेनी (१९४७), बापू, रश्मिरथी (१९५२), नीलकुसुम (१९५४), नीम के पत्ते (१९५६), उर्वशी (१९६१), परशुराम की प्रतीक्षा (१९६३), कोयला और कवित्व (१९६४), हारे को हरिनाम (१९७०) आदि प्रमुख हैं। इनमें 'उर्वशी' एक महाकाव्य तथा 'कुरुक्षेत्र' एवं 'रश्मिरथी' खंडकाव्य हैं। छायावादोत्तर काल का काव्य 'अभिव्यक्ति की मुखरता' के लिए जाना जाता है और इस काल के सर्वश्रेष्ठ और सबसे सशक्त प्रतिनिधि के रुप में दिनकर में अभिव्यक्ति की यह मुखरता अपने शीर्ष पर है। भूख और दारिद्र्य पर वे लिखते हैं-

''श्वानों को मिलता दूध-वस्त्र, भूखे बालक अकुलाते हैं
माँ की हड्डी से चिपक ठिठुर जाड़ों की रात बिताते हैं।''

दिनकर की काव्य-भाषा ओजपूर्ण है और उसमें पौरुष, मस्ती और उमंग का वेग है। उनकी भाषा-शैली में सर्वत्र सरलता व सहजता के आवेग का ऐसा निर्वहन हुआ है जैसा किसी दूसरे कवि में देखने को नहीं मिलता। उनकी कविताओं पर राष्ट्रीयता की छाप सबसे अधिक है। उनका हृदय सामंती शोषण से व्यथित हो उठता है-

''शांति नहीं तबतक,जबतक सुख-भाग न नर का सम हो
नहीं किसी को बहुत अधिक हो, नहीं किसी को कम हो।''

दिनकर की कविताओं में कभी शिव का प्रलयंकारी तांडव नृत्य सा उपस्थित हो जाता है तो कभी गंगा और हिमालय आदि के मनोहारी प्रकृति-वर्णन भी मिलते हैं। दिनकर की सबसे बड़ी विशेषता है- अपने देश और युग सत्य के प्रति जागरुकता। वे देश और काल के सत्य को अनुभूति और चिन्तन दोनों स्तरों पर ग्रहण करते हैं और राष्ट्र के प्राचीन मूल्यों का नये जीवन संदर्भों के परिप्रेक्ष्य में आकलन कर उन्हें जीवन प्रदान करते हैं। दिनकर वर्तमान की समस्याओं और आकांक्षाओं को महत्त्व देते हुए उन्हें अपने प्राचीन किन्तु जीवन्त मूल्यों से जोड़ना भी चाहते हैं-

''रे, रोक युधिष्ठिर को न यहाँ, जाने दे उनको स्वर्ग धीर!
पर फिरा हमें गाण्डीव-गदा, लौटा दे अर्जुन-भीम वीर।''

एक सफल कवि के अतिरिक्त दिनकर एक सफल गद्यकार भी थे। उन्होंने स्वयं कहा है कि- ''सरस्वती की जवानी कविता है और उसका बुढ़ापा दर्शन है।'' दिनकर के उत्तरवर्ती जीवन में यही दार्शनिकता तथा गूढ़ वैचारिकता गद्य के रुप में प्रकट हुई। दिनकर के गद्य- ग्रंथ निम्नांकित हैं- मिट्टी की ओर (१९४६), अर्द्ध नारीश्वर (१९५२), संस्कृति के चार अध्याय (१९५६), काव्य की भूमिका, पंत-प्रसाद और मैथिली शरण गुप्त (१९५८) रेती के फूल, उजली आग, वट पीपल (१९६१), शुद्ध कविता की खोज (१९६६) आदि। मूलतः निबंध व आलोचना की विधा में रचित दिनकर की गद्यात्मक रचनाओं में काव्य, संस्कृति, भाषा एवं समाज का चिंतन मुखर है। उनके गद्य की भाषा भी काव्यात्मक, पारदर्शी, सहज, सरल, सरस तथा कसी हुई है।

दिनकर जनता द्वारा सबसे अधिक उद्धृत किये जानेवाले आधुनिक हिन्दी कवि हैं। उनको जनता का प्यार राष्ट्रीय कविताओं के कारण मिला लेकिन 'रसवन्ती' से शुरु हुई शृंगार रस की काव्यधारा जब 'उर्वशी' में पूर्ण विकास को प्राप्त हुई तो उसे उनकी सर्वश्रेष्ठ व सर्वोत्तम काव्य-कृति समझी गयी। दिनकर जी के सुयश के प्रसार में 'रश्मिरथी' का भी बड़ा हाथ रहा। सम्मान उन्हें 'कुरुक्षेत्र' से प्राप्त हुआ और श्रद्धा के भाजन वे 'संस्कृति के चार अध्याय' गद्य-ग्रंथ लिखकर हुए। रामधारी सिंह दिनकर को उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'संस्कृति के चार अध्याय' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा उनकी प्रसिद्ध काव्यकृति 'उर्वशी' के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया। उन्हें पद्मभूषण तथा अन्य कई अलंकरणों से भी सम्मानित किया गया। दिनकर के नश्वर शरीर का अंत २५ अप्रैल १९७४ को मद्रास (अब चेन्नई) में हो गया, पर जब तक हिन्दी भाषा रहेगी वे अमर रहेंगे।

–अमित कुमार,
'जगदीश द्वार', पंडारक (पटना)

केशव शरण की कविताएं

बालक गणेश

छोटा है या बड़ा
वह अपने पैरों पर खड़ा
कर लेता है परिक्रमा
चारपाई की
जो है उसके बाऊ -माई की।

कमाल

पानी ने कमाल किया
जलते पत्थर को चिटका दिया
हमेशा के लिए,
जिसे एक परिन्दे ने
एक दूसरा आयाम दिया
उसने भी कमाल किया
बीज था उसी का रोपा

आज
स्वयं में कमाल है
निरन्तर बड़ा होता
पीपल का पौधा

नदी के पास से

बहती नदी के किनारे
बैठे मिलेंगे लोग बहुत
ठहरी नदी के किनारे
ठहरता नहीं कोई
वह किसी और दृश्य की ओर बढ़ जाता है
अनायास

मैं भी आ गया
नदी के पास से
राजकीय उद्यान के फूलों के पास

केशव शरण
एस २-५६४ सिकरौल
वाराणसी २२१००२
९४१५२९५१३७

गजल

दिखावे की उल्फत गवारा नहीं है,
मुझे ये रवायत गवारा नहीं है ।

मेरे शहर आकर भी मिलते नहीं हो,
अजब तेरी आदत गवारा नहीं है स

जो मिलना हो मुझसे तो दिल साफ रखना,
मुझे झूठी चाहत गवारा नहीं है ।

मुहब्बत है मुझसे तो कह देते खुलकर,
छुपाना हकीकत गवारा नहीं है ।

जता के मुहब्बत भुला बैठे मुझको,
तेरे दिल में नफरत गवारा नहीं है ।

सजाने लगे क्यों रकीबो की महफिल,
मुझे ये हिमाकत गवारा नहीं है ।

है गर दोस्ती तो न खंजर उठाओ,
मुझे ये अदावत गवारा नहीं है ।

मिले अब बशर बस जरूरत में अक्सर,
मलिक को ये हरकत गवारा नहीं है ।

-- **शायर नरेश मलिक**
मोबाइल -९८९६०८९५११४

गजल

न कोई खिलौना न हूँ मैं शराब
मैं हूँ मस्त खुशबू मैं हूँ तेरा खाब

बचाता है मुझको हया का हिजाब
न कोई मनचला मुझको कर दे खराब

किसी से मुझे कम न समझो हुजूर
मेरा भी है अपना अलग ही रुआब

न कीजे अभी मुझसे कुर्बत की बात
अभी फासला थोड़ा रखिए जनाब
(कुर्बत--नजदीकी)

रिसाले जहां भर के बेशक पढ़े
न पढ़ पाये जिस को,मैं हूँ वो किताब

मुहब्बत है तो इम्तिहां दीजिये
मेरे कुछ सवालों का दीजे जवाब

लगें मेरे लब तुम को दो पंखुड़ी
बदन की लचक,ज्यों हो शाखे- गुलाब

मगर मेरे दामन में कुछ खार हैं
और आँखों की कोरों में थोड़ा- सा आब

कामना मिश्रा

गजल

राहें सूनी, गलियाँ सब वीरान हो गए हैं
जिंदा लाशों से देखो अब इंसान हो गए हैं।।

खून से लथपथ हाथ,जमीर हैं मरे हुए
गौर से देखो दिल इनके श्मशान हो गए हैं।।

नहीं किसी की चीख-पुकार सुने कोई
गूँगे-बहरे देखो इनके अब कान हो गए हैं।।

बस खुद की जेबें भरते हैं ये देखो
सफेदपोश ये नेता सब बेईमान हो गए हैं।।

चप्पे-चप्पे पे पड़ी हैं बिखरी लाश यहाँ
गहरी नींद में मंदिर के भगवान हो गए हैं।।

नफरत की अब बू आती सब चेहरों से
प्रेम गुलिस्तां अब जंग के मैदान हो गए हैं।।

ये कैसी आबो-हवा ''दीप'' ये मंजर कैसा
क्यों जानबूझकर सब इतने अनजान हो गए हैं।।

कुलदीप दहिया ''मरजाणा दीप''
हिसार (हरियाणा) भारत
संपर्क सूत्र -९०५०९५६७८८

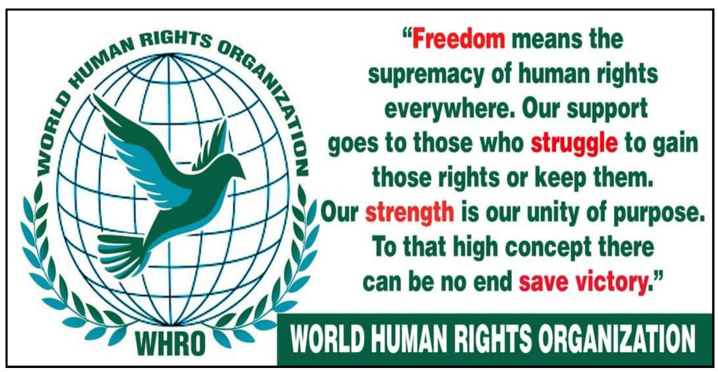

गजल

नहीं जो ''डूबने'' दे गर वो तिनका मिल गया होता।
भटकती क्यों समंदर में सहारा'' मिल गया होता ।

तुम्हारे साथ जो चलती अकेली मैं नहीं होती ।
मगर इस जीस्त को प्याला जहर का मिल गया होता

अना को छोड़ देती तो नजर से खुद की गिर जाती।
तुम्हारे दर पे फिर मेरा जनाजा मिल गया होता ।

सितमगर वक्त था वरना, न चिनते हम ये दीवारे।
मुहब्बत से हमें जीने का' जज्बा मिल गया होता।

करी पूजा दिया आदर नही भाया तुम्हें कुछ भी।
जो' करते कद्र तुम मेरी ,खजाना मिल गया होता।

कभी ऐसा ही हो जाता ,तेरा साया ही छू लेती ।
तू' हाथों की लकीरों में जो'' पिन्हा मिल गया होता ।

जला डाला कलम को भी हा उसके प्यार की खातिर।
मनीषा काश उसको भी इशारा मिल गया होता ।

मनिषा जोशी मनी
ग्रेटर नोयडा.

गजल

दर्द दिल में दबा सा रहता है।
है जरा सा जरा सा रहता है।

हसरतें आंखों में लिए है मगर,
दम-ब-दम वो कटा सा रहता है।

यादों की उस बड़ी हवेली में
तन्हा दीपक जला सा रहता है।

रात ढ़लते ही सर्द मौसम कुछ,
खुशनुमा खुशनुमा सा रहता है।

उसकी आहट मिलेगी आने की,
घर का दर अधखुला सा रहता है।

गर उठा तो तवाह कर देगा,
जहन में जलजला सा रहता है।

मेरे गम की उदास राहों में,
कोई पत्थर डरा सा रहता है।

धड़कनों के दयार में आकर,
एक तू ही हवा सा रहता है।

ऐ! शजर तू बता दे किसके लिए,
एक पग पर खड़ा सा रहता है।

विनोदसिंह नामदेव ''शजर''
(साहित्यकार, शिक्षाविद्)
९८२६६२७२६०

कातिल बना कोरोना

किससे करें शिकायत, सुनता नहीं है कोई।
सिस्टम है बेमुरब्बत, कुदरत भी सोई - सोई।
कातिल बना कोरोना,
जीवन निगल रहा है।
यमराज का ये नाती,
सांसों को छल रहा है।
बेबस रुआँसी जिन्दगी, रस्ता नहीं है कोई।
किससे करें शिकायत, सुनता नहीं है कोई।
अपनों को छोड़ - छोड़कर,
कितने बेवक्त चले गए।
हवा - दवा के नाम पर,
लुटे लाखों छले गए।
आँखों में देख आँसू , पिघलता नहीं है कोई।
किससे करें शिकायत, सुनता नहीं है कोई।
रोते - बिलखते दोस्त को,
हिम्मत बँधा न पायें।
बेदम हुआ शरीर तो,
कन्धा लगा न पायें।
दहशत से कांपते हैं, मिलता नहीं है कोई।
किससे करें शिकायत, सुनता नहीं है कोई।
अब तू ही मेरे मालिक!
कुछ करिश्मा दिखा दे।
बुझते दीयों की रोशनी,
जगमग जरा लौटा दे।
अपनों की गलती माफ , क्या करता नहीं है कोई ?
किससे करें शिकायत, सुनता नहीं है कोई।।

नरेन्द्र सिंह नीहार
नई दिल्ली

दिन तेरे-मेरे

कट ही जाएँगे यह दुख के
दिन तेरे-मेरे।

रात गये तक ही ठहरेंगे
गहरे अंधेरे।
कट ही जाएँगे यह दुख के
दिन तेरे-मेरे।

धीरज का यह दीप कभी भी
बुझने मत देना।
गिरे कहीं तो, धूल झाड़ कर
पथ पर बढ़ लेना ।
गति-अवरोध सभी के पथ पर आते बहुतेरे।
कट ही जाएँगे यह दुख के, दिन तेरे-मेरे।

गयी धूप, निश्चित आती ही-
होगी छाँव अभी।
तम का कभी, उजालों का फिर
रहता ठाँव कभी।
अधिक दिनों तक बंजारों ने डाले कब डेरे?
कट ही जाएँगे यह दुख के दिन तेरे-मेरे।

सतत-साधना, और अथक-श्रम
नव-अवसर लाते।
बहती सरिताओं के आगे-
पर्वत झुक जाते।
आया समय भाग्य ने 'घूरे' के दिन भी फेरे।
कट ही जाएँगे यह दुख के दिन तेरे-मेरे।

राजेंद्र श्रीवास्तव
आर एम पी नगर फेज - १
विदिशा म.प्र ४६४००१
मोबाइल ९७५३७४८८०६

आशावान आशा

उस दिन वह मजबूर और आहत थी । उसने साठ साल की उम्र में सब्जियाँ बेचने का निर्णय लिया था । वह रोज सुबह तड़के ही उठ जाया करती । सुबह बिट से सब्जियाँ खरीदती, टोकरी में भर कर अपने सर पर उठा लेती । और अपने निश्चित स्थान पर बैठ कर उसे बेचा करती थी । इस उम्र में भी गजब की ताकत उसमें थी । पता नहीं, वह ताकत उसमें कैसे आ जाया करती थी । मजबूरी में या जिजीविषा के लिए ? उसके बालों की सफेदी ने उसके बुजुर्ग होने का प्रमाण दे दिया था । चेहरे पर झुर्रियों ने अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया था । गले में केशरी रंग की मणिमाला थी । कानों में कर्ण फूल सूर्य की किरण से चमक रहे थे । उसने कभी किसी समय एक मेले से सस्ते दामों में खरीदे थे । गहने के नाम पर चालीस-पचास रुपयों का वही एक मात्र उसके पास खजाना था ।

एक दिन जब वह सब्जियां बेच रही थी । तब उसके सामने कुछ बालक खेलते-कूदते नजर आये । उनकी हँसी-किलकारी को देख और सुनकर उसे अपना बचपन याद आ गया । वह कितने लाड प्यार से पली थी । वह अपने माता-पिता की दुलारी और सबसे प्यारी बेटी थी । उस समय उसे किसी बात की कोई कमी नहीं थी । ना किसी का डर था और ना ही किसी बात की चिंता थी । जो मांगों उसे तुंरत मिल जाया करता था । उसके भी बहुत सारे सखी-सहेलियाँ थी । वह भी इन्ही बच्चों की तरह खेला-कूदा करती थी । उसके जीवन में वह एक खुशी का पल था । जब भी वह उदास होती तो उसे अपना बचपन याद आता और उसमें सुख और खुशियों का संचार कर जाता । थोड़े समय के लिए सही, पर था तो ...। उसके पिता ने उसका नाम बड़े प्यार से आशा रखा था । उसके पिता को उसे देख कर लगता था कि वह सदैव आशावान रहेगी । कभी हार नहीं मानेगी । आशा के जीवन में पिता के घर के बाद बहुत कम खुशियों के पल आये थे ।

आशा का जब पवन नामक एक युवक से विवाह हुआ तब उसके परिवार की ओर से बेदिक्कत सम्मति मिल गयी थी ।पर पवन ने अपने परिवार के विरोध में जाकर आशा से प्रेम-विवाह किया था । उसने साफ कह दिया था कि, ‘‘विवाह करूँगा तो आशा से ही वरना मैं अपने जीवन को समाप्त कर दूँगा ।’’

पवन घर का लाड़ला बेटा होने के कारन उसके इस धमकी का असर होना स्वाभाविक ही था । उसके परिवार ने कुछ नुनकार के बाद स्वीकृति प्रदान कर दी थी । पर मन के भीतर आशा के प्रति इर्षा और द्वेष ने घर कर लिया था । उस पर उसकी गजब की खूबसूरती ने उसके पहले उस घर में आनेवाली बहु के जलन का कारन बन चुकी थी । अर्थात उसकी जेठानी आशा की खूबसूरती को पसंद नहीं करती थी । पर उपर से सबको दिखाना था कि उसने आशा और पवन के रिश्ते को स्वीकृति दे दी हैं । ‘‘इतनी खूबसूरत हैं इसीलिए हमारा पवन इस पर लट्टू हो गया हैं । और हो भी क्यों नहीं । किसी की नजर ना लगे इन दोनों को ..।’’ उसकी जेठानी अकसर ताक में रहती थी कि कब उसे मौका मिले ताकि वह परिवार के सामने उसे नीचा दिखायें ।

विवाह हो कर दस साल बीत गये पति से सुख मिला पर उसे संतान सुख नहीं मिला था । और परिवार वालों को मौका मिल गया था । रोज के ताने बांज, करमजली न जाने क्या-क्या सम्बोधन उसके लिए तय होते थे । रोज वह किसी न किसी कारन ताडन-प्रताडन का शिकार हुआ करती थी । संतान सुख न दे पाने का दर्द पवन चुप चाप सहे जा रहा था । एक न एक दिन इसका प्रणाम उस के शरीर पर होना ही था । एक बार जब वह बीमार पड़ गया तब उसकी बीमारी महीनों तक ठीक नहीं हो पायी थी । पर इसी दौरान जिस बात का वह और उसकी पत्नी इंतजार कर रहे थे । उस खुशी ने उनके दरवाजे पर दस्तक लगा थी । आशा को पूरे दस साल बाद माँ बनने का सुख मिलने वाला था । एक और खुशी आने वाली थी और दूसरी ओर आशा के जीवन में एक बड़ी दुखद घटना घटित होनेवाली थी । एक दिन जब वह नींद से जगी, उसने देखा कि उसके पति की सांसे अब नहीं चल रही हैं । वह घर-परिवार सारे संसार के बंधनों से मुक्त हो चूका था । उसे अपने सिने पर मन भर का पत्थर रख कर मांग का सिंदूर मिटाना पड़ा था ।

‘‘डायन, तूने मेरे बेटे को अपने मोह जाल में फँसाया । दस साल तक वह संतान सुख के लिए तरसता रहा पर तूने उसे यह सुख नहीं दिया । तेरे ही कारन मेरा बेटा चल बसा । करमजली इस घर से निकल जा । यहाँ तेरा कोई नहीं । जा निकला जा यहाँ से ..।’’ रोज की प्रताड़ना आशा सहन नहीं कर पायी । रोज-रोज के ताने से वह तंग आ चुकी थी । एक दिन उसने मध्य रात्री अपने मर चुके पति का घर त्याग दिया था । उस रात वह दिशाहीन भटकते रही थी । वह अपने और गर्भ में पल रहे बालक के लिए असरा ढूंढ रही थी । कहीं उसे असरा मिल जाये । उसकी गर्भ से जन्म लेने वाले बालक क भाग्य अच्छा था । उसे एक आश्रम में असरा मिल गया । वहीं उसे काम भी मिल गया था । यहीं पर पवन के बेटे ने जन्म लिया था ।आशा को याद था कि उसके पति पवन ने अंतिम समय में एक वचन लिया था । ‘‘आशा, मुझे वचन दप कि तुम मेरे बेटे को किसी बात की कमी महसूस नहीं होने दोगी । और मेरे जाने के बाद दु:खी मत होना मैं ही तुम्हारी गर्भ से वापस लौटकर आऊँगा ।’’ आशा का बालक पूरी तरह से पवन पर गया था । आशा को लगा कि पवन ने उसके बेटे के रूप में फिर से जन्म लिया हैं । उसने अपने बेटे का नाम गोविंद रखा था ।

गोविंद के आने से आशा के जीवन में फिर से नई खुशियाँ आचुकी थी । उसका हँसना-रोना, खेलना-कूदना ऊन सब

को देखकर उसने अपने सारे दुखों को भुला दिया था । गोविंद अब बड़ा हो रहा था ।वह उसके लिए रात-दिन मे. हनत करने लगी थी । वह पूरा खयाल रख रही थी कि वह गोविंद का का लाड-प्यार से पालन-पोषण करें । उसे कभी किसी बात की कमी महसूस नहीं होने दी । उसे पढ़ा लि खा कर इस काबिल बनाया कि वह अपन पैरों पर खड़ा हो सके । इसके लिए आशा को घोर जीवन साधना करनी पड़ी थी । उसने अपने सामने जो भी काम आता करती गयी । दूसरों के घर में उसने बर्तन माँझे, सब्जियाँ बेचीं क्या-क्या नहीं किया था उसने उस समय अपने बेटे गोविंद के लिए । वह एक वक्त भूखा रहती थी ताकि उसका बेटा पेट भर खाना खा सकें । वह पुराने कपड़े से काम चलाती ताकि उसका बेटा नये कपड़े पहन सके ।

गोविंद अब विवाह योग्य हो चूका था । अपने काबिलियत पर एक स्थान पर उसके क्लर्क की नौकरी लग चुकी थी । नौकरी होते ही आशा ने अपने बेटे का विवाह एक सुंदर और सुशिल लड़की से करवा दिया था । वह व्यवहार कुशल थी।उसने टेलरिंग जानती थी । विवाह के बाद गोविंद ने ना माँ को कोई काम करने दिया और ना ही अपनी पत्नी को । उसने अपनी तनखाह से दोनों को सुखी र खा था । आशा को लगा कि अब दुःख भरे दिन बीत गये हैं । सुख भरे दिन आये हैं । अबतक उसने संसार के विपरीत स्थिति का सामना किया था।सबकुछ ठीक-ठाक चल रहा था । आशा को पोता हुआ । वह पोते को देखकर खुश रहने लगी थी । उसके साथ हँसने-खलने में व्यस्त रहा करती थी । कुल मिलाकर एक खुशहाल परिवार बन चूका था ।

एक रात दरवाजे पर दस्तक हुई । दरवाजे पर पुलिस खड़ी थी । आशा जान नहीं पायी की यह पुलिस यहाँ क्यों आयी हैं । उसे कभी अपने जीवन में इस तरह पुलिस के सामने आने की नौबत नहीं आयी थी । पुलिस उसके बेटे गोविंद को पूछ रही थी । उस रात पुलिस उसके बेटे गोविंद को जबरन उठाकर अपने जिप में डालकर ले गयी । दूसरे दिन अखबार में छपा था । गोविंद ने किसी का खून कर दिया हैं । गोविंद को झूठे आरोप में फँसाया गया था । गोविंद बलिका बकरा बन चूका था।उसे उम्र कैद हो गयी थी । आशा के सामने अचानक दुखों का पहाड़ टूट पड़ा था । वह सोच रही थी अभी तो जीवन में खुशियों ने संचार किया था और अचानक इस तरह भगवान मेरी खुशियों को छीन लेगा ...।

उस दिन आशा अपने भाग्य को कोस रही थी । उसे अपने बेटे के साथ बिताये सारे पल याद आने लगे थे । अब उसके पास गोविंद की यादों के सिवाय और कुछ नहीं बचा था । उसे अपने बेटे के वाक्य याद आने लगे थे । ''माँ, अब से तू कोई भी काम नहीं करेगी । तू सिर्फ यहाँ बैठ कर रहेगी । माँ तूने खुद भूखा रह कर मुझे खिलाया ताकि मैं भर पेट खा सकूं, पुराने वस्त्र पहने ताकि मैं नये वस्त्र पहन सकूं । माँ तूने अपने जीवन में मेरे लिए बहुत परिश्रम किया हैं दुःख सहा हैं । माँ अब तेरी सुख भोगने की बारी हैं ।'' एक - एक शब्द आशा के कानों में ऐसे गूंजते मानो गोविंद उसके सामने खड़ा हैं और उसे कह रहा हैं कि माँ अब तू कोई काम नहीं करेगी । आशा ने गोविंद के नौकरी पर लगते ही सारे काम छोड़ दिए थे । वह घर पर बैठ कर रहा करती थी ।

गोविंद के जेल जाने के बाद उसकी पत्नी ने जीवन चलाने के लिए सिलाई-कढ़ाई का काम शुरू कर दिया था । देखते-देखते टेलरिंग का अच्छा व्यवसाय चल पड़ा था । फिर से उनके घर में सुख के दिन आ चुके थे । पैसों-रुपयों की कोई कमी उसके जीवन में नहीं थी । पर आशा की बहु को बैठे-बिठाये अपनी सास का मुफ्त की रोटियाँ तोडना अच्छा नहीं लग रहा था । वह इस बात को लेकर अकसर ताने मारने लगी थी । जबतक बेटा था तबतक माँ जी, माँ जी कहते उसकी जबान नहीं थकती थी । सुशिल और संस्कारी बहु की तरह वह रहा करती थी । आशा भी ऐसी बहु पाकर बड़ी प्रसन्न थी । अपने आपको बड़ी भाग्यवान समझ रही थी । वह अकसर बहु को कहती कि, ''बेटा, मैंने जरुर पिछले जन्म के कोई अच्छे कर्म किये हैं, इसीलिए तेरी जैसी बहु मुझे मिली हैं ।'' तुझमें कोई कमी निकालूं ऐसा ऐब तुझमें एक भी नहीं हैं । पर बेटे के जाने के बाद उसने अलग-अलग तरह के ताने देना शुरू कर दिया था । आशा अपने बुढापे में यह सबकुछ अपनी आखों से देख सुन रही थी । सह रही थी । शिकायत भी वह किसके पास करें । उसका अब अपना इस दुनिया में उनके सिवाय कोई नहीं था ।

''मैं रात-दिन खपती हूँ तब जाकर घर में दो पैसे आते हैं । और तुम रोज-रोज मुफ्त की रोटियाँ तोड़ रही हो । हर रोज सुबह-श्याम लपल. पाते जबान से बेशर्मो की तरह इंतजार करती रहती हो कि मैं तुम्हारे मुह में रोटी लाकर ठुसुं । माँ जी मुझे माफ करना, मुझे अब यह नहीं होगा । मेरे सामने मेरे बेटे का भविष्य हैं । उसके लिए पैसे जोड़ने हैं ।''
बाजार में सब्जियाँ बेचती आशा के नजरों के सामने सारी घटनायें दौड़ रही थी । फिर भी वह आशा थी । आशावान थी । अब उसके सामने उसके पोते को वह खेलता-कूदता देखती और खुश रहा करती थी ।

डॉ.सुनील गुलाबसिंग जाधव,
महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी,
हनुमान गढ़ कमान के समाने,
नांदेड़ (महाराष्ट्र

जैसा नाम है वैसी ही पुस्तक -एक शीशी गुलाब जल

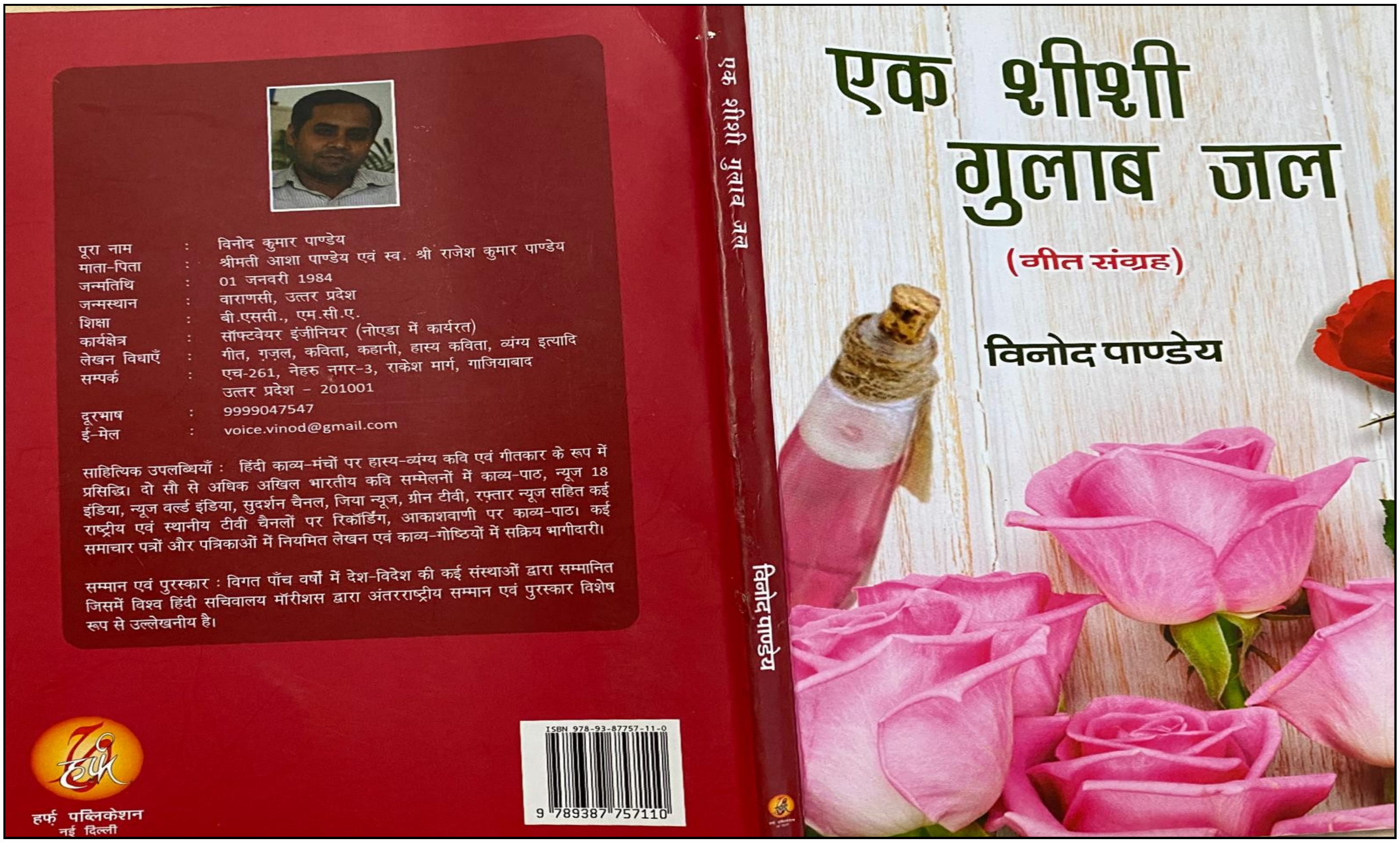

जैसा नाम है वैसी ही पुस्तक लिखी विनोद पांडे ने । ५१ गीतों का ये संग्रह अपने आप में अनूठा ही गीत संग्रह है। जैसा कि विनोद पांडे ने अपनी पुस्तक के लिये कहा है कि कविता लिखना बड़ा सरल है पर कविता जीना बहुत कठिन और मैं कविता जीने का प्रयास करता हूँ । अक्षरशः सत्य बात कही गई है । हर कविता में लेखक स्वयं झलकता दीखता है । विनोद पांडे हास्य कवि हैं। इसलिए अपने मन की बात भी हल्के फुलके ढंग से बहुत सहजता से कह जाते हैं ।

पत्ते पेड़ों से झर झर कर
सृष्टि चक्र को गति देते हैं
नये फूल फिर से आकर के
पेड़ों का दुख हर लेते हैं
रोने का अनुभव न लिया तो
हँसने का अभ्यास न होगा
रे मन फिर से मधुमास न होगा

कितने साधारण से ढंग से मन की बात कही गई और दुख को सुख में ढाल दिया। दुख और सुख तो रेल की पटरियों की भांति ही चलते हैं जीवन में । अपने अगले गीत में फिर से लेखक ने कितनी गहरी बात साधारण से ढंग से कह दी-

गंगा जल जैसा लगता जो, उसका चरित्र साफ नहीं
और अगली पंक्ति में
मिला सुदामा गली गली में, कहीं कृष्ण सा मित्र नहीं ।

ये पुस्तक सच में गुलाब जल ही है, हर गीत संदेश देता हुआ सा है। कहीं लोगों में कृष्ण और सुदामा ढूँढता तो कहीं प्रेयसी को उसका महत्व बताया , वेलेण्टाइन डे के हर रंग को बहुत सुंदर ढंग से बताते हुये लेखक पारिवारिक प्रेम, दादा दादी की कहानियों में अपने बचपन को जी लेता है

और सब को परिवार प्रेम का संदेश देता है।

वो दादी का राजा के किस्से सुनाना,
वो दादा का गोदी में ले कर घुमाना

वो नानी के कस्सिे वो नाना की बातें, पुरानी हुईं पर रही बात बाकि आज की शिक्षा पर भी तगड़ा व्यंग्य करते हुये लेखक ने अपने अगले गीत में कहा है

हुये नदारद प्रेम समर्पण , बदले गुरू शिष्य के नाते
द्रोणाचार्य अगर होते तो, इसे देख कर ही मर जाते
आज गुरू की कालर पकड़ें, शिष्य बहादुर हैं गरियाते
द्रोणाचार्य अगर..,,.

अगले गीत को देखें कि लेखक ने कितनी गहरी बात कह दी है, चंद पंक्तियों में पूरे समाज की तस्वीर उघाड़ दी है -

प्रश्न उठ रहा मेरे मन में,कैसा गड़बड़ झाला है
जिसको थी आवाज उठानी,उसके मुँह पर ताला है
तन पर उजला वस्त्र भले हो, मन काला का काला है

अंतिम प्रश्न पत्र गीत में लेखक पाठको के मन की उड़ान को परीक्षा भवन में ले जाता है और कितने सहज ढंग से विद्यार्थियों की मनोस्थिति बता देता है। आज के दौर में लेखक प्रेम प्यार की कमी को लेकर कितने सहज ढंग से कहता है

इंसानों को इंसानों से इतनी भी मायूसी क्यों
प्रेम मुफ्त है इस दुनिया में, फिर भी ये कंजूसी क्यों

इस गीत में बहुत दुखी भाव से लेखक चारों तरफ हो रहे लड़ाई झगड़े, दहेज, मंदिर मस्जिद , जाति धर्म को लेकर व्याप्त अनाचार को बताते हुये फिर बचपन में पहुँच कर जिन्न को याद करता है।कि ये सब तो जिन्न के बस का भी नहीं है।

माफ करो आका, मैं सूली चढ़ जाऊँगा
माँग तुम्हारी पूरी न कर पाऊँगा

अगले गीत में लेखक ने बहुअर्थी बात कह दी है

ओ बादल, क्या तेरा आना, झलक दिखा कर चले गये
हम बैठे थे आस लगाए, तुम तरसा कर चले गये

इसी तरह अगले गीत पर के क्या कटाक्ष किया लेखक ने

अँधियारे में जैसे मैं, दिनमान ढूँढने निकला हूँ
पुतलों की इस दुनिया में, इंसान ढूँढने निकला हूँ

इस तरह ५१ गीतों में आपको जीवन का हर रंग पढ़ने को मिलेगा । हर गीत अपने में अनूठा रंग लिये हुए है, कभी मुस्कान तो कभी कटाक्ष करते हुए समाज को , बहुत ही सुंदर ढंग से गुलाब जल से सुगंधित किया है । विनोद पांडे को बहुत बहुत बधाई इतनी अच्छे संग्रह के लिये। हम सब उनके नये संग्रह की बेताबी से प्रतीक्षा कर रहें हैं ।

रमा शर्मा,
जापान

सपने

शाम खत्म होने के साथ ही धुंधलका छाने लगा। खेत की मेंढ़ पर बैठे हुए उन दोनों की उठने की इच्छा नहीं हो रही थी। दोपहर में गिरधारी जी आए हैं। उनके बचपन के मित्र हैं। लगभग तीस साल बाद मिले हैं। बिलकुल बदल गए है गिरधारी जी...गाँव में धोती-कुर्ता पहनते थे.. अब पैंट-शर्ट और कोट पहने हुए हैं... शहर भी लागों को कितना बदल देता है?

गिरधारी जी गाँव का सब-कुछ बेचकर शहर निकल गए और फैक्ट्री डाल ली। वे गाँव में ही रहे आए और खेतों में पसीना बहाते रहे जबकि शहर में गिरधारी जी की फैक्टरी खूब चल रही है।

''चल, तू भी चल... सब-कुछ बेच दे यहाँ का दोनों मिलकर काम करेंगे।'' गिरधारी ही ने कहा और अपने हाथ की उंगलियां चटकाई। दोपहर से ही जिद कर रहे हैं।

''.......................।'' वे चुप रहे। जब-जब गिरधारी ही ने उससे ये बात कही है, तब-तब वे चुप रहे।

''दिनभर सूरज को ढोकर अपना खून-पसीना बोया है खेतों में... अपनी पूरी जवानी खपा दी।''

''............................।'' वे फिर चुप रहे।

''सोच ले... शहर जाएगा... फैक्टरी डालेगा... तो जीवन बदल जाएगा... किस्मत बदल जाएगी।'' गिरधारी जी ने उसे चुप दे खकर कहा।

''ये गाँव छोड़ कर कहीं नहीं जाऊंगा।'' वे निर्णय भरे स्वर में कहते हैं।''

''तो फिर तुम अपने अभावों और अपनी तंगी में ही खुश रहो।'' गिरधारी जी ने अपना दायाँ हाथ उठाकर खेतों की तरफ इशारा कर कहा, ''तुम इन मरूथल को वृन्दावन बनाओ।''

उनके मुख पर हँसी तिर आई फिर धीमे स्वर में कहा, ''जानते हो..यहाँ धरती के रंगीन नजारे हैं...सूरज भी है और चंदा तारे भी... महकते फूल हैं तो लहलहाती फसलें भी... चरते हुए जानवर भी हैं तो चहचहाते पक्षी भी... यहाँ माँ-बाप का वात्सल्य भी है तो भाई का स्नेह भी... यहाँ मिलन का सुख-दुःख है तो विछोह की व्यथा भी...'' वे थोड़ी देर के लिए रूके फिर गिरधारी जी की तरह ही अपने खेतों की ओर इशारा कर कहा, ''ये सब हमारे सपने हैं और इन सपनों को छोड़ कर सुखों की खातिर शहर जाना हमसे न हो पाएगा।''

गिरधारी जी उनका मुख अँधेरे में ही देखने की कोशिश करने लगे।

गिरधारी जी को लगा कि हवा बडी अनमनी - सी है। सन्नाटे ऐसे कि कौन इन सन्नाटों से लड़े? गहरी होती रात भी गुमसुम-सी है और पेड़ भी चुपचाप खड़े हैं।

....पर उन्हें ये सब नहीं लग रहा है... जो गिरधारी जी को लग रहा है।

पवन शर्मा

भंग होता अहसास

"ट्रेन काफी लेट हो गई!" पत्नी हौले से बोली.

"हाँ, लगभग सवा घंटे लेट... अब चलती ही होगी." वह बोला.

मोनू को बाबूजी अपनी गोद में लिए खड़े हैं. उनके नजदीक अम्मा भी. अँधेरा बढ़ता जा रहा है.

"बाबूजी, आप लोग लौट जाइए. रात होने लगी है." वह बाबूजी से बोला.

"चले जाएंगे..." बाबूजी धीमे से कहते हैं.

प्लेटफॉर्म पर काफी भीड़ है. ट्रेन से जाने वाले ट्रेन के चलने का इंतजार कर रहे हैं. सामान बेचने वाले ऊँची आवाज में चिल्ला रहे हैं.

"अब तू कब आएगा मोनू?" अम्मा बाबूजी की गोद से मोनू को लेती हुई कहती हैं.

"देखो अम्मा, अब कब छुट्टियाँ मिलती हैं?" वह बोला.

"घर खाली हो गया अब!" अम्मा ने कहा. वह कुछ नहीं कहता... बाबूजी जरूर अम्मा की ओर देखते हैं.

अचानक ट्रेन ने सीटी दी.

"चलो, तुम लोग बैठ जाओ." बाबूजी ने कहा.

"अच्छा." कहते हुए उसने झुक कर अम्मा और बाबूजी के पैर छुए... पत्नी ने भी... और तीनों बर्थ पर आकर बैठ गए.

"पहुँच कर फोन करना." अम्मा कहीं भीतर तक भीग रही थीं... गीली-सी आवाज निकली उनके मुँह से.

"हाँ अम्मा." खिड़की से झाँकता हुआ वह बोला.

ट्रेन धीरे-धीरे प्लेटफॉर्म पर रेंगने लगी. दोनों ने खिड़की से हाथ निकाले... मोनू के भी छोटे-छोटे हाथ बाहर निकले. ट्रेन रफ्तार पकड़ने लगी. अम्मा और बाबूजी के हाथ भी ऊपर उठ गए . थोड़ी देर बाद प्लेटफहर्म सूना हो गया. विदा करने आए लोग लौटने लगे - अम्मा और बाबूजी भी...

"एकदम से ये बहू को क्यों लिवा ले गया?... अब तक तो ऐसा नहीं था?" अम्मा ने स्टेशन से बाहर निकलते हुए कहा.

बाबूजी चलते-चलते निमिष भर अम्मा को देखते हैं, कहते कुछ नहीं.

"छोटा था, तब कहता था- 'बुढ़ापे में तुम्हें अपने पास ही रखूँगा... तुम मेरे पास ही रहोगी अम्मा" ... लेकिन अब आया और चुपचाप मोनू और बहू को लेकर चला गया... एक बार भी नहीं पूछा कि "अम्मा तुम भी चलोगी क्या?" अम्मा सड़क पर चलती हुई कहती जा रही थीं. साथ ही धोती से आँसू पौंछती जा रही थीं. बाबूजी निरीह से कभी अम्मा को देख रहे थे... तो कभी सड़क पर चलती भीड़ को..

पवन शर्मा
जुन्नारदेव- ४८०५५१,
जिला- छिंदवाड़ा (म. प्र.)

प्यार की चाहत

सविता दिखने में बहुत सामान्य थी और उसके पति रवि हर प्रकार से आकर्षक। आई टी प्रोफेशनल होने के कारण व्यक्तित्व और वेतन, दोनों आकर्षक था। रवि के पास सबकुछ होने के बाद भी समय का अभाव था। रवि की दिनचर्या भाग-दौड़ की थी। परिवार को व्यक्तित्व और वेतन से अधिक समय की इच्छा होती है। रवि के इस जीवन से सविता ने अनुभव किया कि 'वह उसे प्यार नहीं करता। हो न हो, उसकी जिन्दगी में कोई और आ गयी हो?' २. यह सोचकर ही सविता काँप जाती।

सविता अथक पति की सेवा में लगी रहती। जैसे रवि की धड़कनों तक इच्छाओं को समझने लगी हो। किसी फिल्म से पता चला कि जूठा खाने-पिने से प्यार बढ़ता है। अब वह मग में भरकर चाय लाती। यह देख रवि झुँझलाता, सुनाता और अपनी इच्छा भर पीकर बाकी चाय छोड़ देता। समय पाकर सविता जैसे अपने ईश्वर का प्रसाद समझ कर पी लेती।

कई बार तो रवि पूरा पी जाता। तब सविता अपनी जिह्वा निकालकर देर तक मग लटकाये रहती और किसी तरह एक बूँद टपका ही लेती।

ऑफिस जाने की जल्दी में रवि ने चाय की दो-तीन चुस्की ली और वॉशरूम में चला गया। जब वहाँ निकला तो देखा कि सविता उसकी जूठन चाय पी रही है। कुछ समझ नहीं पाया। अब वह जब भी चाय पीता तो वॉशरूम जाता और हमेशा छुपकर देखता। सविता हमेशा उसकी जूठन पीती।

अब रवि ने हिदायत दे दिया कि मग में ही चाय मिलनी चाहिए और वह भी पूरी। अब उसे सविता का जूठन पीना समझ में आ गया था। समझ में आ गया था कि सविता चाहती क्या है।

२.. वही सिलसिला आज भी जारी है। रवि हमेशा ही आधी चाय पीता है और वॉशरूम जाता है और वहाँ से अपनी सविता को, उसके प्यार को देखता है।

केशव मोहन पाण्डेय
नई दिल्ली

आप मेरे तो हैं

कुछ अलग ही राह पर चल पड़ी थी गुंजन की जिंदगी। बहुत प्यार करती थी दीपक से। दीपक प्यार करता था अपनी मिट्टी से। भारत मां के आगे उसको कोई भी रिश्ता समझ नहीं आता था। बचपन से ही सपना था कि मैं देश की सेवा करूं। स्कूल मेथी फैंसी ड्रेस में हमेशा सिपाही बनने की ही जिद्द करता था।

दीपक जब बड़ा हुआ मिल्ट्री में गया। जब घर आता तो घ ारवाले शादी के लिए जिद्द करते थे ,और वह हमेशा मना करता रहता था।

जब छुट्टी पर दीपक घर आता ।तो गांव में रहने वाली गुंजन का दिल यह सुनकर धड़कने लगता था कि दीपक घर आया है दोनों एक स्कूल में जो पढ़ते थे। गुंजन उसको देखने के ना जाने कैसे-कैसे बहाने निकालती ।कभी सहेली के साथ गलियों में घूमना ,सुबह-सुबह सैर के बहाने खेतों की तरफ जाना ,जहां दीपक भी हर सुबह वर्जिश करता था। वह दीपक के प्रेम में सागर में बूंद की तरह मिट जाना चाहती थी।

जब दीपक को नौकरी पर वापस जाना होता ,तब गुंजन बहुत उदास हो जाती थी जैसे उसके जिस्म से कुछ निकल गया हो।

गुंजन भी बड़ी हो चुकी थी ।घर वाले शादी की बात करते थे।

एक दिन गुंजन ने अपनी मां से कहा कि शादी करूंगी तो दीपक से करूंगी ।वरना नहीं करूंगी।

गुंजन की मां ने यह बात गुंजन के पापा बतायी तो वह बहुत नाराज हुए ।तब गुंजन की मां ने कहा एक बार बात करने में क्या जाता है ।उनके घर कहलवा देते हैं। देखते हैं क्या जवाब आता है।गुंजन के पापा गांव के पंडित से बातचीत करके उनको दीपक के घ ार गुंजन का रिश्ता लेकर भेजा।

जब पंडित जी दीपक के घर पहुंचे। तो गांव के पंडित होने के कारण उनकी खूब खातिरदारी हुई। से पंडित जी ने गुंजन के रिश्ते की बात करी।

दीपक के घर वालों ने कहा कि पंडित जी लड़का तो शादी ही नहीं करना चाहता। अरे भाई साहब बच्चे कहां मानते हैं आप करेंगे तो सब ठीक हो जाएगा।

दीपक के घरवाले मान गए। गांव के माहौल में सब मां बाप ही तय कर देते हैं ।तो उन्होंने दीपक और गुंजन की कुंडली मिलवायी।

कुंडली मिलने पर दीपक के घर वालों ने बोला जब दीपक आएगा तब ही चटमंगनी और पट ब्याह कर देंगे।

गुंजन भी यह सब. सुनकर बहुत खुश थी ।अब तो दीपक का इंतजार करते समय ही नहीं कटता था । छः महीने बाद दीपक जब घर वापस आया ।तब दीपक के मां बाप ने दीपक से बात करी और गुंजन की फोटो दिखाई। दीपक ने फोटो देखें बगैर शादी करने से मना कर दिया। जाने कब बहृडर पर गोली लगे और मैं ना रहूं ।मुझे देश कीसेवा करनी है देश मेरी दुल्हन है।

घरवाले कहां सुनने वाले थे सब ने जिद्द करके दीपक की चटमंगनी और पटब्याह गुंजन से करवा दिया।

गुंजन शादी से बहुत खुश थी क्योंकि उसको आज मनचाहा वर मि. लने वाला था।

(गुंजन को यह नहीं पता था कि दीपक शादी नहीं करना चाहते हैं)

शादी हुई, ढोल बजे, डोली आई, लेकिन गुंजन अंदर ही अंदर इस बात से परेशान थी कि दीपक खुश नहीं लग रहे हैं। उनके चेहरे पर मुस्कुराहट नहीं है।

सुहागरात के समय दीपक कमरे में आए और गुंजन को अपनी सारी बात सुनायी। मैं शादी नहीं करना चाहता था पर जैसे सब ने शादी करवा दी।

गुंजन सन्न रह गई। आंखों में झील उतर आयी और छलक गयी।

दीपक जी हम आपसे कई सालों से प्यार करते हैं। हमको तो यह नहीं पता था कि आप शादी नहीं करना चाहते हैं ।पर अब तो हम आपकी ब्ह्याता हैं ।हम आपसे बहुत प्यार करते हैं जी।

नहीं गुंजन हम आपको कुछ नहीं दे पाएंगे ।यह सब हो तो गया पर हम चाहते नहीं थे।

यह बात सुनकर गुंजन पर जैसे पहाड़ टूट पड़ा हो। बिन बारिश के शब्दों की बौछार से वो भीग रही थी।

गुंजन खुद को संभाला।

अच्छा सभी यह तो मानते हैं ना कि अब हम आपके पत्नी है अब हम आपके हैं।

हां२...लेकिन हम तुमको कुछ नहीं दे पाएंगे हम देश की सेवा करना चाहते हैं बस।

ठीक है आप देश की सेवा करें। हम आपकी और आपके परिवार की सेवा तो कर सकते हैं ।इतना तो मानेंगे ना आप।

हां अगर यह भी तुम चाहो। अगर तुम अपनी इच्छा से कर सको। हम तुम्हें हर महीने तनख्वाह भेजते रहेंगे।

अच्छा सुनिए आप मुझे अपना दोस्त बनाएंगे। मेरी बातें सुनेंगे ना। आइए पास तो बैठिए।

दीपक गुंजन के पास पलंग पर जाकर बैठता है।

गुंजन फट से दीपक हाथ थाम लेती है। आज से हम दोस्त हैं। हम आपको स्कूल टाइम से ही बहुत प्यार करते हैं।

आप देश की रक्षा करें। हम आपके लिए भगवान से प्रार्थना करेंगे। आपकी और आपके परिवार की सेवा करेंगे।

कम से कम ‘‘आप मेरे तो हैं‘‘ बस इतना ही काफी है।

सौम्या दुआ
हल्द्वानी नैनीताल

गीत

देखा पहली बार प्रिये और पहले पहल निहारा है
पर पहचाना सा लगता हैं, जो भी संकेत तुम्हारा है।

एक बार जो हँस देती हो, पुलकित मैं हो जाता हूँ
जितनी थकन लिए बैठा था, पुनः नया हो जाता हूँ।
और तुम्हारी मुस्कानों से दिन ढ़लता उग जाता है
एक रुबाई हो जाती हो, गीत नया बन जाता है।
किसी मिलन की आशा में ठहरा प्रत्येक किनारा है
हाँ, पहचाना सा लगता हैं, जो भी संकेत तुम्हारा है।।

कनखी भर की नयी नवेली एक शरारत देखी है
सखी तुम्हें जब से देखा है खूब इनायत रहती है।
जबसे देखा यार उन्हें ये आँखें खोई-खोई है
खाली मन रहता है जबकि अंदर बैठा कोई है।
सुनो जरा इस मन के अंदर कौतूहल तुम्हारा है
हाँ, पहचाना सा लगता हैं, जो भी संकेत तुम्हारा है।।

हर सावन में फागुन-सा रंगों में डूबा मौसम है
एक नयन में सपन हैं उनके और दूजे में हमदम है।
जैसे चंदन महक रहा है फैले उनके आँचल में
कंगन उनके खनक रहे हैं - तब से बीते हर पल में।
मेरे चेहरे के दर्पण में   दिखता रूप तुम्हारा है
हाँ, पहचाना सा लगता हैं, जो भी संकेत तुम्हारा है।।

-आशीष मिश्रा
सॉफ्टवेयर आर्किटेक्ट, ब्रिटेन

गीत

भर रहा है समय प्राण में गीत को,
भूल कर वेदना साध संगीत को।
भोर का शीश है रेत के पाँव में ,
गंध सौंधी उड़े खेत में गाँव में।
खग सभी कोटरों से निकलने लगे,
खोल कर पँख वे फिर मचलने लगे।
फाँदने वे लगे दर्द की भीत को।।
भर रहा है समय प्राण में....

खेजड़ी के तले चाँद क्यूँ रुक गया।
ये गगन भी धरा की तरफ झुक गया
मंद सी पड़ गई साँझ की वात भी
केसरी-केसरी घुल रही रात भी
बात मन की कहो आज मन मीत को

ओस की बूँद जो पुष्प पर झर गई,
पाँखुरी-पाँखुरी नेह से भर गई।
लहलहाती हुई धान की बालियाँ,
झुंड में घूमती फिर रही तितलियाँ।
गुनगुनाती हुई प्रेम की रीत को।।

भर रहा है समय प्राण में गीत को...

तारीका बिछ गई रात के खाट पर
चाँद बैठा हुआ मेघ की टाट पर
साँवली-साँवली यामिनी बढ़ रही
सीढियाँ-सीढ़ियाँ व्योम पर चढ़ रही
लिख रही है दिशाएं सभी प्रीत को।
भर रहा है समय....

आशा पांडेय ओझा
उदयपुर राजस्थान

गजल

दीवारों से कान लगाकर बैठे हो
पहरे पर दरबान लगाकर बैठे हो

इससे ज़्यादा क्या बेचोगे दुनिया को
सारा तो सामान लगाकर बैठे हो

दुःख में डूबी आवाजें न सुन पाए
ऐसा भी क्या ध्यान लगाकर बैठे हो

बेच रहा हूँ मैं तो अपने कुछ सपने
तुम तो संविधान लगाकर बैठे हो

हमने तो गिन डाले हैं टूटे वादे
तुम केवल अनुमान लगाकर बैठे हो

अपने घर के दरवाजे की तखती पर
अपनी झूठी शान लगाकर बैठे हो

ख़ूब अँधेरे में डूबे इन लोगों से
सूरज का अरमान लगाकर बैठे हो

जूझ रही है कठिन सवालों से दुनिया
तुम अब भी आसान लगाकर बैठे हो

कितने अच्छे हो तुम अपने बाहर से
अच्छा-सा इंसान लगाकर बैठे हो

डॉ. राकेश जोशी
एसोसिएट प्रोफेसर (अंग्रेजी),
राजकीय महाविद्यालय, मजरा महादेव,
पौड़ी (गढ़वाल), उत्तराखंड

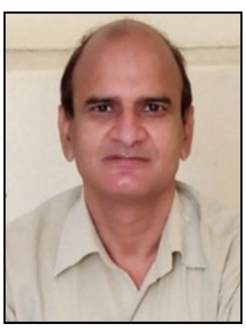

मुझे जिसने छाँव दी उम्र भर

मुझे जिसने
छाँव दी उम्र भर
वो पेड़ खोखला हो चला है
यकीनन
मगर वक़्त की
आँधी की मार से
तब बच के कहाँ जाऊँगी
मैं गमों की धूप में फिर
छाँव की आस लिये
कहाँ जाऊँगी
जड़ें
माना कमजोर हो चली हैं
हारी-थकी टहनियाँ
झुकने लगी हैं
ये देख
दुःख का भार बढ़ रहा है
साँस मेरी रुकने लगी है
सोच रही हूँ कि
ये पेड़
गर हवा के एक झोंके से
कहीं गिर जायेगा
ताऊम्र
जिसके साये में रही ''रूह''
ये सह न सकेगी तूफान
मन थपेड़ों की मार से
मर जायेगा
जिंदगी पूछ रही है
अब तुझसे
या-रब
जब दुख का सूरज
होगा सर पर
तब बिना उस शजर के
फिर कैसे कटेगा यह सफर.... ?

रश्मि विभा त्रिपाठी 'रिशू'

काकी और डायरी

आज काकी से मिल गया अकस्मात
करने लगा उनसे बीते दिनों की बात,
डायरी काकी की देखने लगा जब में
शायद उसमें लिखे थे कुछ जज़्बात ।

डायरी क्या बातों का खजाना थी
कुछ किस्से या यादों का तराना थी,
कुछ अपने हालात लिखे थे उसमें
उन प्यारी मुलाकातों की घराना थी ।

काकी बोली डायरी पढ़ना चाहते हो
पढ़ लो तुम भी तो इसका हिस्सा हो,
मेरे जीवन के अनमोल बीते पलों का
तुम भी तो प्यारा इक किस्सा हो ।

इक छोटा घोंसला बनाया था हमने
आशा, विश्वास से सजाया था हमने,
नए परिंदे उसमें जन्म ले आए थे
प्यार से जिन्हें फिर पाला था हमने ।

आए थे वो यहाँ कुछ पल के लिए
चहचहाए थे वो मधुर कल के लिए,
आँखों में नए सपने वो सँजोये थे
राह देख रहे नयी मंजिल के लिए ।

बढ़े होकर अब वो चल दिये हैं
पंखों में परवाज ले उड़ चले हैं,
अपने सपनों की उड़ान लेकर
नए घोंसलों का सृजन किए हैं ।

क्यों रुकते हैं केवल रात के लिए
मोह में बांधे दो पल के साथ के लिए,
रहते क्यों नहीं जीवन भर यहाँ
रुक के चल देते नव प्रभात के लिए ।

मानो यह भी तो इक घर था तेरा
काकी ने कब कहा कि ये दर है मेरा,
घर छोड़ चले हो घर बसाने को
परिवार छोड़ नया परिवार बनाने को ।

कुछ ऐसी ही कहानी है मेरी तेरी
सुबह की खोज में मिली रात अंधेरी,
कब तक मरीचिका में भटकेंगे
जिंदगी की कैसी है ये हेराफेरी ।

सोचता हूँ की लौट जाऊँ मैं घर को
चुन लूँ कुछ सपने जी लूँ बचपन को,
काकी के आँचल को अंबर बना कर
डायरी में लिख दूँ बीते लड़कपन को ।

काकी तब फिर न कभी उदास होगी
उसके मन में जीवन की आस होगी,
घर आँगन फिर से खिलखिलाएगा
परिंदों की जब वहाँ चहचहाहट होगी ।

मगर ये सब क्या हम अब कर पाएंगे
घर से निकले हैं क्या वापस हो पाएंगे,
हमने भी पाली हैं आज कई मजबूरियाँ
उन बंधनों को क्या हम तोड़ पाएंगे ।

नहीं जा सके गर हम वापस घर तो
कैसे खुश करें काकी के मन को,
काकी भी नजरें बिछाए बैठी दर पे
एक नया पन्ना डायरी में जोड़ने को ।

संजीव कुमार भटनागर
मुंबई महाराष्ट्र

प्रेम गीत के छंद लिखूँ

बंधन अनुपम प्रियतम तुमसे,
प्रेम गीत के छंद लिखूँ ।
तुमको मन का मीत लिखूँ,
या साँसों का अनुबंध लिखूँ ।

नयनों की चितवन सुन्दरतम,
भाव प्रेम का बरसे नूतन ।

वसुधा भीगी इस रिमझिम से ,
पुष्प पल्लवित उपवन- उपवन
तुमको कोई गजल लिखूँ
या विस्तृत भाव निबंध लिखूँ ।

मन की देहरी अक्षत कुमकुम,
महका जैसे चन्दन- चन्दन ।
“दीप” प्रकाशित तुलसी पावन,
और रंगोली सजती आँगन ।
तुमको कोई रंग लिखूँ या
खिला फूल मकरंद लिखूँ ।

चांदनी शीतल उजला मधुवन,
प्रेम है मन का पावन बंधन
वसुंधरा मिल रही गगन से ,
और कर रही शत-शत वंदन
तुमको कोई बाग लिखूं या
व्यापक मंद सुगंध लिखूँ ।

डॉ.दीप्ति गौड़ ‘दीप’
ग्वालियर (म.प्र.) भारत

विरहणी का विरह

तुम क्या गए,हम बिन प्राण रह गए।
जाते देखा तुमको,फिर भी रोक ना पाए।।

जिंदगी जीती तो नही बस कटती है तेरे बिन।
तुम चार कंधो पर गए पिय।
हम बिन पानी तड़पते रहे ।।

करे भी क्या इस जीवन का
अब नही कोई मोल रहा।
तेरे संग सब रंग ,अब हर रंग बिन मोल गया।।

जिंदगी की लड़ाई हर हाल में लड़नी है।
साथ मे होते तुम, बात चाँद संग तारे होती।
आज अमावस की रात पिय,सुबह अब निराली है।
आता सूरज किरण संग,उम्र अब नही बाली है।।

तेरे संग संग चला गया सब,मन अब खाली है।।
तुम क्या गए प्रिय हम मीन बन तड़पते है।।
आँखों अश्रुधार नही,समंदर सब खारे लगते है।।
तुम क्या गए प्रिय हम बिन प्राण रह गए।।

डॉ मोनिका देवी

गजल

स्वप्न है परिदृश्य बदले प्रेम ही आधार हो
मिट सकें ये दूरियां आशा भरा उद्गार हो

शोषितों को वंचितों को हक मिलें उनके सभी
हर दिशा में हर विधा में उनका भी अधिकार हो

हाशिये पर जो खड़े हैं मन में कड़वाहट लिए
उनको हो मुखपृष्ठ हासिल उनका भी उद्धार हो

न्याय के गलियारे में मत बैठो पट्टी बाँधकर
झूठ के पर्दे हटें सच्चाई का विस्तार हो

पिस रही घर और दफ्तर में जो चक्की सी सदा
ऐसी नारी जाति का सम्मान हो श्रृंगार हो

डॉ0 आरती कुमारी
मुजफ्फरपुर, बिहार
मो–८०८४५०५५०५

श्रमिक

जेठ की तपती दुपहरी
पूस की बर्फीली रातें
कोई भी मौसम होता
श्रमिक कभी नहीं सोता

हाड़तोड़ करता परिश्रम
न शिकायत न कोई गम
सन्तोषी रहता सदा ही
राम जप कहता सदा ही

ईमान का पक्का श्रमिक
इरादों से डिगे न तनिक
काम कैसा भी हो कठिन
उत्साह नहीं होता मलिन

तन से निकला जो पसीना
धरती उगले उससे सोना
उपजाऊ बनाता कभी वह
ठोकता मंजिल कभी वह

डॉ0निर्मला शर्मा
दौसा राजस्थान

भ्रष्टाचार और राजनीति अब तो छोड़ो

भ्रष्टाचार दुनिया में पहली एक ऐसी बीमारी है जिसका कोई इलाज ढूंढा नहीं जा सका। आज तक नहीं.. कितने नेता आए और गए भ्रष्टाचार खत्म करने का पाठ पढ़ा कर लेकिन रिजल्ट आज भी शुन्य। हालांकि ९ दिसंबर को अंतरराष्ट्रीय भ्रष्टाचार विरोधी दिवस मनाया जाता है। भ्रष्टाचार के खिलाफ दुनिया ने एकजुट होने का फैसला किया लेकिन आज भी किसी को मिला कुछ भी नहीं। भ्रष्टाचार आज भी सब को लील रहा है। आज भी हर देश की यह समस्या बनी हुई है।

आज भ्रष्टाचार और राजनीति की बात आखिर क्यों? इसलिए क्योंकि आज दुनिया महामारी से जूझ रहा वहीं भ्रष्टाचार और राजनीति मुंह फाड़े खड़ी है। मौका का फायदा उठाने को। कैसे और कब?इस महामारी में भी हर पल को वो लपक लेना चाहते हैं जिससे उन्हें फायदा पहुंच सके। महामारी से लोगों की जान जा रही कितने घर बर्बाद हो चुके लेकिन राजनीति खत्म नहीं हो रही। कुर्सियों की लड़ाई कहां खत्म होने वाली आम लोगों से उन्हें क्या बस कुर्सी मिल जाए।

''सत्ता हाथ आते ही वही राग अलपाना है
भ्रष्टाचार मिटाना है, भ्रष्टाचार मिटाना है''

लेकिन भ्रष्टाचार की आड़ में ही यह कुर्सियों का खेल चलता रहता है और होता वही है ''ढाक के तीन पात''। महामारी में भी राजनीति और भ्रष्टाचार पूरे जोर पर है। दवाइयों की कालाबाजारी से लेकर खाने-पीने के सामानों तक में भ्रष्टाचार और राजनीति हो रही है। जिसमें लोग बाज नहीं आ रहे भ्रष्टाचार का मतलब ही है ''भ्रष्ट'' मतलब ''बिगड़ा'' ''आचार'' मतलब ''व्यवहार'', ''आचरण'' और आज कई लोग यह साबित भी कर रहे हैं कि वह भ्रष्टाचार में पूरी तरह लिप्त है। भले दुनिया इधर की उधर हो जाए लोग मरते जाए कई घर बर्बाद होते रहे लेकिन भ्रष्टाचार रुकने वाली नहीं। भ्रष्टाचार के कई रूप हैं दवाइयों की कालाबाजारी से लेकर टैक्स चोरी से लेकर खाने-पीने के सामान से लेकर यह हर जगह है लेकिन दया भावना, करुणा इनमें कहीं भी नहीं। महामारी में दवाइयों की कालाबाजारी चरम सीमा पर है। लोग अपने लाभ के लिए राजनीति से बाज नहीं आ रहे हैं। देश आज जिस महामारी से गुजर रहा बस धैर्य और सहयोग की जरूरत है ना कि भ्रष्टाचारियों और राजनीति करने वालों की।देश आज इस कठिन परिस्थितियों से गुजर रहा एक दूसरे को सहयोग करें दूरी रखें लेकिन शरीर से दिलों से नहीं। राजनीति करें दिलों से दिलों को मिलाने की, एक दूसरे को सहायता पहुंचाने की ना कि भ्रष्टाचारियों के साथ मिलकर अपने ईमान को गिराने की। यह वक्त है संभल जाओ नहीं तो शायद इससे भी बुरी स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। भ्रष्टाचार और गलत राजनीति छोड़ो अब भी समय है समझो। कदम से कदम मिलाकर सही रास्ते पर चलो।युवाओं को एक सुंदर समाज देने की सोचो।

''महामारी से सबक लो अब भी वक्त है सभंल लो''।

निक्की शर्मा रश्मि
मुंबई

मेहबूबा

'चलिए, जल्दी कीजिए, गाड़ी का समय हो गया है। आपका सामान चेक करके चढ़ना। वापिस लौटकर आना मिले भी या नहीं भी।गाँव के जो भी लोग मिले उसे यह बता देना।' कहते हुए स्टेशन मास्टर रेल के स्टेशन पर दौड़ रहे थे। हिंदुस्तान से पाकिस्तान ट्रेन जा रही थीं।ये बात है १९४८ के अगस्त माह की, जब भारत दो टूकडों में बँट रहा था।

हिंदुस्तान और पातिस्तान के बीच रेखांकन करनेवाले ने दोनों देश की भौगोलिक स्थिति को बिना जाने ही रेखा खींच दी थीं। यह बात उस गाँव की है जो आधा-आधा बँटा था पाकिस्तान और हिंदुस्तान में। गाँव के सब लोग मिलजुलकर, संप से रहते थे, जातिवाद की बात तो ठीक है पर गाँव के लोग इतने अच्छे थे कि कह रहे थे, मन से रंज कर रहे थे कि अंग्रेज देश छोड़कर क्यों जा रहे है!

सर्वत के अब्बा ने सर्वत को आधे घंटे में सारा सामान जुटाने को कहा था, और खुद जहाँ काम करते थे वहाँ हिसाब करने चले गये थे। सर्वत और उसकी अम्मी ने जो था सब जैसे-तैसे इकठ्ठा कर लिया था।

'चलो जल्दी से स्टेशन पर। यह अंतिम ट्रेन है। सामान छूट भी जायेगा तो चलेगा परंतु जान बची तो लाखो पाये, अल्लाह का शुक्रिया। वहाँ जाकर करेंगे क्या? काम मिल जाए तो बहुत ही अच्छा।'

'अब्बा, झरीना' 'बेटा उसके पिता ने तो हिंदुस्तान में रहना तय किया है। उसकी मां हमारी जातवाली पर बापु तो नहीं है। हमारा यहाँ रहना जितना जोखिमकारक है उतना ही उन लोगों का हमारे साथ आना।'

'परंतु हमारे निकाह का क्या? परसो ही तो है। उसके हाथ में भी मेहंदी लग चुकी है। अब्बु, हम साथ-साथ में तो बड़े हुए हैं। उसकी मां की मृत्यु के बाद अम्मी ने ही तो उसे सहारा दिया है। वह एकदम से अकेली हो जाएगी।' अधिक सोच मत, बेटा। अब तो उसके घर की ओर देखना भी मत, बेटा। देश की परिस्थिति बदल चुकी है। अब तो तुं ही हमारे जीवन का केवल एक आधार हो। तेरी सुरक्षा और सल. ामती हेतु हम इस प्यारे हिंदुस्तान को छोड़ने के लिए तैयार हुए हैं।

अब्बा, मैं झरीना को मिल आऊँ? वह मेरी बाट देख रही होगी। कहते हुए बिना उत्तर की राह देखें सर्वत दौड़ा झरीना को मिलनें हररोजवाले स्थान पर।

शादी के लिए लिया हुआ सोने- सा पीला ड्रेस और अम्मी ने शादी के लिए हुए गहनों से सज्ज झरीना उसकी राह देखती हुई खड़ी थी। धीरे चहल कदमी करते हुए आगे आयी और सर्वत की हाँफती हुई छाती पर अपना सर डाल दिया।

निःशब्द साँस की भाषा, 'ऐसे ही तैयार रहना, मैं लेने आऊँगा। हाथ की मेहंदी सुखने मत देना'।

ट्रेन की सीटी बजी। सर्वत दौड़ा। झरीना की विरुद्ध दिशा में! किसी ने तो देखा होगा सर्वत की राह तके खड़ी झरीना को!

डॉ.नयना डेलीवाला

मेरी दुनिया माँ का आँचल

मुझे कहीं सच में मिल जायें, अगर कहीं भगवान।
और कहें यदि माँगो मुझसे, तुम कोई वरदान ।

अच्छे कपड़े और खिलौने, जो भी चाहो ले लो ।
गड्डे गुड़िया कार प्लेन ले, उनके सँग मे खेलो ।

या फिर जो अच्छी लगती हो, माँग मिठाई खाओ।
सोच समझ लो ठंडे मन से, जो माँगो सो पाओ ।

या फिर ले लो पँख सुनहले, पंछी बन उड़ जाओ।
या फिर तितली के पर ले लो, फूल- फूल इतराओ।

सूरज चंदा तारे ले लो, धवल चाँदनी प्यारी ।
जो भी माँगो पूरी होगी, इक्षा आज तुम्हारी ।

हाथ जोड़ कर करूँ प्रार्थना, विनती सुनो हमारी।
सारी दुनिया में सच मुझको, माँ है सबसे प्यारी ।

एक तरफ हैं सूरज चंदा, धरती अम्बर बादल ।
सिर पर मेरे तना रहे प्रभु, मेरी माँ का आँचल ।

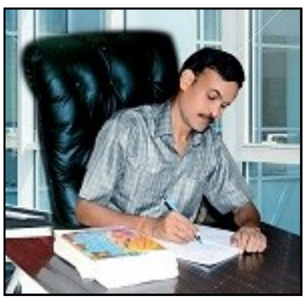

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'
रावगंज, कालपी, जालौन
उ प्र- २८५२०४
८८३६०१०६२३

दोहे : कठिन बड़े हालात

गली-मुहल्ले चुप सभी, घर-दरवाजे बंद।
कोरोना का भूत ही, घूम रहा स्वच्छंद।।

लावारिश लाशें कहीं, और कहीं ताबूत।
भीषण महाविनाश के, बिखरे पड़े सबूत।।

पड़े हांफते सड़क पर, समृध्दि और विकास।
दुनिया को घेरे खड़े, शोक और संत्रास।।

महानगर या शहर हो, कस्बा हो या गांव।
कोरोना के कोप से, ठिठके सबके पांव।।

चीख-चीखकर आंकड़े, करते यही बखान।
मानव के अस्तित्व पर, भारी पड़ा वुहान।।

उड़ते थे आकाश में, करते थे उत्पात।
कोरोना ने दी बता, उन सबकी औकात।।

साधन कम, खतरे बहुत, कठिन बड़े हालात।
देवपुत्र फिर भी जुटे, सेवा में दिन-रात।।

आस-पास सारे रहें, लगते फिर भी दूर।
पल में घर-परिवार के, बदल गए दस्तूर।।

कोरोना के दौर में, पुनः हुआ यह सिद्ध।
संकट में भी नोंचते, मानवता को गिद्ध।।

कोविड का प्रकोप कहीं, कहीं युद्ध का शोर।
साक्षी बना विनाश का, यह उन्मादी दौर।।

कल तक हम उन्नीस थे, आज बने हैं बीस।
कोरोना के बाद हम, फिर होंगे इक्कीस।।

-डॉ रामनिवास 'मानव'
५७१, सेक्टर-१, पार्ट-२,
नारनौल-१२३००१ (हरि)
मोबाइल : ८० ५३५४ ५६३२

वंदेमातरम

वंदेमातरम.... पुकारती माँ भारती
विगुल अखण्ड हिंद का बजा रही माँ भारती

बढ़े चलो बढ़े चलो रुकें नहीं बढ़े कदम
रणबाँकुरे रण में चले चरण माँ पखारती

वंदेमातरम ..... पुकारती माँ भारती

दिशा दिगंत गूँज रहे गगन को हैं चूम रहे
त्रिलोकी का सिंहासन हिला शत्रु को ललकारती

वंदेमातरम..... पुकारती माँ भारती

सूर्य सा प्रचण्ड तेज धैर्यता वसुंधरा सम
भाल उच्च तिलक दिव्य श्रद्धा सुमन वारती

वंदेमातरम .... पुकारती माँ भारती

बन काल आज टूट पड़ो दुंदभि बजा रही
सँहार कर माँ शत्रु का प्रलय की शाल डालती

वंदेमातरम....... पुकारती माँ भारती

डॉ दीपा संजय दीप
बरेली उत्तर प्रदेश

भारी बस्ता

नहीं जाना मुझको स्कूल
भारी ये बस्ता करता चूर
इससे मुझको दर्द है होता
पढ़ते-पढ़ते बचपन खोता

माँ मुझको है तुझसे पढ़ना
खेल-खेल में ज्ञान सीखना
स्कूल से मेरा नाम कटा दो
बस्ते भारी से पीछा छुड़ा दो

बातें ये सुनकर माँ मुस्काई
प्यार से उसको चपत लगाई
अगर इसे तुम समझे बोझ
बन जाओगे अनपढ़ ढोर ।।

सुश्री इंदु सिंह 'इन्दुश्री'
स्वतंत्र लेखिका व विचारक
नरसिंहपुर (म.प्र.)

साधुत्व का संदेश देता काव्य संग्रह 'बैन फकीरा'

लोकजीवन में रचा-बसा एक पंथ है ,जिसे 'अघोर पंथ' के नाम से जाना जाता है । जिसका लोग सम्मान भीकरते हैं और उससे डरते भी हैं। अघोर पंथ के लोग निर्गुण पंथ को मानते हैं। तात्पर्य यह कि अघोरी कण-कण में ईश्वर की अनुभूति करते हैं। भय, रोग, सांसारिक मोह-माया से अलग मानवता के लिए अपनी जिंदगी को न्योछावर करने वाला पंथ है 'अघोर पंथ'। इस पंथ में तीन सा खाओं का होना माना जाता है - (१) औघर, (२) सरभंगी तथा (३) घ ुरे । सबसे कठोर साधना 'अघोर' साधना को माना जाता है । यह साधना गुरु के बिना संभव नहीं हो पाती है । इस पंथ के साधु लोग गुरु को भगवान के रूप में मानते हैं और उनकी इच्छा के बिना कुछ भी नहीं करते हैं। अघोर पंथ का इतिहास बहुत पुराना है । अघोर का तात्पर्य होता है, न. घोर, मतलब की जो घोर न हो और सौम्य हो। इस पंथ का प्रवर्तक 'अघोरनाथ शिव' को माना जाता है । इस पंथ को मानने वाले योगी भेद,भय और घृणा को जीत कर शिव स्वरूप हो जाते हैं । यही शिवत्व उन योगी लोगों की मस्ती और तेज का श्रोत होता है। शिव को लोक का ईश्वर कहा जाता है , इसी से उनका अनुकरण करने वाले अघोरी साधु लोगों के लिए लोक हित पहले होता है।अघोरी साधुओं के यश गान से भरा काव्य संग्रह है 'बैन फकीरा' और 'बैन फकीरा' काव्य संग्रह को रचने वाले जीते-जागते, बोलते-बतियाते, सबके दुख से दुखी और दूसरे के सु ख में आपन सुख महसूस करने वाले लोककवि पं. हरिराम द्विवेदी जी हैं।कई पीढ़ियों के हरि भइया माने 'बाबूजी' या गीत पुरुष कवि श्रेष्ठ पं. हरिराम द्विवेदी जी के इस संग्रह में कुल ५१ कवितायें हैं।

अघोर दर्शन के विचार और उसकी जिंदगी जीने का सिद्ध ांत की झलक संग्रह की पहिली रचना से सामने आना शुरू हो जाता है -

'हँसि-हँसि बोलै बैन फकीरा
जग में ऊ प्राणी बड़भागी जे जानै परजन की पीरा
हँसि-हँसि बोलै... ।'

संसार को मोह-माया का समुद्र माना जाता है ,जो भी इसमे प्रवेश करता है, उसका भींग जाना निश्चित ही है । लेकिन अघोरी सन्यासी इन सभी मोह-माया और सांसारिक प्रपंचों से बिलकुल अलग होते हैं। मोह-माया उन लोगों को छू भी नहीं पाती है। लोककवि के इस रचना से समझा जा सकता है -

''पुरइन पात नीयर मन जेकर ओके परसि न पावे लछमिनियाँ
घोर अघोर नेह रस घोरै पियै पियासिया बुतावै लछमिनियाँ

सबही के नचिया नचावै लछमिनियाँ॥''

इस संग्रह की कई रचनायें ऐसी हैं जो नीति पूर्ण और सूक्ति के जैसी बन पड़ी हैं। जिसे देश और समाज के संदर्भ के सापेक्ष देखा जाय तो वे सार्थक संदेश देती दिखाई पड़ती हैं। आप भी देखिये-

''जे न करी परवाह केहू कै ओकर के परवाह करी ?
जे निरबाह न जानैओकरे संगे के निरबाह करी ?''

अघोर का अर्थ है जो घोर न हो। तात्पर्य यह कि जो सहज और सरल हो, वही अघोरी होता है। छोटे बच्चे सहज और सरल होते हैं लेकिन जैसे-जैसे बड़े होते जाते हैं उनके अंदर से इस गुण का लोप होता जाता है। सहज और सरल होना बहुत कठिन होता है, यही अघोर साधना है। दूसरे शब्दों में कहें तो अघोर साधना को सबसे कठिन साधना कहना उचित लगता है। यह साधना श्मशान में की जाती है, जहाँ आम लोग जाना भी पसंद नहीं करते। इस साधना में तीन साधना होती हैं, शव साधना, शिव साधना और श्मशान साधना। तीनों को साधना अत्यंत दुरूह होता है। इसी से कहा जाता है कि इस साधना के लिए धैर्य और बिस्वास के साथ सहन शक्ति का होना बहुत जरूरी है। साधक तो बहुत लोग

हो सकते हैं लेकिन अघोरी साधक अत्यंत विरल होते हैं। इस पंथ का साधक पीछे हटाना नहीं पसंद करता। एक बार जो ठान लेता है उसे पूरा करने के बाद ही शांत होता है। इसी से अघोरी साधु हठी मानेजाते हैं। लोक कवि पं हरिराम द्विवेदी जी भी अपनी रचना में यही कह भी रहे हैं -

''जेकरे मन विसवास बसैला ओके उहै पचावै
सहन शक्ति जेकरे में नाही ओके दिहल न जावै
बीज मंत्र अवधूत बतावै।''

काव्य संग्रह बैन फकीरा में लोक कवि समय के बदलाव को रेखांकित करते हुये कहते हैं कि युग के बदलाव से लोगों के चाल-चलन में कोई अंतर नहीं आया है।

''जुग बदलल नाही बदलल चलनियाँ
एनकर ओनकर तोर मोर में बीत गइल जिनगनियाँ
जुग बदलल नाही बदलल चलनियाँ।''

दया, करुणा, मान, सम्मान,त्याग,तपस्या,नीयम और संयम जैसी बातें अघोर पंथ का गुण मानी जाती हैं । इन सभी पर लोककवि की लेखनी खूब चली भी है । बनारस में अघोरेश्वर कीनाराम बाबा का आश्रम भी है , जिससे द्विवेदी जी सुपरिचित हैं और उन लोगों का सानिध्य भी उन्हे मिला है। इसीलिए वे अघोरी साधु लोगों के सभी गुणों से परिचित भी हैं। आप भी देखिये -

''अकथ कथा असहस लोगन कै कोटि कहै पर नाहि ओराई
पंथ अघोर कबों ना अइसन अधम परानी के अपनाई
जे ना जानै पीर पराई।''

अघोरी साधु लोगों की जिंदगी को ध्यान से देखा जाय तो यह स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि वे लोग अपने गुरु और शिव शक्ति के प्रति अगाध अनुराग रखते हैं । और अघोरी लोग संसार के कण-कण में अपने गुरुदेव और शिव शक्ति के बिम्ब को देखते हैं। संभवतः यही कारण है कि इस काव्य संग्रह में गुरु की महिमा को बखूबी बताया गया है।

''जेकरी छांह आगम सुख बरसै महिमा बरनी न जाई
आगम अघोर अगोचर गुरु की अम्बर सी ऊँचाई
गुरु बिन ज्ञान मिलै नाही भाई।''

अघोर साधना भक्ति के निर्गुण रूप को मानती है। इसी से कण-कण में शिव-शक्ति को महसूस करते हैं। महल और श्मशान में कोई भेद नहीं करते। दोनों को बराबर समझते हैं। निर्गुण धारा में सब कुछ बिम्ब के सहारे से कहा जाता है । आत्मा को स्त्री और ईश के पुरुष मानते हुये यहाँ भी कहा गया है।

''सरकि गइल दिन धीरे धीरे तनिकों नाही बुझायल रे
गोरी गवने कै दिन नियरायल रे।''

लोककवि लोकरंजन और लोकमंगल की कामना लेकर अपना सृजन करता है। अघोर पंथ के मूल में लोक कल्याण का भाव होता है,यह किसी से छिपा नहीं है । पं हरिराम द्विवेदी अघोर पंथ की महिमा को इसी से बर्णित किए हैं और उसे अपनी गीत और कविता के माध्यम से सभी के समक्ष रखा है। अघोर दर्शन और उसके स्वभाव के बारे में बताते हुवे भक्ति की गंगा बहाई है । हमारा विश्वास है कि ऐसी कृति से लोगों के मन से अघोरी साधु लोगों के प्रति जो डर होता है , वह दूर होगा और उनके प्रति सम्मान बढ़ेगा, साथ ही अघोर पंथ के सम्मान में यह एक गढ़े हुए मोती के सदृश होगा। इसी शुभकामना के साथ कवि की इस कृति को मेरा नमन । "बैन फकीरा " अब पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है , उम्मीद करता हूँ कि पाठक गण इससे लाभान्वित अवश्य होंगे।

किताब- बैन फकीरा
कवि- **पं. हरिराम द्विवेदी**
मूल्य- १००/-
प्रकाशन- पिलग्रीम्स प्रकाशन, वाराणसी

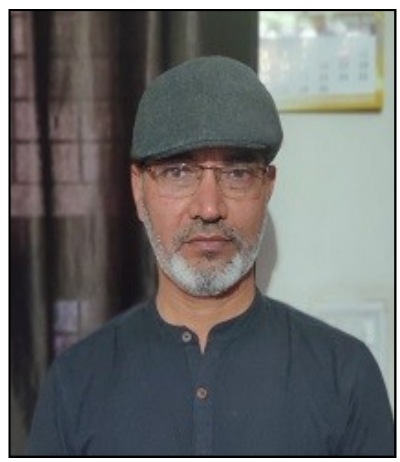

- **जयशंकर प्रसाद द्विवेदी**
संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

बेटियाँ

गुस्सा करता हूँ तो,
खामोशी से सिमट जातीं हैं
प्यार करता हूँ तो ,
बाँहों में लिपट जातीं हैं ।

बेटियाँ हैं तो देखकर ही ,
वो समझ जातीं हैं
पूरे घर का ख्याल,
कितनीं शिद्दत से करतीं हैं ।

मासूमियत भरी नजरें,
अपनों के लिए वो रखतीं हैं
और अपनीं पर आ जाएँ तो,
झाँसी की रानी बन जातीं हैं ।

अपने छोटे बड़ों का खयाल,
वो खूब करतीं हैं
एक अजब सा सुकून ,
दिल को दे ही जातीं हैं ।

फिर भी बेटियाँ दूसरों की,
मेहमान समझी जातीं हैं
और अपने ही घर में,
बेगानी सी समझी जातीं हैं ।

जब तक वो रहतीं हैं,
आँगन की खुशियाँ बनीं रहतीं हैं
रिश्तों में दिलों की दूरियों को,
हर दम मिटाया करतीं हैं ।

घर छोटा हो या बड़ा ,
सब निभा लेतीं हैं
सबके दिए दर्दों को भी,
बेहिसाब सह लेतीं हैं ।

कमलेश संजीदा
गाजियाबाद

माँ आपके लिये

जानती हूँ तब से माँ,
जब नहीं जन्मी थी मै
कल्पना हूँ आपकी,
प्यार से पनपी हूँ मै
नर्म सा स्पर्श आपका
बन गया है दिल मेरा
छाया हूँ मै आपकी
साया मेरा आप घना
जानती हूँ तब से माँ, जब नही जन्मी थी मैं

थी कठिन राहें बहुत पर
साथ हर पल थी मेरे
डगमगाए जब कदम
हाथ थामा आपने
जिंदगी की मुश्किलों में
धैर्य और साहस है आप
जानती हूँ तब से माँ, जब नहीं जन्मी थी मै

सीखा ताना प्यार का
मैने बुनना आपसे
प्यार में है त्याग भी
पाना ही है सब कुछ नही
प्यार का हर एक शब्द
मैने सीखा आपसे
जानती हूँ तब से माँ, जब नहीं जन्मी थी मै

बरसे खुशियां आप पर,
भीगे मेरा मन सदा
आंचलों मे छुप के मैं,
फिर करू अठखेलियाँ
घुल गयी साँसों मे यूँ,
मेरी धड़कन की तरह
जानती हूँ तब से माँ, जब नही जन्मी थी मैं

जो दिया है आपने
क्या मैं दे सकती भला
प्यार से है गुथी जिन्दगी
प्यार ही बांटा सदा
प्यार से बनी मेरी माँ
प्यार ही देती सदा
जानती हूँ तब से माँ,
जब नही जन्मी थी मैं

डॉ शिप्रा शिल्पी
कोलोन, जर्मनी

अकस्मात

हाथ पर है हाथ लेकिन बस नही है।
दूर बैठा कौन हमको दल रहा है
कौन रूक जाए अभी जो चल रहा है
कौन खिल जाए हमें अनुमान क्या है
कौन मुरझाए किसी को भान क्या है
किसकी चादर पूरे तन को ओढ़ लेगी
किसका तन चादर को ही कब छोड़ देगी
किसका कब पुरूषार्थ उग जाए क्षितिज में
और पताका किसका गिर जाए अतल में
कौन जाने बोलना कब मूक होगा
क्या पता होते सुलभ में चूक होगा
क्या पता ए प्रात होगी अरुणिमा भी
और ओझल पल में होगी लालिमा भी
कौन बतलाए कि ए कब तक रहेगा
एक दिन में पूर्वा पछया कब बहेगा
कौन जाने गोद सुनी कब भरेगी
कौन माने गोद सुनी ही रहेगी
क्या पता कि इन छतो का ठौर ही क्या
घर बना बेघर विवशता और ही क्या
क्या पता कि हसता ही रोने लगेगा
कौन जाने लाश कंधा बाप का ढोने लगेगा
क्या पता कब आंचलो में चिर होगा
क्या पता कि शोर एक दिन थिर होगा
कौन जाने कब विवशता श्रृंग पर हो
कौन जाने कब सहजता तुंग पर हो
किसका उड़ता तिर किसमे आन जाए
किसका होगा जन्म किसकी प्राण जाए
कौन पछताने को कब तैयार होगा
कौन वैतरणी समय से पार होगा
कौन जाने बाप से बेटा चला है
कौन माने पुत का जेता चला है
किसकी कब फरियाद बस फरियाद होगी
किसपे चाबुक पहले किसपे बाद होगी
किसका होना आर्य का परताप होगा
किसका जाना वंश का अभिशाप होगा
कौन जाने हमको मिलवाया है किसने
किस समय तक के लिए लाया है किसने
किसने हमको बोलने का हम दिया है
किसने उसको ज्यादा हमको कम दिया है
कौन जाने आया कब जाना पड़ेगा
किसके पछतावे पे पछताना पड़ेगा
कौन पल भर में मिलेगा जोड़ लेगा
कौन खिलती क्यारियों को तोड़ देगा
कौन है जो खुद बना के खुद बिगाड़े
कौन हस्ती को डुबाए खुद उबारे
कौन दरिया को बनाया नाव को भी
कौन सर को ताज जुते पांव को भी
क्या मिला उसको बना के सृष्टि अपनी
क्या मजा जो फेर लेता दृष्टि अपनी
कौन है जो दे खुशी लाचार करता
कौन सांचा आधा ही तैयार करता
कैसा है गोया मदारी गुप्त है क्या
हर खुशी से जल रहा है क्षुब्ध है क्या
क्या मिला है हमको अपनो से बुलाकर
डालियो से रूप का दीपक हटाकर
कौन है जो सुनता ना आवाज मेरा
कौन है जो जानता सब राज मेरा
कौन हो? बोलो भला खामोश क्यूं हो
हो भला तो भ्रम लिए आगोश क्यूं हो
क्यू भला मेरी व्यथा डसती नही है
क्यू भला टिकती कोई हस्ती नही है
क्या भला मै वेदना का भार हूं क्या
तेरा हूं प्रायोज्य पर लाचार हूं क्या
कब भला परमार्थ तेरा साथ होगा
कब चराचर की समीक्षा ज्ञात होगा
कौन किससे पूछेगा विश्वास करके
कौन जिन्दा ही बचेगा आस करके
थक गया सब प्रश्न लेकिन आज भी तुम
बोलना तो दूर टस से मस नही है ।।
हाथ पर है हाथ लेकिन बस नही है। ।

सन्नी भारद्वाज
कैमूर, बिहार

काश .. कोरोना हो जाए

काश .. कोरोना हो जाए
काश.. कोरोना हो जाए उनको
जो तेरे मेरे दरमियाँ
पसर जाती हैं तल्खियाँ...
वो तमाम दूरियाँ जो हमने बिछा ली हैं
दूर जाने की कसमें जो हमने खाली हैं
घेरे रहती हैं हमारे रिश्ते को
जो टूटन, तड़पन, छटपटाहटें लिबास की तरह
काश .. कोरोना हो जाए उनको

मेरा वो अहम जो चूक जाता है
तुम्हारे मन की नर्म छुअन को महसूसने से
मेरी वो शिकायतें सारी, जो अक्सर
तुम्हारी मुहब्बतों की गहराई छूने से पहले
उबल पड़ती हैं गर्म दूध सी।
तुम्हारी वो तमाम नासमझियां, तमाम नादानियाँ
जो भटका देती हैं रिश्ते को अपनी राह से
काश .. कोरोना हो जाए उनको

काश करोनबन्दी में, बंद कर दूँ मैं ये सोचना
कि झुका दूँगा तुमको एक दिन
तुम भी आराम दो अपने तंग नजरिए को
खुश होता है जो मेरी सोच को घायल करके
सोचो कि कोरोना में विदा हो जाएं अगर हम दुनिया से
खामोशी से किसी बंद कमरे में
तो कितने मलाल, कितनी ख्वाहिशें
साथ चलने की, बात करने की
अपनी सुनाने की तुम्हारी सुनने की
दफन हो जाएंगी हमेशा के लिए।
फिर किसी जन्म में मिलें ना मिलें
फिर करीबियों के फूल खिले ना खिलें
भले ही तुम में, मुझ में कुछ खामियाँ भी हैं
मगर जिसको ढूँढता है दिल हम वो हमजबां भी हैं
तो आओ दुआ मांगे कि
काश ... कोरोना हो जाए
काश .. कोरोना हो जाए उनको
जो तेरे मेरे दरमियाँ
पसर जाती हैं तल्खियाँ

• **रवि यादव 'रवि'**
अभिनेता/ कवि/ फिल्म निर्माता
मुंबई, भारत

डरी हुई है कविता

तन-मन को छलनी कर
संस्कारों का ढोंग ओढ़ाकर
परम्परा के मानडंडों में
इस कदर रम जाते हैं कि
अबला की सिसकियों के स्वर
दुष्कर्म और हैवानियत का
नंगा नाच हमें दिखाई नहीं देता
प्रायः हम भूल ही जाते हैं
अपना कर्तव्य

संवेदनाओं की मृत-भूमि पर
क्रूरताओं के पुजारी
करते हैं अट्टहास
आसमान छूते दाम
झूठे आश्वासन, भ्रष्टाचार
कर्ज के बोझ से
खुदकुशी करता
किसान
शहर-गाँव, गली-गली
अभद्रता-अश्लीलता
साँसे तोड़ता ईमान
अमर्यादित भाषा-व्ययवहार
निर्दयताओं से टकराती
कविता डरी हुई है

चीत्कार करती कहती है
कवि की आत्मा-
मानव के अंतस का सूरज
कब उगलेगा आग
कुर्सी से चिपका धृतराष्ट्र
कब तक करता रहेगा
कुछ नहीं दिखने का नाटक
कब तक महसूस करेंगे गन्ध
जलती देहों की
अंतर्मन में सुलग रही आग
जला कर राख करदे
क्रूरताओं के इन पुजारियों को
जो खुद इंसान होकर
इंसानियत को नोच रहे हैं

समय के लौटने की चाह में
डरी हुई कविता
कर रही चीत्कार
आत्मा का शिलालेख

कुटिलता के विष से
रक्त रंजित हो गया है
इससे पहले कि सुख-शांति की
सभी दिशाएं ओझल हो जाये
शापित हो जाये जिंदगियाँ
मानवता के भाल पर
उग आए इन
कैक्टसों को रौंद दो
मानवता फिर गुनगुनाये
कविता भी मुस्कराए!

राजकुमार जैन राजन

नातेदार

आफिस का कार्य खत्म हो गया था दिव्यांश वापसी के लिए मुम्बई से दिल्ली आने की तैयारी करने लगा। प्रातः ५.४५ पर मुम्बई वी.टी. से ट्रेन पकड़नी थी। होटल मैनेजर से ज्ञात हुआ कि सुबह ६ बजे के बाद ही आटो या टैक्सी रेलवे स्टेशन तक जाने के लिए मिलेगी। काफी सोच-विचार करने के बाद दिव्यांश ने निर्णय लिया कि अगर वह रात में ही रेलवे स्टेशन चला जाए तो बेहतर रहेगा।

सारा सामान लेकर वह स्टेशन पर आ गया। वेटिंग रूम में पहुँचने पर वेंटिग रूम के इंचार्ज ने उसे बताया कि रात में यहाँ सामान-चोर आते हैं। अतः अपने सामान के प्रति सावधानी रखें। दिव्यांश अपने बैगों में चेन लगा कर आराम से लेट गया। थोड़ी देर में उसे नींद आने लगी, सारे प्रयासों के बाद भी जब वह नींद नहीं रोक पाया तो वह वहीं अपने सामान के साथ लेट गया।

रात तीन बजे अचानक दिव्यांश की नीद टूट गई, वह उठकर देखता है तो उसका सामान तो सुरक्षित था परन्तु जेब में हाथ डालते ही उसके होश उड़ गए जेब में से उसके पर्स का अता-पता नहीं था। शर्ट की जेब से भी रूपए गायब थे। रेलवे टिकट शर्ट की अन्दर वाली जेब में था इसलिए वह बचा रह गया। जेब में कुल मिलाकर १६ रूपए सिक्कों के रूप में थे।

दो घण्टे के बाद ट्रेन आने वाली थी। हैरान परेशान दिव्यांश ने बैंच के नीचे देखा तो उसके जूते भी गायब थे। अब वह और भी परेशान हो गया।

उसे परेशान देखकर रूम इंचार्च ने दिव्यांश से कहा'-

क्या हुआ साहब ?

''मैंने ते पहले ही कहा था कि यहाँ रात में चोर घूमते हैं?''

नंगे पैर कैसे वह ट्रेन में बैठेगा? उसे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। चप्पल पड़ी हैं। उन्हें पहन कर अपनी यात्रा कर ली। सूट के साथ पुरानी चप्पल का संयोग बड़ा अजीब लग रहा था। पर क्या करे मजबूरी थी। वह बुर्जुग के साथ चप्पल लेने चला गया। एक बार उसके मन में विचार आया कि कहीं चोरों के साथ यह बुर्जुग भी तो नहीं मिला है। फिर सोचा कि ऐसा होता तो वह उसकी मदद ही क्यों करता। बुजुर्ग ने साथ में चाय पीने को भी कहा पर दिव्यांश ने मना कर दिया ।

बुझे-बुझे मन से दिव्यांश ट्रेन में जा बैठा। ट्रेन में बैठते ही चाय की तलब लगी। मन को सम्हालने की कोशिश की परन्तु सुबह उठते ही चाय पीने वाला व्यक्ति कब तक अपने को रोकता? १६ रूपये में २६ घण्टे का सफर तय करना था अतः पैसे खर्च करने का भी मन नहीं कर रहा था ।

सामने वाले बर्थ पर मारवाड़ी परिवार बैठा था। कुछ ही देर में उस परिवार ने अपने खाने का सामान निकाल लिया। पूरा परिवार एक साथ बैठकर खाना खाने लगा। यह सब देख कर दिव्यांश खीझ उठा। दिव्यांश से जब नहीं रहा गया तो उसने बड़ी हिम्मत करके ५ रूपये के बिस्कुट तथा एक कप चाय ले ली १० रूपय खत्म हो गए अब सिर्फ ६ रूपय बचे थे।

पैसों की कमी तभी समझ में आती है जब हमारी जरूरतें पहाड़ सरीखी हो तथा पैसों का अस्तित्व तिनके के समान हो। जरूरतों के सामने भले ही इन तिनकों की कोई औकात न हो परन्तु डूबते को तो तिनके का ही सहारा होता है। कारण कुछ भी हो, चोर, लुटेरे, पाकेटमार ये कहीं से भी प्रकट होकर हमें बेबस व दीन बना देते हैं। हम असहाय होकर खून का घूट पीने को मजबूर हो जाते हैं।

कहा गया है कि गरीबी में आटा गीला। जब हमारे पास पैसों की कमी हो तो हर काम में हमारा संकोच आड़े आने लगता है। वह संकोच धन, मान, प्रतिष्ठा सभी को लेकर होता है। दिव्यांश के सामने आज परिस्थितियाँ नयी-नयी प्रश्नावलियाँ लेकर खड़ी थीं जो उसकी सोच की नयी-नयी दिशाएँ दे रही थी।

प्रातः के दस बज रहे थे। भूख से दिव्यांश का बुरा हाल था। क्या करे समझ में नहीं आ रहा था? मारवाड़ी परिवार खा-पीकर अपनी-अपनी बर्थ पर फैला पड़ा। था। पेट भरा हो तो छोटे-बड़े लोग सभी चौन से सो जाते है। दिव्यांश की स्थिति ऐसी थी कि वह किससे क्या कहे ? दिव्यांश की जेब में सिर्फ ६ रूपये थे। अचानक दिव्यांश ने सोचना शुरू कर दिया कि जब वह २०-२० लोगों की टीम को सेल्स में ट्रेनिंग देता है, उन्हें उनके प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देता है, तब आज जब वह ऐसी स्थिति में है तो क्या वह अपने लिए कोई रास्ता नहीं निकाल सकता है ?

दिव्यांश एक दृढ़ इच्छा शक्ति वाला समर्पित व्यक्ति था। उसने समय के हर रूप को समझा था, परखा था व जाना था। वह लोगों को प्रेरित भी करता था। तथा उन्हें उनमें गुणवत्ता बढ़ाने के उपाय भी बताया करता था। वह सच्चे अर्थो में ज्ञान साधक की तरह दूसरों को कार्य निष्पादन के लिए सहयोग करने का अभ्यासी था। आज वह उन्हीं स्थितियों में स्वयं को पा रहा था, जिनमें फंसे व्यक्तियों को उबरने के लिए लोगों को सीख दिया करता था। आज सच्चे अर्थो में उसके ज्ञान, अनुभव पालक के रूप में उसकी परीक्षा थी।

किसी भी सहज व्यक्ति की भाँति दिव्यांश में भी अनेक खूबियाँ थी, कमियाँ थी, किन्तु उसके अन्दर पूरी ईम. ानदारी से सच स्वीकारने का साहस भी था। उसके भीतर का एक प्रेमान्वेषी किशोर हर स्थिति में जीतता था और उसका कमबख्त मन पराजय स्वीकार करने की तैयार न था। अपने लिए ही सोचते-सोचते उसे लगा कि रास्ता निकल सकता है।

उसने सामान को लहक किया तथा पैण्ट्री कार की तरफ चल दिया। पैण्ट्री कार उसके डिब्बे के बाद था। पैण्टी कार में वहाँ के कर्मचारियों ने उससे पूछा कि उसे क्या काम है ? दिव्यांश ने पैण्ट्री कार के मैनेजर से बात करने की इच्छा बताई। तब एक कर्मचारी ने उसे वहाँ पहुँचा दिया।

मैनेजर एक सूट पहने आदमी को पुरानी चप्पल में देखकर चौंक गया। मैनेजर ने कुछ बोलने के लिए मुँह खोला ही था कि

दिव्यांश ने उसे एक साँस में अपनी आप बीती कह सुनाई।

पैण्ट्री कार का मैनेजर तथा उसके साथी दिव्यांश की स्थिति व परेशानी को सुन अचम्भित हो गए। दिव्यांश के प्रति सभी के मन में सहानुभूति जाग उठी।

पुनः मैनेजर कुछ बोलने को हुआ कि दिव्यांश ने अगला प्रश्न मैनेजर से पूछ लिया कि वह रहने वाला कहाँ का है?

मैनेजर ने उसे बताया कि वह समस्तीपुर बिहार का रहने वाला है। तो दबी हुई मुस्कराहट से दिव्यांश ने कहा कि मेरी ससुराल बिहार में ही पड़ती है। कुछ ही देर में दो अजनबी ऐसे बात करने लगे, जैसे जाने कितने दिनों से एक दूसरे को जानते हैं। मेनेजर ने अपने साथी कर्मचारी से नाश्ता काफी लाने को कहा। नाश्ता कहफी पर दिव्यांश भूखे जानवर की तरह टूट पड़ा।

मैनेजर ने एक नाश्ता और मंगा कर दिया। भरपूर नाश्ता कर लेने के बाद एक कहफी और दिव्यांश ने ले ली। यह सब दे खकर मैनेजर की आँखों में अहसू आ गये। उसने अपने साथी कर्मचारियों से कहा कि दिव्यांश को उनके बर्थ पर वो जो कुछ खाने को माँगे उन्हें दे दिया जाए। कोई भी उनसे पैसा नहीं माँगेगा।

दिव्यांश मैनेजर के इस दरिया दिली से बहुत प्रभावित हुआ। उसने दिव्यांश से कहा'आप परेशान ना हों, अपनी सीट पर जायें जो चाहिए माँग लें।' "दिव्यांश ने मैनेजर से कहा":"मै तो पूरे बिहार को अपनी ससुराल मानता हूँ।" मेनेजर हँसने लगा दिव्यांश ने मैनेजर से झेंप मिटाते हुए कहा"मैं पूरा पेमण्ट चेक से या दिल्ली रेलवे स्टेशन पर कैश में करने को तैयार मेनेजर ने कहा'जाइए थोड़ी देर में लंच तैयार हो जाएगा। आपकी लंच में क्या भिजवाऊँ, नानवेज का आर्डर देकर दिव्यांश अपने बर्थ पर पहुँच गया।

बर्थ पर बैठा दिव्यांश अपनी पूर्व की स्थिति, बदलते घटना क्रम तथा उसके बाद की स्थितियों पर विचार मग्न था। वह पैण्ट्री कार मेनेजर के स्वभाव से अत्यन्त प्रभावित था। उसके जीवन में कई लोग अब तक आए थे परन्तु इस तरह का कोई भी व्यक्ति शायद ही आया हो । औरों के बारे में वह क्या सोचे, वह स्वयं यदि पैण्ट्री मैनेजर की जगह होता तो शायद मुसीबत में पड़े किसी अनजान व्यक्ति की इतनी मदद न कर पाता। उसे यह निर्णय करना कठिन हो रहा था कि यह बदलाव उसके हुनर से आया, अनुभव से आया अथवा सामने वाले की अतिशय दरियादिली से।

मानवीय गुणों से युक्त व्यक्ति समाज में वंदनीय तो होता ही है। साथ ही साथ वह एक मिसाल भी कायम करता है। आज दिव्यांश के मन में जो भाव आ रहे हैं क्या ये स्थायी हैं अथवा कठिनाई में पड़े होने के कारण ही आज इन विचारों से वह जुड़ा है?

दिव्यांश मन ही मन ईश्वर को धन्यवाद दे रहा था। पैन्ट्री कार मैनेजर से उसकी बात-चीत के बाद उसकी क्षुधा पूर्ति ने उसके विश्वास का स्तर काफी बढ़ा दिया था। कान्फीडेन्स लेबल ने उसे अपने हुनर पर भरोसा करने का पर्याप्त अवसर व कारण दे दिया था। मानव-मानव का लगाव तो आदिकाल से भारत एवं भारतीयता की पहचान मानी जाती है। परोपकार की भावना ने आज दिव्यांश की काफी सम्बल दिया था। अपने जीवन में उसने एक परिवर्तन की आहट भी सुनी इस घटना के बाद । जब तक कि वे दुर्घटना में न बदल जाएँ। आज ऐसे ही एक चक्र से अपने को उबरा हुआ पा रहा था दिव्यांश। बर्थ पर बैठा सोच रहा था, यदि आज हमें यह सहयोग न मिलता तो? पैन्ट्री कार मैनेजर अटेंड ही न करता तो ? रूखा व्यक्ति भी तो हो सकता था वह। इस तरह की तमाम ऊहापोह ने दिव्यांश के मनमस्तिष्क में तूफान सा मचा रखा था। वह सोच रहा था कि यदि वह स्वयं इस घटना की कड़ी में मैनेजर की जगह होता तो क्या ऐसी सहूलियत किसी को दे पाता, जिसका तलबगार इस समय वह स्वयं था।

जरूरतें आदमी को अतिशय विनम्र बना देती हैं। उसकी अकड़ न जाने कहाँ खो जाती है। वह हर कहीं सहजता व सरलता का चित्र देखने लगता है। अहं जाने कहाँ चला जाता है, वाणी कोमलता के सारे कीर्तिमान तोड़ देती है। शरीर में विनम्रता लोच मारने लगती है। आँखों में मानवीय करूणा, उदारता की चमक दिखने लगती है। ललाट उपकार के प्रतिकार की सलवटों से व्यक्त करने लगता है। होठों से कठोरता लुप्त हो जाती है। मुस्कुराहट अपने प्राकृतिक स्वरूप में होती है। बनावट व व्यंग्य का कहीं नामोनिशान तक नहीं होता। आज दिव्यांश के सामने ये सारे तथ्य मुखर हो उससे वार्तालाप कर रहे थे।

शायद नहीं। आज के प्रोफशनल युग में जहाँ सबकुछ पैसा हो गया है। आदमी रिश्ते भी पैसे को देखकर बनाता व बिगाड़ता है ? दिव्यांश अपने आप को इस तरह से सक्षम नहीं पा रहा थाय पर इस घटना ने उसकी जिन्दगी बदल कर रख दी थी। हमारी बहडी लै. ग्वेज से लेकर वाणी, व्यवहार सभी कुछ हमें सहयोग का पात्र बनाए र खने में सहयोग देता है। नकारात्मकता कहीं दूर अंधकार में विलीन हो जाती है। तथा सकारात्मक ऊर्जा के आलोक में मन की सारी शक्तियाँ सहयोग की भावना की ओतप्रोत बनाए रखना अपना प्रमुख कर्त्तव्य मानती हैं।

आँखों से नीद को कोसों दूर पाकर दिव्यांश विचारों के हिण्डोले में झूलता अपने अतीत में खोया कहीं शून्य में निहार रहा था। उसके दिमाग ने जहाँ यह प्रतिफल उसकी योग्यता को माना। वही मन मानवता के प्रति कृतज्ञ था। मन एवं मस्तिष्क के जद्दोजहद में दिव्यांश खोया रहा। आस-पास के परिवेश से कहीं दूर वह नये परिवेश का सृजन कर रहा था। परिस्थितियों ने उसे एक नया कलेवर प्रदान किया था।

एक बजे पूरा मारवाड़ी परिवार सो कर उठ गया है और पुनः खाने का सामान खोलकर बैठ गया दिव्यांश को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मारवाड़ी परिवार ने अनौपचारिक या इंसानियत के नाते एक बार भी उसे खाने के लिए नहीं पूछा, जब व्यक्ति के सामने ऐसी स्थिति आती है तो उसे अपने सामने की स्थितियाँ अच्छी नहीं लगती है।

सामने वाले उसे दुश्मन नजर आते हैं। जबकि दिव्यांश को याद आया कि चेन्नई में जब वह एक बार दिल्ली के लिए चला था तब सिर्फ २० रुपये में इतना खाना मिला था कि उससे दो आदमियों का पेट भर सकता था। उसने अपने सामने वाले बर्थ पर बैठे एक फौजी से कहा कि वह साथ में खाना खा ले परन्तु फोजी ने उत्तर दिया कि वह खाना खाकर आया है।

तब दिव्यांश ने अपना आधा खाना एक भूखे भिखारी को दे दिया था। तभी पैण्ट्रीकार का कर्मचारी २ नह्नवेज का पैकेट लेकर उसके पास आया । दिव्यांश सीट पर बैठकर तसल्ली के साथ खाना खाने लगा। इस तरह अगले दिन सुबह नौ बजे दिव्यांश ने अपनी चेक बुक के साथ पैण्ट्रीकार मैनेजर के पास पहुँच कर उसे खाने के मूल्य का चेक प्रदान किया।

पर रिश्तों की डोर कहें, इन्सानियत का तकाजा या फिर कुछ और मैनेजर ने चेक लेने से मना कर दिया और बोला -
दिव्यांश जी इससे ज्यादा का तो खाना-नाश्ता ट्रेन में चखने वाले टी.टी. तथा पुलिस वाले मुफ्त में खा जाते हैं। और आप तो अपने हो परन्तु दिव्यांश ने जबरदस्ती चेक मैनेजर को पकड़ा दिया । दिव्यांश ने उसे इस अच्छे व्यवहार के लिए धन्यवाद भी दिया।पर दिव्यांश से मैनेजर ने चेक लेने से मना कर दिया और उसने सम्मानपूर्वक चेक वापस कर दिया। दिव्यांश ने मैनेजर की इस उदारता के लिए उसे बहुत धन्यवाद दिया। भू ख की छटपटाहट में दिव्यांश की रूह तक कह्प उठी थी एक बार तो दिव्यांश चौबीस घंटे पूर्व की बात सोच-सोच कर परेशान व विचलित हो। उठा था ।

ट्रेन से उतरकर दिव्यांश सीधा अपने घर पहुँचा। जेब तो खाली थीय पर दिमाग खाली नही था। उसने एक आटो वाले को बुलाया तथा अपनी परिस्थितियों को ध्यान में रखकर उससे बोला
'भाई तिलक नगर चलोगे ।।' जीय... और आटो वाले ने सामान लेकर आटो में रख लिया।

दिव्यांश आटो में बैठ घर के लिए रवाना हो गया। घर पहुँच कर अपनी पत्नी से आटो वाले का किराया मह्ग कर उसे देने के बाद थके हारे दिव्यांश ने सामान के साथ घर में प्रवेश किया उसकी पत्नी उसकी ये दशा देखकर हतप्रभ रह गयी। दिव्यांश ने संक्षेप में अपनी कहानी बताई। "चलो जल्दी तैयार हो जाओय बेटी को देखने वाले आते ही होगें ।" दिव्यांश की पत्नी पुष्पा ने कहा
नहा धोकर तैयार दिव्यांश अभी सोफे पर बैठा ही था कि घर की कह्लबेल बजी । दरवाजा खोलकर देखा तो उसके सामने ट्रेन का पैन्ट्रीकार मैनेजर खड़ा था । अपने आँखों में आश्चर्य तथा जबान पर प्रश्न लिए दिव्यांश उसे सिर्फ घूरता रह गया ।

दूसरी तरफ यही स्थिति पैन्ट्रीकार मैनेजर की भी थी। दोनो लोगों को इस तरह से आश्चर्यचकित देखकर पुष्पा ने कहा
"अरे अन्दर तो आने तो समधी जी को ।' सुनकर दिव्यांश जैसे सोते से जागा।
बोला : हाँ हाँ क्यों नही।

तभी पैन्ट्रीकार मैनेजर जो अब तक शान्त था, बोल पड़ा, अरे भई कुदरत का भी जवाब नहीं आज हमने जिनकी मदद की दी घण्टे बाद ही उनके साथ रिश्ते की डोर भी बँध गई।

क्यों भाई साहब अब आप यह नही कह सकते कि सारा बिहार आपकी ससुराल है बल्कि अब बिहार का कम से कम एक परिवार आपकी नही, आपकी बेटी की ससुराल है।

-डा जय शंकर शुक्ल

देख रहा हूँ

दिल की गहराई में झांक कर देख रहा हूँ।
है दिल में कितना प्यार मैं देख रहा हूँ।

उनकी खुशी में अपनी खुशी देख रहा हूँ।
जिंदगी हो कैसे खुशहाल मैं सोच रह हूँ।

आदमी स्वार्थ में यार किस कदर लिप्त है ।
तलवार की धार पे चलता मैं देख रहा हूँ ।

आदमी हो गया है आजकल इतना खुदगर्ज।
आसमान में यार ऊंची उड़ान मैं देख रहा हूँ।

मुश्किल में दोस्त के लिये बहुत कुछ किया।
मुश्किल घड़ी में मुझसे सौदा करते देख रहा हूं।

लोग कहते हैं इंसानियत का जमाना नहीं रहा ।
अपनों के हाथों गला कटते हुए मैं देख रहा हूँ।

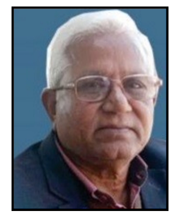

रमाकांत बड़ारया
-दुर्ग (छ.ग)

गजल

सब लोग पर्दे गलतियों पर टांकने लगे ।
दुनिया को मरते देख बगलें झांकने लगे ॥

पहले उगाए खूब जंगल कंकरीट के ।
कितने बचे हैं पेड़ अब यह आंकने लगे ॥

कैसे जिएगा आदमी पेड़ों को काटकर ।
नजरें चुरा इस प्रश्न से मुंह ताकने लगे ॥

ताजा हवा जब फेफड़ों को मिल नहीं सकी ।
गोली , दवाई जो मिला बस फांकने लगे ॥

रखकर सिलेंडर ऑक्सीजन के कतार में ।
जीवन की गाड़ी लोग अपनी हांकने लगे ॥

हर्षवर्धन आर्य
ओंकार नगर, त्रिनगर,
दिल्ली-११००३५

नीबू निचोड़ दिया

जबसे सोशल मीडिया आम आदमी विशेषकर शहरी मध्यम वर्ग की जिंदगी का हिस्सा बना है ,देर रात तक जागकर फेसबुक पर उटपटांग स्टेट्स अपडेट करने वाली और कुछ भी अंट शंट लिखकर सो काल्ड फेसबुक सेलेब्रिटी कहलाने वाली एक पूरी जमात ही तैयार हो गयी है .यह जमात देर रात फेसबुक पर सक्रिय होती है और सुबह पौ फटने तक अपनी समझ में क्रांति से विप्लव तक के बीज सोशल मीडिया की अति उर्वरा जमीन पर बोते बोते थक कर सो जाती है . क्रांति से भी ज्यादा महत्वपूर्ण एक अन्य कार्य रात्रि के दूसरे प्रहर से प्राम्भ होकर चौथे प्रहर के अंतिम चरण तक जोर शोर से होता है वह है ,प्रेम और प्रणय निवेदन.सोशल मीडिया पर सक्रिय होने को आधुनिक दृसमकालीन समाज में प्रगतिशीलता की निशानी मानना जाता है.पर इस प्लेटफॉर्म पर विचरण करने वालों की अपनी एक अघोषित आचार संहिता है .उस आचार संहिता का पहला नियम है मैसेंजर से होते हुए किसी के ह्रदय में प्रवेश करना .ये अलग बात है कि बहुधा मैसेंजर से दिलो दिमाग में छा जाने का हुनर जानने वाले इन प्रेमी प्रेमिकाओं के स्क्रीन शॉट्स भी इस आभासी संसार में विचरण करते यदा कदा दिख जाते हैं और अच्छे भले प्रगतिशील की प्रतिष्ठा का जनाजा आभासी के साथ साथ वास्तविक दुनिया में भी निकल जाता है .

आपको यह जानकर खुशी होगी कि आपके इस नाचीज दोस्त को कई बार सीरिया ,अफानिस्तान और इराक में तैनात खूबसूरत अमरीकी फौजी अफसरों से इनबॉक्स में प्रेमालाप करने का सौभाग्य बहुत बार प्राप्त हुआ है .पर अफसोस मेरे ऐसे प्रेम प्रसंग हाय हेलो,आह- वाह से आगे इसलिए नहीं बढ़े क्योंकि मैंने पूरी ईम. ानदारी से अपने फ्लॉप हिंदी लेखक होने का परिचय खूबसूरत अम. रीकन गोरी बनकर जाल फेंक रहे, झारखंड के जमतारा में बैठे शातिर बालकों(हैकरों) को बेझिझक बता दिया. . मेरी सच्चाई जानने के बाद भी अगर किसी ने कभी पींगे बढाने की हिम्मत दिखाई भी तो व्हाटसअप नम्बर न देने के कारण बात आगे नहीं बढ़ सकी. कई बार तो मेरे भीतर के दुर्वासा ने अचानक जागकर आभासी जगत की इन रम्भाओ और उर्वशियों को ब्लाक कर समय से पूर्व ही हमारे प्रेम प्रसंगो का गर्भपात कर दिया . इन तमाम दुश्वारियों के बावजूद भी मैं इस रपटीले पथ पर आगे बढ़ता रह सकता था पर मेरे ऐसे दुस्साहसों पर श्रीमती जी ने 'समय से सोने और समय से जागने' का अध्यादेश लाकर पूर्ण विराम लगा दिया .

अंततःपिछले कुछ दिनों से मैंने अपनी दिनचर्या में खासा परिवर्तन कर लिया है . देर रात तक जागने और फिर सुबह देर से उठने जैसी आदतें बीते जमाने की बातें हो चुकी हैं ,अब तो उन दिनों को याद कर एक ठंडी आह ही भरी जा सकती है .मेरी दिनचर्या में ये परिवर्तन सुखद जब सिद्ध होगा तब होगा पर मुझे इसके कुछ नुक्सान तो फौरन ही उठाने पड़े गये हैं .फिर भी उस दिन पहली बार मुझे अपने जल्दी सो जाने का वाकई अफसोस हुआ .सुबह मैसेंजर चेक किया तो पाया इनबॉक्स में मीरा सिंह के कई मैसेज थे .पहला संदेश रात में ग्यारह पच्चीस पर था-

"सोये गये क्या ,कॉल -करिए -मुझे आपसे बात करनी है ."

रात डेढ़ बजे का मेसेज था --

" सब कुछ खत्म हो गया ,अब कॉल मत करना .मुझे .अब कुछ देर रोना है .-और मुझे कुछ समझाना मत ...."

सवेरे सात बजे मैने ये संदेश पढे थे .एक पल झिझकने के बाद मैंने मीरा सिंह को कहल किया .रिंग जाती रही, कॉल पिक नहीं हुआ .फिर इनबॉक्स में मैसेज छोड़ दिया -

" क्या हुआ -कॉल करो -"

मैसेज छोड़कर मैं दैनिक कार्यों में व्यस्त हो गया ..घडी की सुइयों से बंधी दिनचर्या के चलते मैं इन संदेशों के बारे में भूल ही गया था पर दिन में दो बजे आफिस में मुझे मीरा सिंह के संदेश की याद आई मैंने फिर इनबॉक्स चेक किया .मेरे मैसेज अभी तक अनसीन थे .मैंने फिर कॉल किया ..इस बार भी कॉल पिक नहीं हुयी .फेसबुक नोटिफिकेशन चेक किये.उनमे मीरासिंह के दो तीन दिन पुराने स्टेट्स अपडेट के नोटिफिकेशन थे .नोटिफिकेशन क्लिक किये तो जो भी तीन चार लाइन के दो तीन स्टेट्स थे .उन्हें पढ़ते हुए एक पर मैं अटक गया ----" आज मैं उसकी आँखों में नीबू निचोड़ आई -"

मीरा सिंह के ऐसे स्टेट्स सामान्य बात थे .वह गीत , गजल ,कविता व्यंग्य ,समसामयिक स्थितियों पर आलेख आदि सभी कुछ लिखती थी .बहुत बार उसका लिखा बेसिर पैर का और अर्थहीन लगता था पर मैं जानता था कि मीरा सिंह यों ही कभी कुछ नहीं लिखती .मीरा सिंह की बड़ी फैन फॉलोइंग थी .पचास हजार से ऊपर फालोवर्स ,पांच हजार फेसबुक फ्रेंड और बकौल मीरासिंह कई हजार मित्रता सूची में प्रतीक्षा रत थे .

ये कहानी आगे बढ़ाने से पूर्व आपको बताता चलूं कि मेरी मीरा सिंह से बातचीत इनबॉक्स मे हाय -हेलो से ही शुरू हुयी थी .मुझे यह तो याद नहीं कि मीरा सिंह से मेरी बातचीत कब शुरू हुयी और कैसे वो मेरी सबसे खास दोस्त बन गयी .पर शायद मैं उन दिनों एक थीसिस पर काम कर रहा था और देर रात तक जागते हुए फेसबुक पर भी सक्रिय रहता था .

कहानियों की तलाश में फेसबुक पर अलग से दिखने वाले प्रोफाइल्स से चैट करते हुए बहुत लोगों के दिलो-दिमाग की उन दिनों मैंने पड़ताल की थी .फेसबुक की आभासी दुनिया में लोगों के मुखौटे इतनी जल्दी हटते हैं कि कई बार आप हतप्रभ रह जाते हैं .आदमी के भीतर का पशु एक दो बार की हाय- हेलो में ही नंगा हो जाता है . इस आभासी माध्यम से किसी को पहचानने में धोखा खाने की संभावना भी हमेशा बनी रहती है ,पर मीरा सिंह के मामले में मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि मैंने जरा भी धोखा नहीं खाया था .हर किसी की मदद को सदैव तैयार रहने वाली मीरा सिंह में गजब का आत्मविश्वास था . अन्याय का विरोध करने की हिम्मत और प्रतिकूल परिस्थितियों में

निर्णय लेने की क्षमता मीरसिंह को भीड़ से अलग करती थी .

सामान्यतया महिलाएं फेसबुक के ठरकियों को ब्लाक कर के ही पीछा छुड़ा लेती है पर मीरासिंह ऐसे कार्टूनों के स्क्रीन शहट और आडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग पूरी तैयारी और धैर्य के साथ उनकी ही वाल पर चिपकाने से लेकर सायबर सेल में कंप्लेंट कर सार्वजनिक जुलुस निकालने में तनिक भी हिचक नहीं दिखाती थी ,पर हमेशा हंसती मुस्कुराती और दबंग छवि वाली मीरा सिंह भीतर से कितनी भावुक कमजोर और नियति के हाथों बेतरह सताई हुयी थी -

बहुत कम लोग ही मीरा सिंह को ठीक से जानते थे.कुछ हद तक मीरा सिंह को जान्ने समझने का दावा करने वाले लोगों में मैं भी में शामिल था .पर आज जिस तरह से इनबॉक्स में मेसेज करके पहले कॉल करने और फिर कॉल न करने का मैसेज करना .उसके किसी बड़ी उलझन का शिकार होने की निशानी था .हम दोनो याने मीरा सिंह और मैं कब एक दूसरे पर इमोशनली डिपेंड होते चले गये हमे -पता ही नहीं चला था .मैं भी जब कभी किसी उलझन में होता था तो मीरा को मैसेज करता था और वह बिना रात दिन की परवाह किये जब तक मुझसे बात नहीं कर लेती , चैन से नहीं बैठती थी .

" पर जब मीरा को मेरी जरूत थी, तो मैं उसके मैसेज ही नहीं देख पाया."

सोच सोचकर मैं अपराध बोध से घिरता जा रहा था .

आखिर मोबाईल की घंटी बजी .मीरा का ही कॉल था .

बिना कोई भूमिका बांधे मैंने पूंछा -

" क्या हुआ -?"

जरा सा रूककर मीरा ने कहा---

" वो मुझे इग्नोर कर रहा है ?"

मैंने खीझ कर पूंछा ----" कौन ?"

" उसकी आँखे रवि जैसी हैं ?

ओह माई गॉड!

" मुझे समझाने की कोशिश मत करना. दस मिनट में गाँधी पार्क पहुँचो सब बताती हूँ ."

मैंने घडी देखी चार बज रहे थे .मीरा को दस मिनट और मुझे बीस मिनट लगेंगे गाँधी पार्क पहुँचने में .

मैंने कार निकाली . मीरा से हुयी पहली मुलाकात से लेकर आज तक हुयी सारी बातें सिनेमा की रील की तरह बड़ी तेजी से मेरी आँखों के आगे से गुजर गयी .

मीरा से जब मैं काफी होम में पहली बार मिला तो उसने अपने बारे बताते हुए कहा था ----

" लडकी अगर सुन्दर होने के साथ साथ प्रतिभा शाली भी हो तो उसे हर कदम पर परीक्षा देनी पडती है .और किस्मत तो मुझसे मेरे जन्म लेते ही रूठ गयी थी .माँ मुझे जन्म देने के बाद ही स्वर्ग सिधार गयी थी ,पापा सारी दुनिया के लिए हिटलर थे पर अपनी मन्नू के लिए माँ बन गये थे .आर्मी अफसर चाचा ने खेलने के लिए हाथ में पिस्तौल भी असली ही थमाई .गली के लफंगे से दिखने वाले लडकों से उलझना और मौका मिलते ही अपनी जुडो-कराटे की ट्रेनिंग को उन पर जांचना परखना ही मेरे शौक थे .पापा गाँव के प्राइमरी स्कूल के हेडमास्टर थे एक साल में दो- दो क्लास फांदते हुए तेरह की उम्र में मैंने दसवी और पन्द्रह में बारहवी पास कर ली .सत्रह की उम्र में टीचर्स ट्रेनिग भी पूरी हो गयी .नौकरी के लिए उम्र कम थी तो इक्कीस की होते होते ग्रेजुएशन -पोस्ट ग्रेजुएशन भी कम्प्लीट हो गया.

अगर इक्कीस की उम्र में जनवरी की इक्कीस तारिख न आयी होती तो मैं भी पूरी तरह कम्प्लीट हो गयी होती .अपने रवि की रश्मि बनकर .हाँ! रवि मुझे रश्मि ही तो कहता था .मेरी दीदी का देवर जिसे पहली नजर में ही मैं दिल दे चुकी थी .उस दिन यह कहते हुए मेरी पीतल की अंगूठी जबरदस्ती अंगुली से निकाल ले गया था ----.

" कनक सी काया पर पीतल बदनुमा दाग लगता है -तू नहीं पहनेगी पीतल कहकर गया था जालिम "----और आज तक उसने मेरी पीतल की अंगूठी वापिस ही नहीं की -देखो मेरी खाली अंगुली आज भी उस बेईमान का इंतजार करती सुबक रही है --."

एकाएक बेसाख्ता फूट फूट कर रोने लगी थी मीरा सिंह .वह मीरा सिंह जिसे आज तक सभी ने या तो हंसते देखा था या गुस्से से उफनते ----उमड घुमड़ कर काले घटा सी वह बरसती रही और मैं चुपचाप देखता रहा ..मैंने उसे रोने दिया .-कुछ देर बाद आँखों से बहती गंगा जब शांत हुयी तो मैंने पानी की बोतल मीरा की ओर बढाई. .दो घूंट पानी पीकर प्रकृतिस्थ होते हुए उसने फिर बोलना शुरू किया -

"इक्कीस जनवरी को सगाई होना तय हुआ था . दीदी कनाडा से आ रही थी ---.रवि एअरपोर्ट गया हुआ था .मुहूर्त निकला जा रहा था .मोबाईल नहीं होते थे उन दिनों.पर हमारे घर में लैंड लाइन फोन था. पापा कारीडोर में एक छोर से दूसरे छोर तक चहलकदमी कर रहे थे और मुझे रह रह कर गुस्सा आ रहा था . किसी वजह से देर हो रही थी तो रवि कम से कम पी सी ओ से कहल तो कर सकता था . .

दीदी को रिसीव करने जाना ज्यादा जरूरी था !.वो कनाडा से अकेले आ सकती है, तो टैक्सी लेकर घर भी आ सकती हैं , पर नहीं दृ आने दो बात ही नहीं करूंगी ---मेरा बस चले तो मैं तो सगाई ही न करूं ,-.न जाने कब तक और क्या क्या मैं सोचती रहती .पर तभी किसी ने बम फोड़ा -कनाडा से दिल्ली आ रही फ्लाइट में आतं. कवादियों ने बम विस्फोट कर दिया .सारे यात्री और क्रू मेंबर मारे गये .पुष्पा दीदी भी उसी फ्लाइट में थी .खुशियाँ मातम में बदल गयी .पर

वज्रपात होना अभी शेष था .अभी दीदी की मौत की खबर कन्फर्म भी नहीं हुयी थी कि फोन की घंटी बजी.हॉस्पिटल से फोन था .रवि का एक्सीडेंट हो गया था .सात रातें और सात दिन आई सी यू के शीशे से झांकते हुए गुजार दी थीं .आठवे दिन आपरेशन के बाद जब रवि को होश आया तो उसने अपनी आँखें मेरी आखों में डालकर कमजोर आवाज में सिर्फ इतना कहा था ---रोना नहीं .यही आखिरी वाक्य था ---.

और देखो मैं तबसे आज तक रोई नहीं ----कहते कहते आंसुओं से तर चेहरे को दोनों हाथों से पोंछते हुए वो जोर से हंस पड़ी थी .उस हंसी के पीछे के जमाने भर के दर्द को छिपाने की असफल कोशिश करती हुयी मीरा सिंह का चेहरा बिगड़ गया था . .हल्के से विराम बाद मीरा सिंह फिर बोली -'' कुमार साहब ! रवि ने आखिरी बार मुझे जिन आँखों से देखा था. उन आँखों को मैं नहीं भूल सकती और अगर उन आँखों ने मुझे पहचानने से इनकार किया तो नीबू निचोड़ दूंगी उनमे ,-नहीं अजय देवगन वाला गंगाजल डाल दूंगी .''

अब चौकने की बारी मेरी थी -''रवि की आँखे ?''

''जी वो मेरा एॅफ बी फ्रेंड है ना उसकी आँखे बिलकुल रवि जैसी हैं ----और वो मेरी ओर देखता भी नहीं .''

''पागल हो गयी हो ---मीरा! तुम जानती हो मीरा वो रवि नहीं है ---.''

''आप मुझे समझाने की कोशिश नहीं करेंगे, आपने वादा किया था फिर -भी -मैं जानती हूँ वह रवि नहीं है पर उसकी आँखे बिलकुल रवि की आँखों जैसी हैं . और रवि की आँखे चाहे वो धोखा ही क्यों न हो मुझे इग्नोर करेंगी तो या तो मैं उन आँखों को फोड़ दूंगी या खुद की फोड़ लूंगी .और कुछ नहीं कर सकती तो हमेशा के लिए ब्लॉक तो कर ही दूंगी .''.

'' कोई फायदा नहीं सिर्फ इग्नोर करो उसे,-अभी ब्लाक करोगी,फिर कुछ दिन बाद अनब्लॉक करोगी ,फिर फेक आई डी बनाओगी .अरे टीनएजर नहीं हो तुम .बी सेंसिबल .''

'' आप भी मुझे नहीं समझते कुमार साहब सॉरी –बाय .''

एकाएक ही वह उठकर चली गयी और मैं हक्का -बक्का उसे बस देखते रह गया ..

स्कूटी में सेल्फ लगा कर मीरासिंह एक झटके में जा चुकी थी ,मैंने भी कार स्टार्ट की डैश बोर्ड पर रखा मोबाईल ब्लूटूथ से कनेक्ट करने की कोशिश करने लगा इसी बीच फेसबुक नोटिफिकेशन उभरा.मीरा सिंह का स्टेट्स अपडेट चमका -

'' किस्सा खलास ---निब्बू निचोड़ दिया .''

अरविंद पथिक
१०४८ सेक्टर ४बी आकाशगंगा अपार्टमेंट,
वसुंधरा,गाजियाबाद उ६प्र०-२०१०

तीसरी लहर

सुबह सुबह समाचार पत्र लेकर बैठी ही थी कि पाया अभी तीसरी लहर नब्बे दिनों में आने वाली है चाय की चुस्कियों के बीच रमणिका को पंद्रह अप्रैल से पच्चीस मई के बीच गुजरे वे भयावह पल याद आ गए जब वह उसकी बेटी और पति परिवार के तीनों सदस्य कोरोना की गिरफ्त में आ गए थे और पति शुगर के कारण स्टेरह्इड और फिर अह्क्सीजन की कमी के चलते जिन जिन मानसिक आघातों से दो चार हुए थे पूरे डेढ़ महीने में हालात सुधरे थे और अब वे यह सोच रहे कि आगामी समय में वे अपार्टमैन्ट को छोड़कर कही जमीनी घर लें लें क्योंकि उनका मानना यह रहा था कि ये अपार्टमैन्ट ही था जिसने कम्यूनिटी स्प्रैड का दंश कोरोना के रूप में दिया था यहीं नहीं इस बीच वे दोनों पति व पत्नी यह भी सोच रहे थे कि बी ए फाइनल करने वाली अपनी इकलौती बेटी के लिए भी सुयोग्य वर देखकर जल्दी हाथ पीले कर देंगे कम से कम बेटी के संग एक उसका अपना परिवार तो होगा वह सोच रही थी कहीं वे न बचते तो बेटी कैसे इस जालिम समाज में जीती जहां लोग अपनों के इलाज व मरने पर भी साथ छोड़ गए लाशे भी अजनबी लोगों द्वारा मुक्ति को प्राप्त हुई । चुस्कियों के बीच वह ध्यान में डुबती जा रही थी कि अचानक फिर वही पंक्तियां सामने आ गई कोरोना की तीसरी लहर आनी में नब्बे दिन हैं परंतु इस बार रमणिका की सोच पंक्तियों के दुबारा पढ़ते ही बदल चुकी थी उसने सोच लिया था कि तीसरी लहर को अब वह अपने परिवार के तीनों प्राणियों पर हावी नहीं होने देगी और उसने पेपर जमीन पर रखा और जाकर प्यार से बिटिया को उठाने लगी यह सोचते हुए कि कल के लिए आज से ही जीना क्यों छोड़ दें आखिर मन के हारे हार है मन के जीते जीत।।

डॉ पूनम द्विवेदी
कानपुर

WORLD HUMAN RIGHTS ORGANIZATION
WHRO
"Freedom means the supremacy of human rights everywhere. Our support goes to those who struggle to gain those rights or keep them. Our strength is our unity of purpose. To that high concept there can be no end save victory."
WORLD HUMAN RIGHTS ORGANIZATION

पर्यावरण

मेरी महत्वाकांक्षाओ की मानिंद
काली स्याह से
रंग बदरंग हुआ इन्द्रधनुषीय जीवन
आसमां से जाता रहा
कलरव पंछियों का
जाती रहीं बसंत बहार
खेत खलिहानों से
पहाड़ो पर नहीं जमी बर्फ
सागर का जहरीला किया जल
मेरे कर्मों से नजराया
अस्तित्व मेरा
थमी स्वछंद सांसो की डोर
जब जीवन तत्त्वों से
किया अत्याचार
न अब अमराई हैं
न जीवन मे मस्त अल्हड़ सी अंगड़ाई
मेरी चेतना मर चुकी थी
संकल्प गंवा चुका था
अपराध बोध यह कि
जननी को कलंक दिया
और पावनी गंगा में तैराये शव
आज हवाओं का फंदा
जब मेरे गले की फांस बना है
तब मेरे कपटी चक्षु खुले
खेल घृणित दांव
मौतों का देख तांडव
अब पुकार हैं अनंत
हे प्रकृति
तू हैं क्षमा दायिनी
अब अस्तित्व को संवारने
होगा मेरा अथक जागरण
रचूंगा जीवन की नई कहानी
एक नई कहानी।

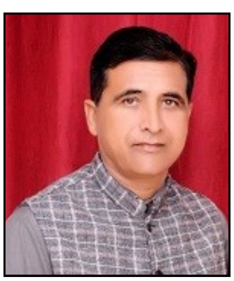

राकेश छोकर

गलत ठहरा दिया तुमने

गलत ठहरा दिया तुमने
कर्तव्य और मर्यादा की
मोटी - मोटी दीवारों में
सदियों घुटती रही
आज जब तोड़कर दीवारों को
आना चाहा बाहर
मेरा आचरण गलत ठहरा दिया तुमने।
तुम्हारे शब्द भेदी बाणों की
पीड़ा को सहती रही
कतरा - कतरा बिखरती रही खामोश,
आज जब खोलना चाहा लब
मेरा व्याकरण गलत ठहरा दिया तुमने।
जीवन के रंगमंच पर बन कठपुतली
करती रही नर्तन ,
तुम्हारी तनी रस्सियों पर
अब जब चाहती हूँ थिरकना, अपनी ताल पर
मेरा अंतकरण मैला बता दिया तुमने ।
हर पीड़ा को दफन कर अरमानों की राख तले
मुस्कान लपेटे रही ,
दोहरी चादर ओढ़े घुटती रही सदा ,
आज जब चाहती हूँ
अपनी सही पहचान ओढ़ना
मेरा आवरण गलत ठहरा दिया तुमने।
अपनी भावना , सम्भावना वेदना ,
सम्वेदना की जला होली घुलती रही ,
तुम्हारे पौरुष की कैंची ने
कतर दिए पर ,मन पंछी के ,तड़पती रही
आज जब पाना चाहती हूँ अपना आकाश
तो पर्यावरण गलत ठहरा दिया तुमने द्य

डॉ लता अग्रवाल, भोपाल

जिन्दगी

कभी हँसाती , तो कभी रुलाती है जिंदगी ,
हर पल एक नया सबक सिखाती है जिंदगी।

किसी को बिन माँगे ही नेहमतें सारी बख्शी हैं,
किसी को इक खुशी के लिए तरसाती है जिंदगी।

क्या क्या ना अजब खेल दिखाती है जिंदगी ,
कभी फलक पर,कभी खाक में मिलाती है जिंदगी।

गर्दिशे दौर हो तो सब निगाहें फेर लेते हैं ,
हों बुलंदी पर तो पलकों पर बिठाती है जिंदगी।

वो दूर हों गर तो अमावस सी लगती है जिंदगी ,
पास आयें अगर तो चांदनी पूनम है जिंदगी।

पूनम पंडित

किन्नर हूं मैं

किन्नर हूं मैं
किंतु प्रकृति के पास हूं
जन्म नहीं दे सकती मैं
किंतु सहेज कर पालन कर सकती हूँ मैं
किन्नर हूं मैं
किंतु पुरुषार्थ के पास हूं
भले कोमल हैं ह्रदय मेरा
किंतु अवसर दे के देखो
रण में विजय पताका लहरा सकती हूँ मैं
किन्नर हूं मैं
मुझे अपना के देखो एक नया संसार बसा सकती हूँ मैं

-सिमरन सिंह

दौहिक गीतिका

बाँध मत किसी बाँध से, रोक न मेरी धार।
समय कभी सहला जरा, कर कठोर प्रहार।।

चलना मेरा काम है, करना क्या आराम।
चाहे जितना भी बढ़े, धरती का विस्तार।।

कहने वाले कह रहे, मुझमे भरा घमंड।
देखो दर्पण में जरा, खुद को भी तो यार।।

मेरी दुनिया तुम सदा, मान या नहीं मान।
मानेंगे इक दिन सभी, रहना तुम तैयार।।

आँखों में तेरी छवी, मन में तेरा चित्र।
साँसों का संगीत तुम, ऐसा मेरा प्यार।।

अधिकारों के दीप से, करना जग उजियार।
करे कितना तेज समय, चाहे खुद रफ्तार।।

केशव मोहन पाण्डेय
नई दिल्ली

जी चाहता है

आज फिर मुस्कुराने को जी चाहता है
खुद को ही आजमाने को जी चाहता है

यहाँ लोग तन्हाइयों में कैसे जी लेते होंगे
दर्दे दिल सबको बताने को जी चाहता है

वो कहता था जां निसार कर देगा हम पर
उसके सब खत जलाने को जी चाहता है

तेरे शहर में कोई अपना सा नहीं मिलता
गांव वापिस लौट जाने का जी चाहता है

है गर्दिशों में गम जिंदगी लेकिन फिर भी
आशियाँ फिर से बसाने का जी चाहता है

मखमली ख्वाब बने हैं पत्थरों के शहर में
टकरा कर बिखर जाने का जी चाहता है

जुल्म की हार हुई शहादत रंग ले आयी है
फिर से सर को उठाने का जी चाहता है

--प्रेम भरद्वाज 'ज्ञान भिक्षु'

डाक टिकट पर अंकित सबसे पहली महिलाः मीरा

सबसे पहले गणपति मां शारदे मेरा नमन,
आशीष से जिनके सदा महके मेरा भारत चमन। आशीष संतों का ही लेकर फिर करें आगे गमन,
फिर करें सरहद के वीरों को सभी सादर नमन। जिनकी शहादत से सदा आगे बढ़े भारत वतन,
दे लेखन कला मुझे भगवन मन के भावों को व्यक्त करूं,
लिखकर मीरा का भक्ति भाव फिर मन तुझ में आसक्त करूं।
है बहुत समय की बात की मेड़ता में कन्या जन्मी थी,
पहली महिला मीरा की छवि डाक टिकट पर झलकी की थी।
थे पिता रतन सिंह और माता वीरकुमारी कहाती थी,
कुछ समय बाद इस कन्या को केवल कृष्णमूर्ति ही सुहाती थी।
फिर देख बारात में दूल्हे को इनके दिल पर यह असर हुआ,
श्रीकृष्ण ही मेरा दूल्हा हो किसी और का ना कोई असर हुआ।
मेरे तो हैं गिरधर गोपाल दूसरो न कोई है,
है जिनके सिर पर मोर मुकुट बस मेरा पति तो सोई है ।
कभी मुंह से यही शब्द निकले मैं प्रेम दीवानी मेरा दर्द न जाने कोई,
मीरा की जब पीर मिटे जब वैद्य सांवलिया होई।
कुछ समय बाद इनका विवाह भोजराज से किया गया,
फिर जल्दी ही मीरा का वैधव्य जीवन में पैर गया।
एक समय तो राणा ने इनको था विष का प्याला भेज दिया,
मीरा ने चरणामृत माना और झट से उसको पी भी लिया।
इस तरह प्रेम से विह्वल हो द्वारिका पुरी में जा पहुंची,
पहुंची जब कृष्ण के चरणों में असल रूप में जा पहुंची।
देखा तो बस एक कपड़ा था मीरा मूरत में समा पहुंची।

श्रीमति मोतिया शर्मा,
सेवानिवृत्त अध्यापिका, हरियाणा सरकार
रोहतक, हरियाणा (भारत)

हिन्दी की गूँज

चेरी फूले मधुमास

भारत में जब भी कोई नन्ही मुन्नी बच्ची सज संवर कर तैयार होती है, उसे 'जापानी गुड़िया ' कहा जाता है।जापान के इसी सौन्दर्य बोध को अपनी पुस्तक 'चेरी फूले मधुमास ' में समेट लाईं हैं , साहित्य व पत्रकारिता में वरिष्ठ स्थान पर प्रतिष्ठित लेखिका श्रीमती शीला झुनझुनवाला जी ।

इस सचित्र पुस्तक में उनकी जापान यात्रा के रोमांचक अनुभव हैं । जापान की जीवनशैली में भारत के साथ परम्परागत समानता आश्चर्यचकित करती है ।

जापान की जड़ो को भारतीय धर्म के सारगर्भित विचार सींचते रहे हैं । उनकी महक जापान की जीवनशैली में रच बस गयी है । उनके मंदिरों की स्थापत्य कला में, रीति-रिवाजों में, पर्व-प्रार्थनाओं में उनका प्रभाव देख आश्चर्य होता है कि एक सुदूर स्थित भू-भाग की स्वतंत्र आस्था ने कितनी सहजता से अपने धर्म के साथ-साथ, बौद्ध धर्म के मर्म को भी आत्मसात कर लिया है ।

यह धार्मिक प्रतिबिम्ब भारत-जापान के सम्बन्धों को निखारते भी हैं और भारत की विश्व-बन्धुत्व परम्परा का जीता जागता उदाहरण भी हैं ।

यदि भौगोलिक दृष्टि से हम जापान की ओर पश्चिम दिशा से यात्रा आरम्भ करें, तो यह सचमुच सात समुंदर पार स्थित है , पर भारत की मूलभूत मान्यताओं के सर्वाधिक समीप है ।

हमारा आध्यात्मिक चिन्तन उनकी प्रगतिशील कार्यप्रणाली में स्पष्ट झलकता है । अपने राष्ट्र का सुरक्षित व समृद्ध निर्माण करने में उनकी कर्तव्यनिष्ठा व कर्मठता, 'गीता' के कर्मयोग का साक्षात रूपांतरण है । द्वितीय महायुद्ध से ध्वस्त हुए नगरों ने जापान के मनोबल पर लेशमात्र भी दुष्प्रभाव नहीं छोड़ा । भारत के राष्ट्रीय विकास में जापान का सहयोग एक कैटालिस्ट की तरह माना जा सकता है ।

भारत की ही तरह जापान के समारोहों में धार्मिक अनुष्ठान पूरी तन्मयता से निभाए जाते हैं । यह धार्मिक प्रवृत्ति आस्था के साथ जिन जीवनमूल्यो को स्थापित करती है वे वहाँ के वर्क कल्चर को मानवता के प्रति उदार बनाते हैं । इसीलिए वहाँ श्रमिक व मालिक के सम्बन्धों में सहनशीलता है । सब सम्मिलितरूप से उठते बैठते हैं, भोजन करते हैं, वातावरण में परस्पर समानता का अनुभव करते हैं ।

जापान का अस्तित्व एक सुदृढ़ शिक्षा व्यवस्था व शिक्षकों के प्रति गहन श्रद्धा भाव पर टिका है ।
इसके साथ-साथ लचीला धार्मिक व सामाजिक ताना बाना, तकनीकी आधुनिकरण व सशक्त टीमवर्क जन जीवन का आधार हैं ।

जहाँ एक ओर अपनी प्रगतिशील समृद्धि के साथ जापान ने अपने नैतिक मूल्यों का निर्वाह किया है वहीं दूसरी ओर उसकी जीवन धारा में कई तनाव भी दिखाई दे रहे हैं । जन्मदर व मृत्युदर में असंतुलन होने से वृद्ध जन संख्या की अधिकता ने एकाकीपन व डिप्रेशन को बढ़ाया भी है ।

अपनी यात्रा को सूर्योदय के साथ छायांकित करते हुए लेखिका ने अपने अविश्वसनीय अनुभवों को ऐसा विस्तार दिया है मन पंख लगा जापान के उन्मुक्त वातावरण में विहार करने लगता है । वहां नगरों का अत्याधुनिक विन्यास , तकनीकी संसाधनों से प्राकृतिक चुनौतियों का सामना करने की उनकी क्षमता दर्शाता है ।

राष्ट्र गौरव व राष्ट्र प्रेम की प्रतीक अपनी भाषा के मान सम्मान के प्रति पूरी श्रद्धा से समर्पित जापान निवासी इस मिथ्या प्रचार का साक्ष्य हैं कि अंग्रेजी किसी राष्ट्र की प्रगति के लिए नितान्त आवश्यक है । इस भ्रामक प्रवृत्ति से जापान ने सदा अपनी परम्परागत विचारधारा को मुक्त रक्खा है । इसी कारण से पूरा जापान अपने गौरवमय अस्तित्व के प्रति सचेत भी है और आस्थावान भी ।

जापान के जन मन का चरित्र भी राष्ट्र प्रेरणा से ओतप्रोत है। हर नागरिक राष्ट्र के नाम पर बड़े से बड़ा बलिदान देने के लिए भी सदा तत्पर रहता है । हर व्यक्ति अपने हृदय में समूचा जापान समेटे है ।यह भावना इतनी प्रबल है कि 'हाराकारी' , अर्थात राष्ट्र गौरव के लिए आत्म बलिदान देना शहादत या वीरगति के समकक्ष है । क्वीन एलिजाबेथ के युद्धपोत का मानवी संहार इसी का प्रतीक है ।

जापनी साहित्य, कवि, कविताएँ , सैलानियों का भ्रमण सब फूलों के खिलने व उनके रूप लावण्य से प्रेरित होती हैं ।
पुष्प सज्जा से छोटे छोटे घरों के वातावरण को जीवंत बना देना विश्वविख्यात इकेबाना का रोमांचक अध्याय है ।फूलों की भाषा

घर घर में महकती है । मिनी लैडस्केप घर के हर कोने को शोभायमान करता है।

कलापूर्ण त्योहार मनाने में जापान भारतीय परम्पराओं के बहुत निकट है । मंदिरों को प्राकृतिक छटा से मनोहारी बनाता, बौद्ध विहारों को राजसी गरिमा से उद्भासित करता जापान , सभ्यता-संस्कृति का उत्कृष्ट प्रतीक है ।

भारत की ही भांति ग्रामीण क्षेत्रों के पर्व भी लोमहर्षक हैं । वहां के कर्षक भी हमारे किसानों की तरह अपनी फसल कटने पर आनंदोतस्व मनाते हैं । धान देवता की पूजा ग्राम्यजीवन को हर्षोन्मत कर देती है । विविध त्योहारों में भी भारत की छवि के दर्शन होते हैं । दीपमाल से घरों को और सार्वजनिक स्थानों को सजाना । कागज की कंदीले , रंग बिरंगी काठ की गुड़िया और होली जैसे रंग कलात्मक अभिव्यक्ति को जीवित रखते हैं । इन सबके साथ उनकी अपनी विशेषताएँ भी हैं जैसे विशालकाय पतंग , छतरियों, किरागामी की सुन्दर आकृतियां उनके कलाप्रेम प्रमाण हैं ।

नाटकीयता में टिकट की दृष्टि से असमान्य होते हुए भी शास्त्रीय संगीत व गायन वादन से सजा 'काबुकी' का मंचन मंत्रमुग्ध कर देता है।

जापान समय के साथ बदलते सामाजिक परिवर्तन को उदारता से स्वीकार करने में भी सफल रहा है । महिलाओं को एक लम्बे समय से शोभामात्र बना गृह- स्वामिनी के रूप में सीमित कर दिया जाता था जाता था । पर आज उनका व्यक्तित्व एक नये रूप में विस्तार पा रहा है। वे अपनी महत्वाकांक्षाओं की उड़ान भरने को आतुर हैं । यहां तक की कभी केवल पुरुष मनोरंजन का निम्न स्तरीय साधन मानी जाने वाली 'शीशा गर्लूस' की छवि भी अब निन्दनीय नहीं रही। उनको व्यावसायिक रूप दे कर एक नये परिवेश में समाज के ढाँचे में समाहित कर लिया गया है।

जापान के सौन्दर्य और इन सब प्रगतिवादी परिवर्तनों का उल्लेख करते समय लेखिका एक महत्वपूर्ण समसामयिक विषय पर भी अपने विचारों को उकेर सकती थी। नये आयाम खोजती महिलाओं के लिए जापान का सामाजिक अंकुश आज भी प्रबल है । उनके लिए कह्रपोरेट दुनिया में अपना कोई स्थान बना पाना अभी भी पहुँच के बाहर है । उच्च पद पर आसीन होना या किसी प्रतिष्टित संस्थान का डाइरेक्टर बन पाना तो बहुत दूर की बात है , वे किसी मामूली पोजिशन तक भी नहीं पहुँच पातीं । इस परिस्थिति का विश्लेषण लेखिका से अपेक्षित था । इस वि. डम्बना से निकलने के लिए क्यूँ जापानी महिलाओं में कोई उत्साह नहीं है ? क्यूँ वे अपने कैरियर को ले कर गम्भीर नहीं है ? क्यूँ उन्हें यह सामाजिक असंतुलन झकझोरता नहीं ? जापान का सौन्दर्य क्या केवल सतही है ? जापानी स्त्रियों के प्रति व्याप्त इस अव्यवस्था पर लेखिका का दृष्टिकोण नहीं मिल पाया !

शिष्टाचार व अतिथि आदर सत्कार का प्रारूप लिए जापान अपने कलानिपुण हाथों में सर्वथा सुरक्षित है । इन सभी प्रतीकों का खूबसूरत विवरण लिए , आकर्षक रंगीन चित्रावली से सजी यह कह्फी टेबल बुक एक संग्रहणीय पुस्तक है । लेखिका को जापान का ऐसा कला. त्मक रूपांकन करने के लिए हार्दिक बधाई ।

किताब का नाम-चेरी फूले मधुमास
रचनाकार- शीला झुनझुनवाला
मुद्रकः इन्टरग्राफिक रिप्रोडक्शन्स प्रा. लि.

डॉ **नीलम वर्मा**

हारने से पहले

टिप....टिप.... टिप.....टपकती हुई गुल्कोज की बूंदें पिछले चार दिनों से लगातार मेरे शरीर में प्रवेश कर रही थी। इसके अलावा जाने कितनी दवाइयां, इंजेक्शन, विटामिन, प्रोटिन मेरे शरीर में जा रहे थे पर शरीर पर इनका कोई असर महसूस नहीं हो रहा था।

बैचौन मन , अशक्त शरीर, उबाऊ दिनचर्या, गमगीन माहौल जीवन को निरन्तर मौत की ओर धकेल रहे थे। पी पी कीट पहने डह्क्टर.... नर्स.... और वार्ड बह्य....इस तनाव , उदासी को कम करने में असमर्थ लग रहे थे। चारों ओर शोक ही शोक पसरा था। जाने कितने चले गए और कितने और इस महामारी की भेंट चढ़ेगे कोई नहीं जानता.....। सांत्वना के शब्द बिल्कुल खोखले और बेमानी लग रहे थे।

जब से मैं इस कोविड अस्पताल में भर्ती हुआ मन रह रहकर मौत की कल्पना करते हुए अपने आप से डर रहा है। न प्रार्थना में जी लगता.... न कोइ सपना जी बहलाने में कामयाब हो पाता.... दूर-दूर तक सधन अंधेरा.....उम्मीद की कोई किरणें आस पास नहीं है.....है तो सिर्फ आस-पास के मरीजों की दर्द से कराहती चीखें..... इमरजेंसी में भागती हुई हताश, बेबस नर्सें.... आक्सीजन की सप्लाई को लेकर चिंतित डह्क्टर.... पिछले चार दिनों में मेरे आस-पास की चार जिंदगियां लाश में तब्दील है गई....इस खौफनाक माहौल में जब अपनी ही सांस को बारी-बारी कभी ओक्सोमीटर से, कभी नाक के आगे उंगली रखकर चेक करना पड्ता है तो दूसरों पर भला क्या भरोसा हो....सांस चलती है तो दिल पर संदेह की सुई अटक जाती है..... और दिल धड्कने की आवाज से भी तसल्ली नहीं होती तो दिन में कई-कई बार थर्मामीटर लगाने की अजीब सी बीमारी जहन में पलने लगती है....

लगता है यमदूत बस आने ही वाला है ....। सोचते हुए रूह कांप जाती है.... पिछले कई दिनों से यही सब तो भुगत रहा हूं मैं। जब भी समाचार सुनता हूं विषबैल के बढ़ते हुए आकडे मेरे भीतर की जीवटता को तिल-तिल कर मारती हुई प्रतीत हो रही है।

कभी कभी मन में सवाल उठता है कि ये क्यों हो रहा है.... भगवान.... खुदा...., परमात्मा.... कहां, कौनसी गुफा में बैठ गया कि उसे कुछ सुनाई नहीं दे रहा.... कुछ दिखाई नहीं दे रहा..... फिर अगले ही पल इसका प्रतिकार करते हुए दिल दिमाग कहता है- भगवान.... खुदा.... परमात्मा.... कोई भला क्यों करेगा तुम्हारी सहायता.... स्वर्ग सी धरती का तुम लोगों ने क्या हाल किया है। अंधाधुंध प्रदूषण, अशांति, तनाव, लोभ, ईर्ष्या, द्वेष की आग में सुलगते हुए इस ब्रह्माण्ड का कितना शोषण किया है तुमने....तुम मानव नहीं....दानव हो दानव.... फिर भी बात करते हो परमात्मा की.... धिक्कार तुम्हें सौ सौ धि क्कार... विजय के हाथ अपने कानों पर चल गये। कड्ःवी सच्चाई से रुबरु होना वश की बात नहीं थी....।

जो आया है उसे एक दिन जाना पर कदम- कदम बढ़ते मौत के साए में जीना मरने से कई गुना डरावना होता है इसे उन सबने महसूस किया जिन्होंने चौहदह दिन अकेले अस्पताल में बिताए.....न कोई सर पर हाथ रखकर सांत्वना देने वाला....न कोई चार बार मनुहार करके खाना खिलाने वाला....न कोई दवाई लेने के लिए आंख दिखाने वाला ....न कोई दूध न पीने पर अपनी कसम देने वाला....इतने पर भी तो बस नहीं.... कोई मर जाए तो चार कंधे भी नसीब नहीं होते ....बाप के मरने पर बेटा नहीं जा पाया और बेटे के मरने पर बाप.... जिंदगी बस अजीब सी दास्तां बनकर रह गई थी आजकल....।

जिंदगी में बड्ी से बड्ी मुसीबत से मैं कभी नहीं घबराया पर आजकल दिल दिमाग सब के सब जड् हो रहे हैं।इसे वहम कहें या डर या वातावरण का असर कि पिछले छह महीनों में बारह बार अपना कोविड टेस्ट करवाया होगा मैनें.... पर हर बार नेगेटिव..... लेकिन चूहे की मां भला अब तक खैर मनाती....इस बार रिपोर्ट पोजिटिव थी। एक दो दिन ओल्ड एज होम में आइसोलेशन में रहा पर लगातार बढ़ती हुई खांसी....उखड्ती हुई सी सांस....जीभ से नदारद होता स्वाद.... आवाज में भारीपन.... कोई रिश्क नहीं लेना चाहता था मैं....न अपने लिए.... न अपनों के लिए....,।

वृद्धाश्रम छोड्कर मैं दयाल जी हह्स्पिटल में आ गया पर यहां स्थिति सुध रने के बजाय बिगड्ती चली जा रही थी। दो दिन बाद ही मुझे आई सी ओ में शिफ्ट कर दिया गया। धीरे धीरे तन-मन ढीले होते जा रहे हैं। भगवान के घर का बुलावा मानो साफ - साफ सुनाई दे रहा है। कल ही तो उसके पास के बेड पर लेटा चालीस साल का युवक आक्सीजन की कमी के कारण चला गया। सरकार....मीडिया.... डाक्टर....परिवार....सब लाचार होकर मौत का नग्न नृत्य देख रहे हैं। एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाने के अलावा कोई कुछ नहीं कर पा रहा.....कैसा विचित्र समय है.... आदमी आदमी के छूने से बीमार हो रहा है.... सोचते हुए विजय के आंखों से आंसुओं की बरसात होने लगी।

अचानक अपने सर पर किसी का स्पर्श महसूस किया तो धीरे से आंख खोली। सफेद कपड़ों में ये कौन है.... क्या कोई परी.... क्या कोई अप्सरा ...... क्या मैं मरकर स्वर्ग में आ गया.... कहीं कोई भूतनी तो नहीं .... .कहीं मैं नरक में..... नहीं.... नहीं.... कहते हुए हड्बड्ाते हुए मैं उठ बैठा.... पूरा बदन पसीने से तर-बतर.....मेरे जहन में शायद मरने के ख्याल को छोड़कर कुछ भी शेष नहीं रहा।

अंकल यूं अकेले - अकेले आंसू बहाना कोई अच्छी बात तो नहीं..... मुझे बताइए क्या प्रोब्लम है.... आपकी आज की तो सब रिपोर्ट भी अच्छी है। फिर इस तरह दिल छोटा करने का मतलब....थोड्ा सा बहादूर बनिए.... खुद को संभालिए.... हौसले के बलबूते हर जंग जीती जा सकती है....। मुझे देखिए पिछले पूरे साल से इस हह्स्पिटल में कोविड के मरीजों के साथ

काम कर रही हूं। बीस दिन पहले खुद भी गिरफ्त में आ गई पर डरी नहीं मजबूत रही आखिर कोरोना को हराकर आज लौट आई हूं ड्यूटी पर....ओर हां, अब आप लोगों को भी हारने नहीं दूंगी.. .. कहते हुए वो मुस्कुराई और हाथ का सहारा देकर बिठा दिया। जाने क्या जादू था उसके शब्दों में..... उसकी आत्मविश्वास से चमकती हुई आंखों में....कि मुझको अपने भीतर एक ऊर्जा का संचार महसूस हो रहा था।

वो देवदूत सी परी दूसरे मरीजों की ओर बढ़ गई थी पर मेरी आंखें तब तक उसे देखती रही जब तक वो इस आई सी ओ वार्ड में रही। पूरा वातावरण बदल दिया उसने अपनी उपस्थिति से। पूरे दिन में कभी किसी को अपने परिवार से विडियो कहल पर बात करवाती, कभी कोई गाना सुनाती, कभी धमनियों में आक्सीजन के साथ साथ हौसला चढ़ाती..... दवाइयों के साथ-साथ जाने क्या-क्या परोस दिया था उसने पूरे दिन..... इन्हीं जादू भरी बातों के बीच कब सांझ घिर आई पता ही नहीं चला। जाते-जाते उसने सबसे वादा लिया कि कल सुबह सब मेरा स्वागत अपनी चौड़ी मुस्कान के साथ करेंगे।

विजय अपने बिस्तर पर लेटे-लेटे जाने कितनी देर तक उस देवदूत परी सी नर्स के बारे में सोचता रहा। बचपन में पापा से सुनी हुई एक कहावत बिजली की तरह उसके मन-मस्तिष्क में कौंधी 'मन के हारे हार मन के जीते जीत....' सच ही तो कहा है हमारे बुजुर्गो ने। वैसे भी जिंदगी हर कदम पर एक जंग ही तो है। सतर साल तक आते-आते जीवन में कितने उतार- चढ़ाव देखे पर कभी हार नहीं मानी। यहां तक हर कदम पर साथ चलने वाली पत्नी भी साथ छोड़कर चली गई। बेटा विदेश में रहता था ऐसे में अपना सब कुछ समेट कर वृद्धाश्रम रहने चला गया पर हार नहीं मानी। वहां भी अपना मन लगाने के लिए बागवानी को अपना मकसद बना लिया और शक्ल बदल कर रख दी वृद्धाश्रम की....फलों और फूलों वाले इतने पेड़ लगाए कि पूरा परिवेश महकने लगा....और आज... .आज सांसों की जंग के आगे घूटने टेक रहा हूं मैं.... सदैव आशा के गीत गाने वाला विजय आज कैसे निराशा के भंवर में फस गया. ..वाह रे वाह विजय....अपने नाम को लज्जित होने से बचा...।

मुझे अपने निराशा वाले विचारों से कोफ्त होने लगी..... रात्रि का अन्धकार जैसे जैसे बढ़ रहा था मेरे मन के भीतर का उजाला बढ़ रहा था जो आंखों के रास्ते पूरे वजूद को अपनी गिरफ्त में ले रहा था। निराशा के कोहरे को चीरता हुआ सकारात्मक सोच का एक सूरज मेरी जिंदगी में उतरता हुआ प्रतीत हो रहा था। नहीं..... नहीं....मैं नहीं हारुंगा.... मेरी तो सारी रिपोर्ट भी ठीक आ रही है फिर.... फिर..... क्यों डर रहा हूं मैं.. ... कहते हैं डर के आगे जीत है। अब ....अब बिल्कुल नहीं डरुंगा.... कोरोना रूपी राक्षस को हर हाल में हराऊंगा.... सांसों की इस जंग में मुझे विजयश्री का वरण करना है..... ।

पता नहीं ये संकल्प शक्ति का कमाल था या उस नर्स की मीठी अपनत्व से भरी बातों जादू....या फिर दवाइयों का असर भी हो सकता है बड़ी देर तक सोता रहा आज मैं...। अचानक मीठे सी आवाज में मैनें अपना नाम सुना। विजय अंकल उठिए... कितना सोएंगे.... लगता है कल रात सारे घोड़े बेचकर सोए थे आप...जिस परी को पूरी रात याद करता रहा वो ठीक उसके सामने खड़ी थी। घोड़ों के साथ साथ सारे गधे भी बेच दिए थे सिस्टर.... कहते हुए होंठों पर बरबस एक मुस्कान तैर गई। कल तक जिस खामोशी को मैनें अपना जीवन मान लिया था आज वो मूंह चुरा कर भाग गई थी। एक अर्से बाद सांसों को लयबद्ध तरीके से चलता हुआ महसूस किया था मैनें...।

अरे वाह.....आप बातें बहुत अच्छी करते हैं विजय अंकल। देखिए आज मैं सबको एक गाना सुनाऊंगी....आप सबको मेरा साथ देना होगा.... कहते हुए उसने मोबाइल से गाना बजा दिया। हवा में बोल तैरने लगे ''कहां तक ये मन के अंधेरे छलेंगे, उदासी भरे दिन कभी तो ढलेंगे....'' वार्ड में कुछ लोग सचमुच गाने लगे थे....कुछ मुस्कुरा कर सुनते हुए अपने हौसले दुरुस्त कर रहे थे.....तो कुछ लोग मूंह फुलाकर भी बैठे थे.....।

तभी मोबाइल पर आत्माराम का मैसेज चमका - कैसे हो विजय....यार...गुड मह्निंग.... जल्दी से ठीक होकर आ जाओ.... बहुत सूना-सूना लग रहा है तुम्हारे बिना .... चार दिन हुए हैं कि तुम यहां पर नहीं हो पर लगाता है तुम्हारे बैसिर-पैर के चुटकुलों के बिना खाना हजम ही नहीं हो रहा यार.... कहते-कहते रो पड़ा था आत्माराम।

बदले में मैनें सीधा फोन ही कर दिया आत्माराम को .....बस जल्दी ही लौट आऊंगा यार..... अभी हारने वाला नहीं हूं मैं.... अभी तो बहुत काम बाकी है.....मेरे लगाए पेड़ों के आम,अमरूद खाने भी बाकी है....और हां जहां मैं पढ़ाने जाता हूं उन गूंगे- बहरे बच्चों की जिंदगियों को संवारना भी बाकी है..... अभी यमदूत मेरा बाल भी बांका नहीं कर सकते....बस दस दिन बाकी हैं वे भी यूं निकल जाएंगे चुटकियों में......और हां, दस दिन बाद जब आऊंगा तेरे हाथ की पूरन पोली खाऊंगा, देसी घी डालकर.... कहते हुए विजय ने इतनी जोर से ठहाका लगाया कि पूरे वार्ड के लोग के साथ सिस्टर भी उसे देखने लगी।

अरे यूं घुर- घुर कर मत देखो मुझे....बस मैं हारने से पहले जीना चाहता हूं.... सांस के संग जंग में विजय पाना चाहता हूं..... कुछ करना चाहता हूं खुद के लिए....समाज के लिए ..... चीरना चाहता हूं निराशा के कोहरे को.... लौटाना चाहता हूं इस दुनिया को उसकी खूबसूरती.... कहते हुए विजय को लगा उसकी आंखों में आशाओं का सूरज उग रहा है।

डॉ पूनम गुजरानी
६ए मेघ सर्मन १ सीटी लाइट एरिया
सूरत ३९५००७
मो ९८२५४७३८५७

पांव और सांस का नाता

मरीज की पत्नी डाक्टर से :-''सर, मैं ब्लड,प्लाज्मा, प्लेटलेट्स और अहक्सीजन सिलेंडर सब ले आयी हूं।''
डाक्टर हैरान होते हुएः-''अच्छा, आपको एक ही दिन में सब मिल गया।''
मरीज की पत्नीः-''जी, मैंने सब कुछ बहुत मुश्किल से एकत्रित किया है। सुबह से लाइन्स में लगते लगते मेरे पांव दुख गये हैं।
प्लीज, आप इलाज शुरू कीजिए।''
डाक्टरः-''ठीक है,आप वेटिंग रूम में जाकर बैठिए और आराम से टी वी देखिए। कुछ जरूरत होगी तो गार्ड बता देगा।''
पत्नी वेटिंग रूम में आकर बैठ गई।टी वी पर शोले फिल्म का डॉयलॉग चल रहा थाः-''जब तक तुम्हारे पांव चलेंगे , तुम्हारे यार की सांसें चलेंगी।''
मरीज की पत्नी घबराहट से उठकर टहलने लगी।

मीना अरोड़ा

मानसिक तनाव या माइग्रेन

क्या आप जानते हैं कि जून माह को माइग्रेन और सिरदर्द के जागरूकता माह के रूप में मनाया जाताहै? नहीं न !! मैं भी नहीं जानता था अभी थोड़े दिन पहले तक नहीं ।जब तक कि मैं माइग्रेन जो कि भयानक सिरदर्दजैसी पीड़ा का ही एक और रूप है से नहीं गुजरा था।ये पीड़ा मस्तिष्क के आधे हिस्से में ही होती है।इसमें असह्य पीड़ा होती है जैसे कोई हथौड़े से आप का सर कूट रहा हो। इसमें अंधेरा अच्छा लगता है। पीड़ा की अधिकता में उलटी भी महसूस होती है। यह दर्द एपिसोड में होता है (आमतौर पर महीने मेंएक से दो बार)। यह एक बहुत ही सामान्य स्थिति है, फिर भी इस पर काफी कम शोध किया गयाहै। यह सबसे दर्दनाक बीमारियों में से एक है लेकिन इसके कारण और इलाज अभी भी अज्ञात हैं ।यह आमतौर पर जीवन भर रहता है।माइग्रेन किस कारणों से होता है इस का अभी पता नहीं चलपाया है, इसके कुछ ट्रिगर्स की पहचान की गई है, जिसमें तनाव भी शामिल है। अगर मैं अपनी बातकरूँ ,मैं हमेशा से एक अति-विचारक इनसान रहा हूँ और स्थितिजन्य अवसाद से भी गुजर चुका हूं। यह मेरे अवसाद के बाद ही हुआ था। जब से मुझे लगातार २०१८ से माइग्रेन होने लगा था। इसलिएमेरा व्यक्तिगत रूप से मानना है कि अवसाद भी माइग्रेन का एक कारण हो सकता है।

इस साल की शुरुआत में, कोविड के बाद मुझे नियमित रूप से माइग्रेन का अनुभव होने लगा ।लगभग हर रोज लगभग १०-१२ दिनों तक लगातार एक भयानक पीड़ा से गुजरा मैं।जो व्यक्ति इसपीड़ा से गुजरा है वो ही जान या समझ सकता है कि माइग्रेन कितना दर्दनाक होता है, केवल वहीअनुमान लगा सकता है कि लगातार १०-१२ दिन इस दर्द से गुजरने से व्यक्ति का क्या और कैसाहाल होगा। भगवान का कोटि कोटि आभार है कि मुझे एक न्यूरोलहजिस्ट मिला जिसकी दवा ने मेरेमाइग्रेन की आवृत्ति को कम कर दिया।

इस लेख का उद्देश्य तनाव प्रबंधन है। तनाव हर किसी के जीवन में होता है। हम अक्सर इसेनजरअंदाज कर देते हैं फिर यह खुद हमें बाद में परेशान करता है। कुछ आसान तनाव प्रबंधन जिन्हेंमैंने व्यक्तिगत रूप से वर्षों से मददगार पाया है, उनमें शामिल हैं:

१. संगीत सुनना- आपकी पसंद के आधार पर कोई भी शैली हो सकती है लेकिन यह आपको शांतकर देगी।
२. शौक में लिप्त होना।
३. व्यायाम करना (खासकर कार्डियो)।
४ ध्यान और योग।
५. प्रकृति के करीब समय बिताना।
६. स्वयंसेवा।

हालांकि ये तकनीकें मददगार हैं, लेकिन वे आपकी नकारात्मक ऊर्जा को कहीं और लगाने की दिशामें अधिक केंद्रित हैं। मेरा मानना है कि अपनी समस्याओं का सीधे सामना करना और लोगों से उनकेबारे में बात करना सबसे अच्छा तरीका है समस्या से निपटने का ।जबकि ज़्यादातर मानसिक स्वास्थ्यविशेषज्ञों से बात करने की बात कही जाती है , कई लोग विभिन्न कारणों से उनके पास नहीं जा पातेऔर पीड़ा से गुजरते रहते हैं ।आप किसी भी करीबी से बात कर सकते हैं - दोस्त, भाई-बहन, माता-पिता, शिक्षक आदि हो सकते हैं। लेकिन अपने मानसिक स्वास्थ्य को नजरअंदाज न करें! यह सिर्फएक समस्या है जिसके बारे में मैंने लिखा था जबकि दर्जनों और हैं। माइग्रेन जैसे असह्य पीड़ा सेगुजरने से अच्छा है कि हम अपने स्वास्थ्य पर ध्यान दें।

यथार्थ सिंह नागपाल
२८ श्रनदम २०२१

हमारा भंडारा चालू है

कोरोना-काल में लह्कडाउन, कर्फ्यू, कन्टेनमेंट जोन आदि के कारण पारंपरिक दुकानें, महल, पूजास्थल आदि तो बंद हैं, किन्तु बहुत-से लंगर और भंडारे निरंतर चल रहे हैं। ये लंगर और भंडारे साहित्य-सेवियों ने लगाए हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के विभिन्न माध्यमों जैसे यू-ट्यूब, फेसबुक, व्हाट्सऐप, जूम, टीम्स, स्काइप आदि का इस्तेमाल करते हुए बहुत-से लोगों और संस्थाओं ने तरह-तरह के लंगर और भंडारे शुरू किए हैं।

इनमें से कुछ भंडारे तो छोटे पैमाने के हैं। वे थोड़े-से चुनिंदा लोगों को अपना प्रसाद वितरण करते हैं। किन्तु कुछ में तो नि. रंतर सदाव्रत चलता रहता है। जो सामने दिख गया, जो पकड़ में आ गया, उसी की साहित्यिक क्षुधा और रस-पिपासा शांत करने में जुट जाते हैं- आओ जी, आओ, थोड़ा-सा प्रसाद आप भी पाओ। सच कहें तो इनकी सेवा लेने के लिए आपका इच्छुक, अनिच्छुक अथवा जरूरतमंद होना आवश्यक नहीं। आप इनके संपर्क में हैं तो सेवा लेनी ही पड़ेगी। बिना सेवा लिए आपका निस्तार नहीं।

बाबा तुलसीदास ने कहा- निज कवित्त केहि लाग न नीका। यदि आज होते तो यह भी कहते- निज फोटो केहि लाग न नीका। अपनी-अपनी फोटो और अपनी अपनी रचना। पिले हुए हैं ले. कर। सुनने और देखनेवाला आपकी इस निःशुल्क लंगर-सेवा का प्रसाद पाकर मर गया या जीवित है, यह मालूम करने की जरूरत नहीं। बचपन में रात को सोते समय नानी से कहानी सुनते थे, तो वह पहले ही ताकीद कर देती थी, हुँकारी भरते जाना। जब हम हुँकारी भरना बंद कर देते तो वह समझ जाती कि अब श्रोता सो गए। वह भी सो जाती- राजा गया वन में, सोचो अपने मन में। किन्तु यहाँ हुँकारी की कोई अपेक्षा ही नहीं। उनका भंडारा तो जारी है, आप लह्ग-इन करके किचन में जाइए और दो घंटे वहीं डिनर पकाइए। इधर आपकी हाजिरी लगी हुई है। जिसे अपने नंबर बढ़वाने हैं वह चाहे तो कमेंट बह्क्स में अपनी टिप्पणी दे सकता है, जो प्रायः स्तुतिपरक होती है।

इस सेवा में सब कुछ वर्चुअल है- सत्याभासी। भंडारा सत्याभासी, उसे लगाने वाले की श्रद्धा और सेवा-भावना सत्याभासी, सुनने-देखनेवाले सत्याभासी, और उनसे मिल रही प्रशंसा सत्याभासी। भंडारे के प्रसाद की कोई निंदा नहीं करता। उसे सिर-माथे से लगाकर बहुत भक्तिपूर्वक ग्रहण करना होता है। इसलिए अनिवार्यतः उसकी स्तुति और प्रशंसा ही होती है। निंदा और आलोचना-समालोचना का प्रश्न ही नहीं उठता।

कोविड महाराज की कृपा हम पर भी हुई और उनकी महिमा से अपना भी परिचय हुआ। यह कोई बड़ी बात नहीं है। विश्वशक्ति बनने जा रहे इस देश में लगभग सभी आम लोगों के साथ ऐसा हुआ, गोया यह विश्वशक्ति बनने की पहली शर्त है। आम ही नहीं, कुछ खास के साथ भी हुआ, जिससे यह भ्रम जाता रहा कि जो लोग फालतू में हेकड़ी दिखाते हैं, वे भी हमारी ही तरह माटी के पुतले हैं। लेकिन यह असल मुद्दा नहीं है। असल मुद्दा यह है कि जब हम लगभग मरणासन्न पड़े थे, और इस आशय की शुभ सूचना ल क्षणा-व्यंजना में सबको अपने फेसबुक और व्हाट्सऐप पर दे रहे थे, तब भी कुछ लोग हमें अपने लंगर और भंडारे का प्रसाद बाँटने में व्यस्त थे। हम क्या लिख रहे हैं, इससे उन्हें कोई सरोकार नहीं। हमारा लिखा पढ़ने की न उनको फुरसत है, न इच्छा, न जरूरत। उन्हें तो बस अपनी रचना, अपनी उपलब्धि की खबर हमें पढ़वानी है, फोटो दिखानी है और यह सब हमसे पसंद करवाना है। हम मर रहे हैं तो मरें, किन्तु मरने से पहले उनकी पोस्ट को पसंद करते जाएं। उनका लंगर चखते जाएँ।

जबरन लंगर चखाने वाले को हमने एक दिन संदेश लिख भेजा- भइये, अपन बीमारी से मरनासन्न हैं। कुछ दया करो हमपर। यह रोज-रोज कहानियाँ, कविताएँ और अपना स्तुति-गान कर-करके क्यों सताते हो यार? चौन से मरने तो दो। कुछ दिन उन्होंने कृपापूर्वकक अपना भंडारा किसी और मुहल्ले में लगा लिया, लेकिन जैसे ही पता चला कि यह साहित्यानुरागी कोविड से लड़-भिड़कर जिन्दा निकल आया है, वे फिर शुरू हो गये हैं। और यकीन जानिए यह हमारा निजी अनुभव नहीं है। हमें पक्का यकीन है कि इस कथन से सभी पाठकों का साध ाारणीकरण होगा। क्यों? क्योंकि हमारा भंडारा भी चालू है।

रामवृक्ष सिंह

कच्ची कैरी

नाम लेते ही
खट्टा होता स्वाद
मुँह में पानी भरता /बहने लगती लार
हाथ में लेते ही /आ जाता बचपन याद
आम के पेड़ पे चढ़ना/कौवों का सर पे चोंच मारना
कांव काँच कर आसमान सर पे उठाना
इस भय से की उनके घोंसले में
अंडों को न छेड़ें हम /उसका बच्चा हाथ में ले ना दोड़ें हम

आम के पेड़ पे पड़ते झूले
पहले बैठने के लिए /भाई बहनों से झगड़े
ऊँची और ऊँची पींगे बढ़ाना
आसमान को हो जैसे छू के आना !
झूले पे ही पढ़ना खाना खाना !
गरमी की सारी दोपहर का यूँ गुजर जाना !

आम की खट्टी मीठी चटनी
मुरब्बे अचार /जब भी काटी जाती
कैरी चटकारे ले /कच्ची पे ही करते हाथ साफ !
आज भी याद माँ की हिदायतें
मत खाओ /गले हों जाएँगे खराब !

वो भरनी ब्याम
आँगन छत रसोई घर की
कितनी शोभा बड़ाते थे
हमें बड़ों की पर / कितनी डाँट पड़वाते थे!
ऐसे उठाओ /कब हाथ लगाओ
परछाईं से बचाओ लड़कियों !

कच्ची कैरी और लड़कियों का
इतना गहरा सम्बंध क्यूँ है ?
इसकी महक में मयके की गंध क्यूँ है
उम्र के साथ छूट जाता खाना
कैरियों का मयका /अपना घर आँगन
भाई बहन सखियाँ शरारतें
होती थीं कितनी बातें!!!!
आम का पेड़ झूले
कच्ची कैरी हाय सावन भी लौट लौट के आता
लगाता यादों की कितनी ढेरी !

सुमन तनेजा

खून पसीना..

खून पसीना बहुत बहाया!
तब जाकर के जीना आया!
बुरे वक़्त में सब बदले थे,
किसी ने मरहम नहीं लगाया!

सब उपहास उड़ाने वाले,
नहीं दर्द की बातें जानें!
भूख प्यास से व्याकुल दिन और,
नहीं किसी की रातें जानें!

ठोकर खाकर गिरा कभी जब,
किसी ने मुझको नहीं उठाया!
बुरे वक़्त में सब बदले थे,
किसी ने मरहम नहीं लगाया...

साथ किसे के न देने से,
हाँ तन्हाई तड़पाती है!
मगर आंसुओं की ये धारा,
हमको जीना सिखलाती है!

देख हमारे इस साहस को,
ढ़लता उपवन भी मुस्काया!
बुरे वक़्त में सब बदले थे,
किसी ने मरहम नहीं लगाया...

अपने गम से मिला तजुर्बा ,
और पीड़ा ने सोच सुधारी !
"देव" होंसला जगा लिया तो,
नहीं सांस लगती है भारी!

सीख गया काँटों पे चलना,
नहीं आग से मैं घबराया!
बुरे वक़्त में सब बदले थे,
किसी ने मरहम नहीं लगाया! "

चेतन रामकिशन "देव"

जिंदगी

कई बार प्रश्न किया है मैंने
जिंदगी से
ऐ जिंदगी तू अकेली क्यों है
कभी जबाब नहीं दिया
बस -बस गम सुम सी ही रह गई
कहते हैं समय बहुत कुछ
सिखा देता है / मैंने भी सीखा है समय से
जो हो रहा है उसे होने दो
आपके हाथ में तो सिर्फ कर्म है
करते जाओ,करते जाओ,
करते जाओ ।
रुको मत,रुको मत,रुको मत
बस ए जिंदगी यही तेरा प्रश्न है
यही तेरा उत्तर है / जहां पर वक्त को दी जाय
एक अलग सी महत्ता
वहां इंसान का जीवन,
मैं समय हूँ, इससे जुड़ जाता है
बस यही है जिंदगी / बस यही है जिंदगी
आज का दौर ,आज का दौर
जिंदगी से कितना जुड़ा है
और
आज का दौर जिंदगी से
कितना दूर है /ये भी आप देखिए
चार पाई (धन) पाते पाते
चार पाई पर आ जाते हैं लोग
दौड़ते दौड़ते लोग,/अपनी ही जिंदगी को
कमजोर कर लेते हैं
दोस्तो----------
जिंदगी का फलसफा भी
यही है / क्योंकि
जिंदगी समझ में आ जाये
तो इससे बहतरीन कुछ नहीं
न समझ आये तो फिर
कुछ नहीं /ये जिंदगी है इसे जानो
समझो, पहचानो
जियो अपनों के लिए
जियो परोपकार के लिए
बस यही सब कुछ है

डॉ मीना शर्मा 'मनु'

माँ

प्रसव पीड़ा से जुझकर नई जिंदगी देती माँ।
दुख ले लेती खुद सारे प्यार खुशियाँ देती माँ।।

ममता आंचल से बरसाती मीठी डांट लगाती माँ।
भगवान का दूजा अवतरण इसलिए तो कहलाती माँ।।

सागर सा प्रेम गहरा,जीवनभर सब पर लुटाती माँ।
बाधाओं से जब भी जुझा,प्यार से तब समझाती माँ।।

ममता पर क्या बयां करूँ सौ जनम भी कम है माँ।
आंचल की महिमा क्या गाऊँ शीश झुकाती हुं मैं माँ।।

अंतर्मन चंचल नयन से प्यार बस बरसाती माँ।
कभी वेदना में बह जाती कभी लाड़ लुटाती माँ।।

निक्की शर्मा

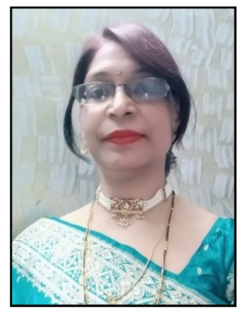

इस अंक के चित्रकार

डॉ. स्नेह सुधा नवल

अंतर्राष्ट्रीय ई–पत्रिका हिंदी की गूँज के कवर पृष्ट पर सुशोभित पेंटिंग आदरणीया डॉ स्नेह सुधा नवल जी द्वारा बनाया गया है । डॉ स्नेह सुधा नवल बालपन से ही चित्रकला से जुडी हुई हैं । शौकिया चित्रकार के रूप में उनका जाना–माना नाम है । डॉ स्नेह सुधा नवल के चित्रों की एकल प्रदर्शनियाँ ,जागृति मंच ,दौलतराम कॉलेज,साक्षरा में आयोजित हुई और सहयोगी चित्रकार के रूप में रोटरी क्लब, दिल्ली अपटाउन ,साहित्य कला परिषद् ,ताशकंद में मेरीन होटल ,अमेरिका के होटल हरंडन ,हिंदी अकादमी दिल्ली में आयोजित हुई । डॉ स्नेह सुधा नवल एक प्रतिष्ठित कवयित्री भी हैं ।कला और साहित्य जगत के कई पुरस्कार उन्हें प्राप्त हुए हैं जिनमे अलाइंस क्लब , रोटरी क्लब ,पूर्व राष्ट्रपति जैल सिंह द्वारा कबीर सेवा सम्मान , कादम्बिनी क्लब गाडवारा ,मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी,विदर्भ नागपुर और विश्व हिंदी साहित्य परिषद् द्वारा प्रदत्त कला भारती व साहित्य भारती भी सम्मिलित है । 43 वर्ष दिल्ली विश्वविद्यालय के दौलतराम कॉलेज में प्राध्यापिका और कार्य प्रिंसिपल रहने के बाद अब अवकाश प्राप्त कर कला और साहित्य सेवा में संलग्न हैं ।

वे अँधेरे से काजल बनाने लगे

काली रातें भी जिनको गँवारा न थीं,वे अँधेरे से काजल बनाने लगे।
साथ जीने की मरने की भूले कसम, बेहया बन बहाने बनाने लगे।

जब किसी मोड़ पर उनसे नजरें मिलीं,
नींव इश्क इमारत की सारी हिलीं ।
उनकी आँखे न छलकीं, न गम न सितम,
देखके वे निगाहें चुराने लगे ।
काली रातें भी जिनको गँवारा न थीं, वे अँधेरे से काजल बनाने लगे ।

वो तिलिस्मी तबस्सुम हवा हो गई,
अब तो दारू ही दिल की दवा हो गई ।
वे उल्फत की जहमत उठा न सके,
बेवफाई का कायल बनाने लगे ।
काली रातें भी जिनको गँवारा न थीं, वे अँधेरे से काजल बनाने लगे ।

अक्स उनका थे हम वे समझ पाई ना,
तोड़ डाला उन्होंने समझ आइना ।
हमने तो उनका ही दिल ही चुराया था बस,
वे तो साँसे हमारी चुराने लगे ।
काली रातें भी जिनको गँवारा न थीं, वे अँधेरे से काजल बनाने लगे ।

ये न जाने सुनामी का आगाज था,
हम तो समझे की लहरों का अंदाज था ।
तब से अंदर समंदर नहीं गूँजता,
दिल की लहरों को दिल में दबाने लगे ।
काली रातें भी जिनको गँवारा न थीं, वे अँधेरे से काजल बनाने लगे ।

सीए. **अजय गोयल**
कवि
एम. कॉम., सी.ए. (भारत),
सी.पी.ए. (तंजानिया)

गजल

भले रूठें सभी तुमसे, गिला ना तुम जरा रखना!
बड़ों का फर्ज है ये तो, कि अपना दिल बड़ा रखना!

तपे सूरज, लगे जलने जमीं जब आग के जैसी,
परिंदों के लिये छत पर, हमेशा एक घड़ा रखना!

वफा में हुस्न वाले तो, जरा कमजोर होते हैं,
भला फिर उनकी खातिर जख्म दिल का क्यूँ हरा रखना!

बढ़ी हो लौ किसी की, ये नहीं मंजूर आँधी को,
लहू से ही भले चाहे, मगर दीया भरा रखना!

न सूरत ये सँवरती है, अगर जो आईना ना हो,
कभी तो आईना, सीरत के आगे भी खड़ा रखना!

लगे हैं तौलने अब लोग, हर एक लफ्ज मतलब से,
जुबाँ पर अपनी तुम अब तो, जरा पहरा कड़ा रखना!

आशुतोष कुमार
सीनियर सोफ्टवेयर डिजाइनर
ल्दंन यूनाइटेड किंगडम

माता-पिता की सेवा ईश्वर आराधना हो जैसे

भारत में प्राचीन काल से माता-पिता को भगवान का दर्जा दिया गया है । मातृ देवो भवः पितृ देवो भवः पंक्ति बोलते हुए हमारा सिर श्रद्धा से झुक जाता है और सीना गर्व से तन जाता है । जिस प्रकार ईश्वर अदृश्य रहकर हमारे माता-पिता की भूमिका निभाते हैं,उसी प्रकार हमारे माता-पिता साक्षात् ईश्वर हैं । ऐसा मानना है इंद्रजीत शर्मा का , जिनके लिए माता-पिता की सेवा और बुजुर्गों का आशीर्वाद सबसे बड़ा ध ान है द्य आज के इस भौतिकवादी युग में बढ़ते एकल परिवार के सिद्ध ांत तथा आने वाली पीढ़ी को सोच में परिवर्तन के चलते ऐसा देखने को नहीं मिल रहा है । कुछ परिवारों को छोड़ दें तो आज अधिकांश परिवा. रों में बुजुर्गों को भगवान को क्या,इंसान का दर्जा भी नहीं दिया जा रहा है ।

बुजुर्ग जो परिवार में सर्वोपरि होते थे और परिवार की शान समझे जाते थे ,आज वे उपेक्षित और बेसहारा और दयनीय जीवन जीने को मजबूर नजर आ रहे हैं,यहाँ तक कि पढ़े लिखे लोग जो अपने आप को आधुनिक मानते हैं,अपने माता-पिता व बुजुर्गों के प्रति अंजाना सा व्यवहार करते हैं, मैं इस व्यवहार से सहमत नहीं हूँ । मैं तो बस प्रभु और माता-पिता की सेवा को ही सबसे बड़ा धर्म मानता हूँ ।कई लोगों का मानना है कि क्या केवल भक्ति के जरिये सच्चा सुख मिल सकता है ? तो इस बाबत मेरा मानना है कि सच्चे मन से माँगों तो मिलता है । बातें करने की बजाय हमें प्रसन्न मन से दूसरों की सेवा करनी चाहिए ।

इंद्रजीत शर्मा,
अमेरिका

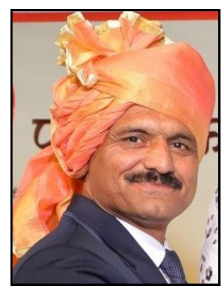

शुभकामना

डॉ विनय कुमार ,भारद्वाज', मगध विश्वविद्यालय, बोधगया में हिन्दी विभागाध्यक्ष, पूर्व हिन्दी सलाहकार, पोत और परिवहन मंत्रालय, सदस्य, शासी निकाय, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास और कई विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम समिति का सदस्य , ज्योतिष विद्या में गहरी रुचि रखता हूँ। मैं मानता हूँ कि ज्योतिष विद्या के द्वारा किसी की भी समस्याओं की जटिलता को कम किया जा सकता है। साथ, ही यह विद्या सुख की अभिवृद्धि करने में सक्षम है। हिन्दी की गूंज पत्रिका से जुड़े हर व्यक्ति के साथ मैं हूँ और उनकी हर भावनाओं में हमकदम बनकर इनके साथ रहने का प्रयास करुँगा तथा सभी के सुख में वृद्धि करने का प्रयास भी करुँगा। सधन्यवाद।

डॉ विनय भारद्वाज
बोधगया यूनिवर्सिटी

समय की प्रतीक्षा

आज नाजुक बहुत ही समय चल रहा है
दूर अपनों से ही रहने का समय चल रहा है

कलयुग के कदमों की आहट तो सुनिए
अब अपने घर में रुकने का समय चल रहा है

दुर्योधन की कपट के पाँसे बिछे हर तरफ
शकुनि ही अब हर दाँव पर दाँव चल रहा है

बाहर से बचाव करके क्या होगा सोचिए
जब खुद आस्तीन में तुम्हारी सांप पल रहा है

दशानन द्वार द्वार घूम ते फिर रहे हैं आज
लक्ष्मण रेखा में रहने का वक्त चल रहा है

मानव के चोले में देखो भेड़िए की आत्मा
आज इंसान ही दूसरे इंसान को छल रहा है

इंसान तो बचे हैं पर इंसानियत नहीं रही
हरेक के भीतर ईर्ष्या एवं द्वेष चल रहा है

सब सुखों के होते हुए भी दुखी है इंसान
अपनों की ही खुशी से आदमी जल रहा है

तरक्की की सीढ़ियाँ तो खूब चढ़ गया इंसां
फितरत न बदली भले ही समय बदल रहा है

प्रेम प्यार मुहब्बत के रंग तो अब बचे नहीं
गिरगिट की तरह देखो इंसान रंग बदल रहा है

मनुष्य की खाल ओढ़े हुए ही दिख रहा है
असलियत में इंसान के भीतर पशु पल रहा है

मानवता को शर्मसार कर रहा वहशी बनकर
इंसानियत से खुद हैवानियत में बदल रहा है

पापों का अब हो अंत ऐ खुदा आओ तुरंत
विनती है न हो देर अब कि ये युग ढल रहा है

दे दो सुबुद्धि मानुष को,जग के कल्याण हित
इंतजार है देखूं, कि नया सूरज निकल रहा है।

तजुर्बा कहता है 'चंचल'अब रहिए सँभल कर
क्यूंकि आज हर कोई टेढ़ी चाल चल रहा है।

चंचल हरेंद्र वशिष्ट
आर के पुरम नई दिल्ली

हिंदी भाषा मेरा अभिमान

भारत के जन - जन की वाणी हिंदी है.
हमारी - आपकी कहानी हिंदी है.
हर भारतीय का अभिमान हिंदी है.
हम सभी का स्वाभिमान हिंदी है.

अवध की है यही गरिमा, यही ब्रज की सहेली है.
समूचे राष्ट्र का गौरव, यही हिंदी अकेली है.
कभी मीरा, कभी तुलसी, कभी रसखान हिंदी है.
सरलता में नहाई सिंधु का प्रतिमान हिंदी है.

विदेशों में भारतीयता की शक्ति हिंदी है.
सहज - सरल भावों की अभिव्यक्ति हिंदी है.
हर व्रत, त्यौहार और उत्सव की रौनक हिंदी है.
संपूर्ण विश्व में भारतीय संस्कृति की महक हिंदी है.

करें संकल्प इसका मान कभी घटने नहीं देंगे.
अनादर जो करे इसका उसे टिकने नहीं देंगे.
सितंबर चौदह ही क्यों, प्रतिदिन सम्मानित हिंदी हो.
प्रचार - प्रसार करें जितना, उतनी प्रतिष्ठित हिंदी हो.

पूरब और पश्चिम के बीच सेतु बनाती हिंदी है.
इसलिए विश्व - पटल पर भी खिलखिलाती हिंदी है.
मनुजता के चरम उत्कर्ष का प्रतिमान हिंदी है.
हमारी आन, शान और अभिमान हिंदी है.

डॉ. श्वेता सिन्हा,
आईयोवा, यू.एस.ए.

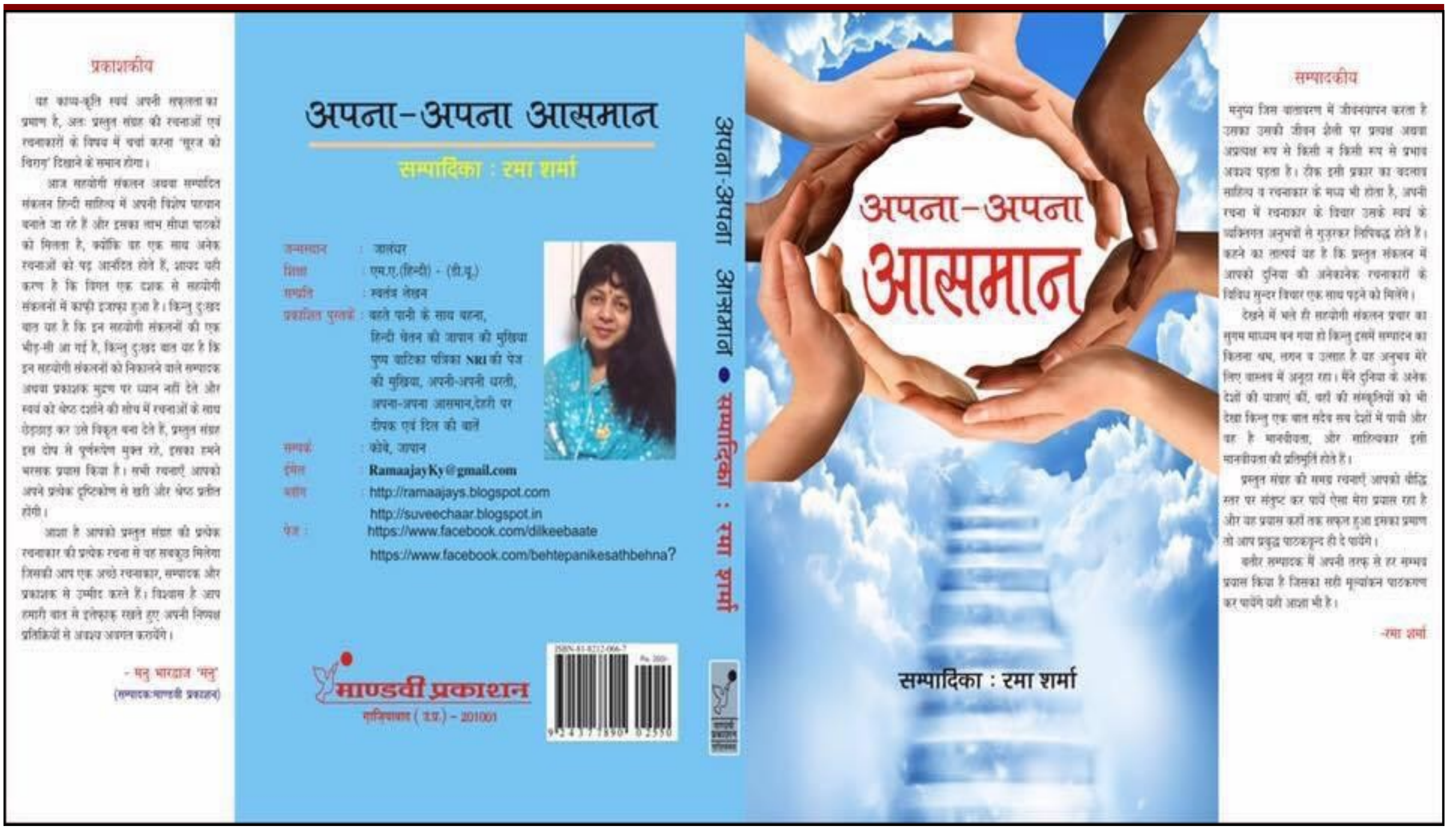

प्रकाशकीय
अपना-अपना आसमान
सम्पादिका : रमा शर्मा
जन्मस्थान : जालंधर
शिक्षा : एम.ए.(हिन्दी) - (डी.यू.)
सम्प्रति : स्वतंत्र लेखन
प्रकाशित पुस्तकें : बहते पानी के साथ बहना, हिन्दी चेतना की जापान की मुखिया पुष्प वाटिका पत्रिका NRI की पेज की मुखिया, अपनी-अपनी धरती, अपना-अपना आसमान,देहरी पर दीपक एवं दिल की बातें
सम्पर्क : कोबे, जापान
ईमेल : RamaajayKy@gmail.com
ब्लॉग : http://ramaajays.blogspot.com
http://suveechaar.blogspot.in
पेज : https://www.facebook.com/dilkeebaate
https://www.facebook.com/behtepanikesathbehna?
माण्डवी प्रकाशन
अपना-अपना आसमान • सम्पादिका : रमा शर्मा
अपना-अपना आसमान
सम्पादिका : रमा शर्मा
सम्पादकीय

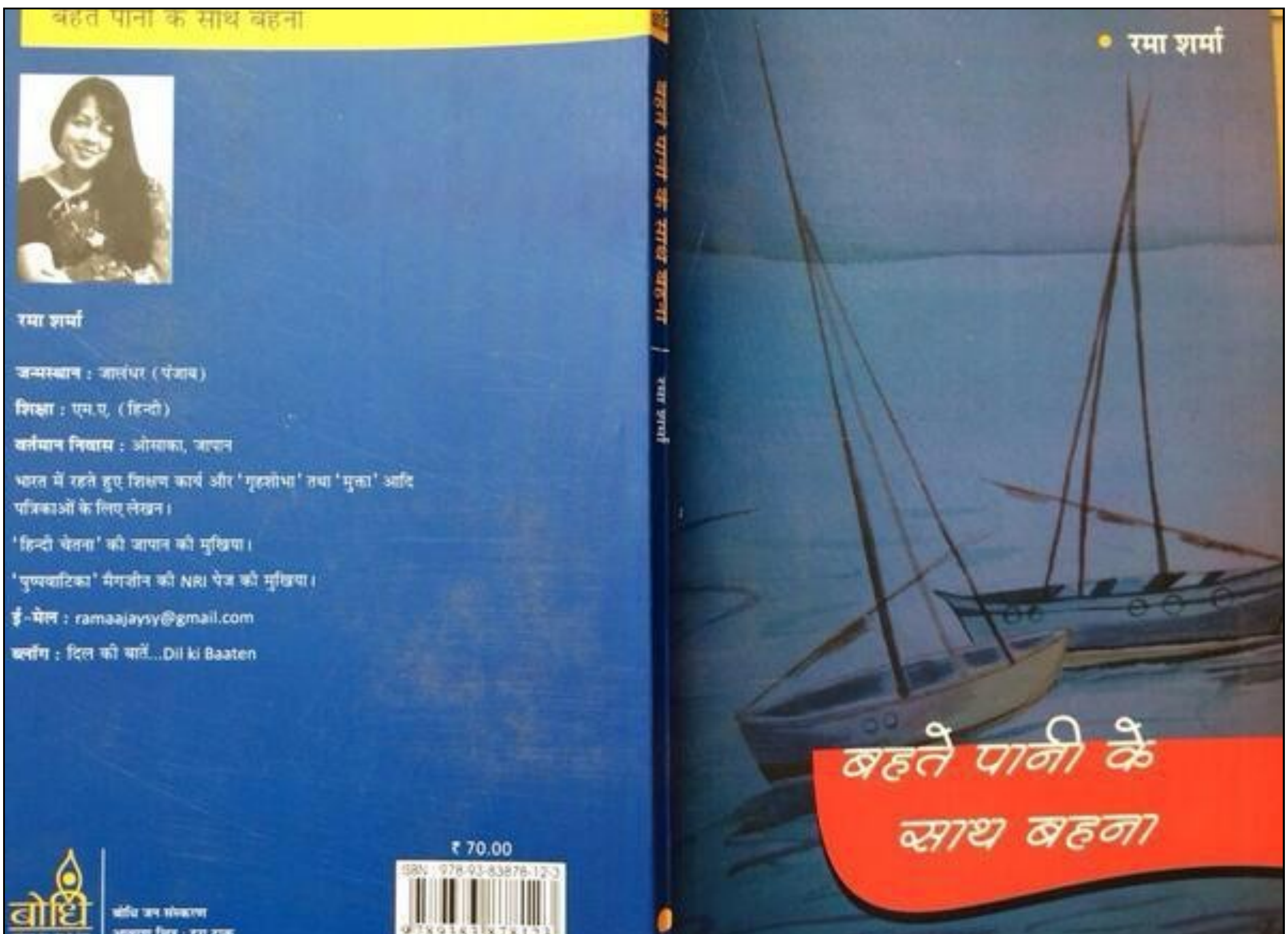

बहते पानी के साथ बहना
रमा शर्मा
जन्मस्थान : जालंधर (पंजाब)
शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी)
वर्तमान निवास : ओसाका, जापान
भारत में रहते हुए शिक्षण कार्य और 'गृहशोभा' तथा 'मुक्ता' आदि पत्रिकाओं के लिए लेखन।
'हिन्दी चेतना' की जापान की मुखिया।
'पुष्पवाटिका' मैगज़ीन की NRI पेज की मुखिया।
ई-मेल : ramaajaysy@gmail.com
ब्लॉग : दिल की बातें...Dil ki Baaten
₹ 70.00
ISBN : 978-93-83878-12-3
बोधि
बहते पानी के साथ बहना | रमा शर्मा
• रमा शर्मा
बहते पानी के साथ बहना

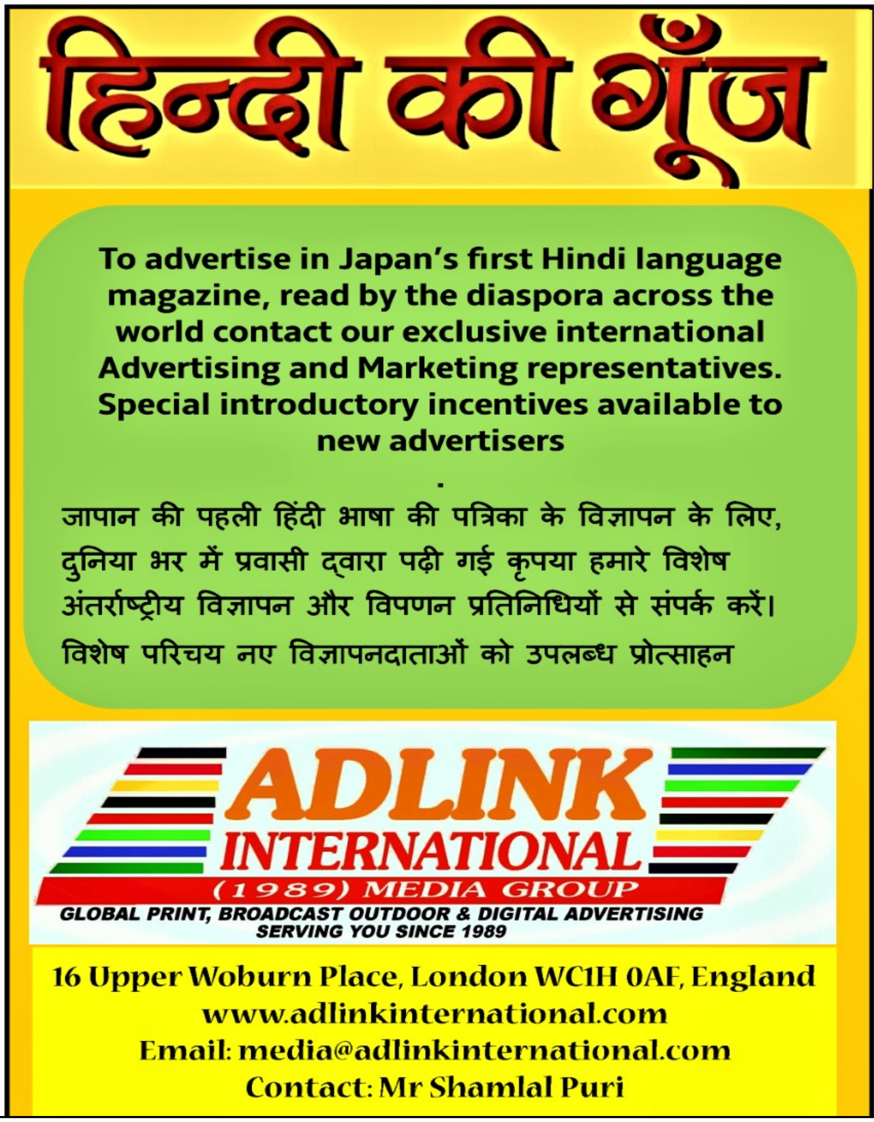

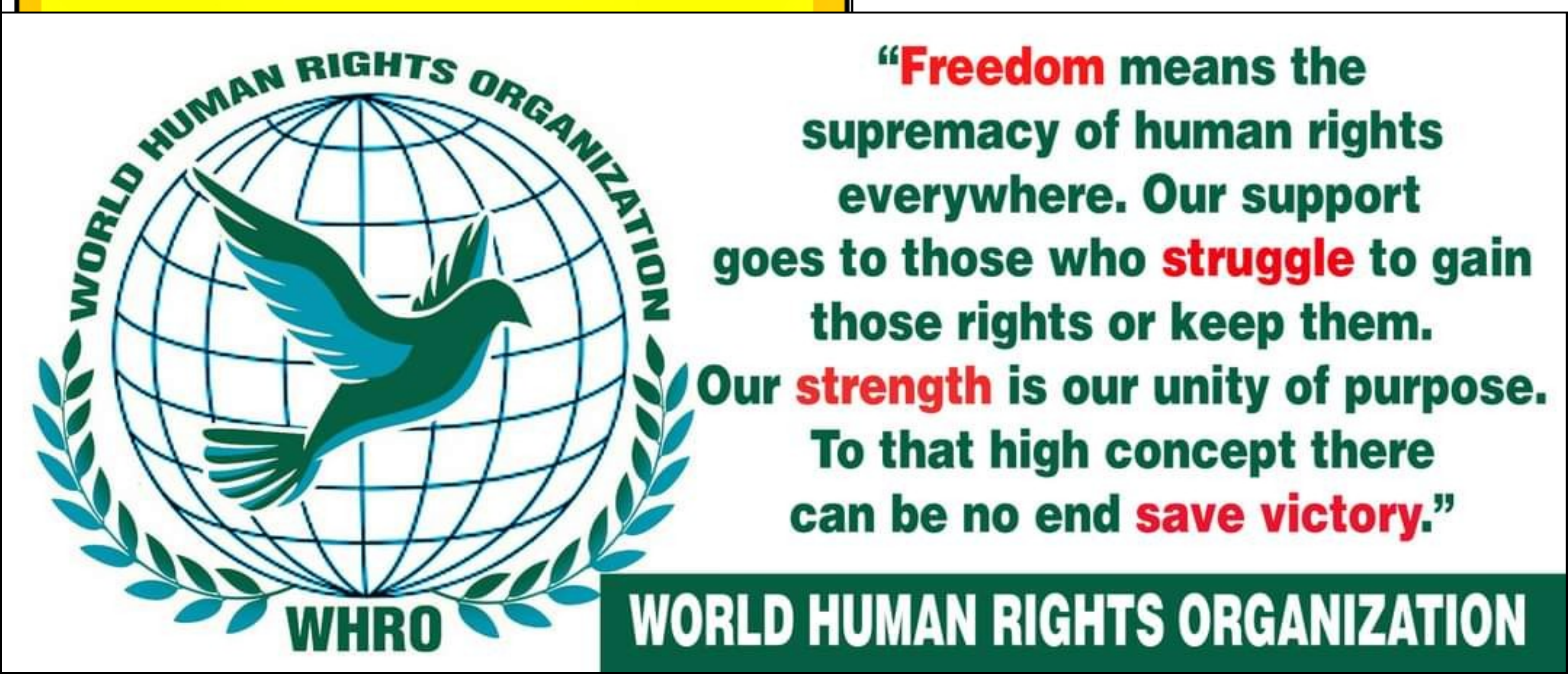

अंतरराष्ट्रीय ई पत्रिका